आटे के सिपाही

ऐतिहासिक लघु उपन्यास व कहानियां

आनंदप्रकाश जैन

प्रकाशन प्रतिष्ठान
मेरठ

संकेतिक

पिता का प्यार,
मित्र की सहृदयता,
भाई की ममता,
जिन के व्यक्तित्व में
एकाकार रहे,
उन्हीं अग्रज
श्री धर्मेन्द्रकुमार जैन को
न-कुछ के रूप में यह कृति
सादर समर्पित है.

—आनंदप्रकाश जैन

ऐतिहासिक कथा की संभावनाएं

मेरी ऐतिहासिक कहानियों का यह चौथा संग्रह प्रेस से बाहर जा रहा है. पहले योजना थी कि 'आटे के सिपाही' के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी कहानियां एकत्र की जाएं. लेकिन फिर ख्याल आया कि वर्तमान युग के किसी विशेष काल को यदि ऐतिहासिक कहानी में बांधा जाए, तो क्या 'आटे के सिपाही' उस का कुछ नन्हा-मोटा प्रतिनिधित्व कर सकती है? यों जिसे हम ऐतिहासिक कहानी समझते हैं उस की साज-सज्जा तो कुछ इस में दिखाई नहीं पड़ती. न इस में इतिहास-प्रसिद्ध पात्र हैं, न आज के तरीकों से हटे हुए उन के खास तौरतरीके हैं. फिर यह ऐतिहासिक कहानी कैसे?

पर इस कहानी के पीछे एक विशिष्ट ऐतिहासिक काल को बांधने वाली सीमाओं की पृष्ठभूमि है. एक ऐतिहासिक संघर्ष में रत इस के पात्र कुछ वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं. यदि हम अपनी दृष्टि को 'रोटी' की गोल आकृति में संकुचित न कर लें, तो रोटी की ऐतिहासिक व पवित्र लड़ाई का संकेत भी इस में मिलता है—एक बड़े राजनीतिक वर्ग के विरुद्ध चल रही लड़ाई के अंतर्गत 'सहयोगी' विरोधियों के विरुद्ध चल रही उस से भी बड़ी एक आंतरिक लड़ाई का संकेत. पर ठहरिए...

क्या हर ऐतिहासिक कहानी रोटी की लड़ाई की व्याख्या करती है? किसी में पात्रों की संघर्षरत नैतिक आवश्यकताएं उभर कर सामने आती हैं, तो किसी में दार्शनिक विचारों का संघर्ष चित्रित होता है; किसी में राजनीतिक द्वंद्व के कारण खोजे जाते हैं, तो किसी में मनुष्य की यौन-संबंधी आवश्यकताएं परिष्कृत व भावनात्मक पहलू बदलती हैं. देखती आंखों यह सब रोटी की लड़ाई नहीं है और 'ऊंचे' दरजे का नेता-वर्ग अवकाश के क्षणों में इस लड़ाई की हंसी उड़ाने से भी बाज नहीं आता.

पर आंखों को जब-तब कुछ देर के लिए बंद करने से कुछ अनदेखी चीजें दिखाई पड़ती हैं, और 'बड़ी बड़ी समस्याओं' वाले राजनीतिक नेताओं की आंखों के तिरमिरे इस से दूर हो सकते हैं. रोटी मनुष्य की ग्रहण-शक्ति की प्रतिनिधि है. बिना इस प्राथमिक शक्ति के मनुष्य न ही अपनी नैतिक, सामाजिक व इसी प्रकार की अन्य सूक्ष्म भावनाओं को संजो सकता है, न उन्हें परिष्कृत रूप दे सकता है, और न ही अपनी विभिन्न वास्तविक आवश्यकताओं में भेद कर सकता है! इस प्राथमिक आवश्यकता-पूर्ति के बल पर ही उस की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और इन सब के नाते ऐतिहासिक मोल-भाव हो सकता है. इस पहली जरूरत को नजरअंदाज कर के जो आंखें मानवीय संघर्ष के ऐतिहासिक कारणसूत्र खोजती हैं उन की पलकें दुनिया के इस अजूबे को देख कर मानो झपकना ही भूल गई हैं!

रोटी के मुकाबले में उस की परिष्कृत संतति—सूक्ष्म भावनाओं व आवश्यकताओं—का महत्त्व आर्थिक सत्ताप्राप्त वर्ग के लिए अधिक उपादेय व शिष्ट भले ही हो, किंतु अभावग्रस्त बहुजन को इतिहास में अपने पूर्वजों के इस संघर्ष का चित्रण दिखाई दे, तो उन के लिए ऐतिहासिक कथा की सार्थकता अधिक है. रोटी में ही उन की समस्त शिष्टता निहित है. मैं चाहता हूं कि मेरी आगामी ऐतिहासिक कथाएं इस सौम्य-सरला रोटी-नारी के उन भक्षकों को परदे के पीछे से खींच ला सकें, जो हर ऐतिहासिक काल में, आध्यात्मिक विधि से चुराए हुए भड़कीले आदर्शवादी वस्त्र पहन कर, उस की उपेक्षा का भौंडा अभिनय करते रहे हैं और उस के जनक पर गुर्राते रहे हैं! मेरे ख्याल में ऐतिहासिक कहानी की भावी संभावनाएं इसी प्रयत्न में निहित हैं.

प्रस्तुत संग्रह की कुछ कहानियां 'सरिता' से साभार उद्धृत हैं.

७८ रायजादगान, मेरठ शहर,
२५ मई, १९५८ ई०

देवताओं की चिता

महान् विजेता सिकंदर के निर्विरोध स्वागत के लिए कुमार आंभी ने तक्षशिला के द्वार खोल दिए. लंबे-चौड़े राज मार्ग पर, छज्जे और अटारियों पर झुके हुए संख्यातीत आश्चर्य और उत्सुकता पूर्ण नेत्रों में चकाचौंध उत्पन्न करती, सिकंदर की दुर्दम्य सेनाएं मार्च करती हुई चल रही थीं. विचित्र प्रकार के उन के लौह-कवच, अनदेखे हथियार और उन्मत्त अरबी घोड़ों को देख देख कर तक्षशिला के साधारण जन एक दूसरे के कानों में कुछ न कुछ फुसफुसा रहे थे. थोड़ी थोड़ी देर बाद दिखाई पड़ते यवन सेनापतियों की ओर इशारा कर के ये लोग बार बार आसपास खड़े लोगों से पूछते थे :

"यही है अलक्षेन्द्र, जिस ने सहस्रों ब्राह्मणों को मौत के घाट उतार दिया है?"

और उत्तर मिलता था : "नहीं, यह अलक्षेन्द्र नहीं है."

तब इस प्रकार अपनी उत्सुकता शांत करने वालों के कल्पना-पट पर एक और ऐसे व्यक्ति की काल्पनिक मूर्त्ति अंकित हो जाती थी, जिस में मृत्यु के देवता यम ने अपने सुंदरतम रूप में अवतार लिया था. यह वह देवता था जो आंधी और तूफान बन कर पश्चिम से उठा था और राह में पड़ने वाले प्रत्येक उस प्राणी का अस्तित्व उस ने इस दुनिया से उठा दिया था, जिस ने सिर ऊंचा कर के खड़े होने का साहस किया था.

तक्षशिक्षा में आए सिकंदर को दो दिन हो गए थे और आगे चढ़ाई के लिए नक्शे बन रहे थे कि तक्षशिला से दस मील दूर रहने वाले पंदरह मानवों ने विचित्र उद्दंडता से उस की शक्ति को चुनौती दी.

अपनी शक्ति की महानता स्थापित करने के लिए सिकंदर ने तक्षशिक्षा में एक बड़ा भारी दरबार किया था, जिस में आंभी के अधीन सभी राजाओं को निमंत्रण मिला था. उस दरबार का सबसे बड़ा उद्देश्य

था भारत के भूपतियों के सामने यूनानी सम्राट् के प्रताप का दिग्दर्शन. इस दरबार में उस के सामने झुक जाने वालों को यूनानी भेंट दी जाने वाली थी और विद्रोहियों को ऐसे दंड दिए जाने थे, जिन से भावी विद्रोहियों का रोम रोम कांप जाए.

इस अवस्था में सिकंदर के एक उपसेनापति ने दरबार में उपस्थित हो कर अपने स्वामी के प्रति सिर झुकाया और निवेदन किया : "तक्षशिला के कुछ साधु महान् विजेता की आज्ञा मानने से इनकार करते हैं!"

सारा दरबार ठक से रह गया. सिकंदर के माथे पर बल पड़ गए. सब को लगा जैसे यमराज विक्षिप्त हो कर तक्षशिला के प्रांगण में चक्कर काट रहे हैं. उस ने मुट्ठियां भींच कर कहा : "उन्हें हमारे सामने पेश करो."

"वे साधु नंगे हैं," उपसेनापति ने कहा, "महान् सिकंदर की सेवा में उपस्थित किए जाने के योग्य नहीं हैं. साथ ही वे अपने स्थान से हिलने से भी इनकार करते हैं. वे कहते हैं जिन्हें उन के दर्शन करने की इच्छा हो वे ही उन की सेवा में उपस्थित हों."

सभी व्यक्तियों की निगाह सिकंदर के मुख पर जम गई. इस अवहेलना का केवल एक ही परिणाम होने वाला था— हत्या, मृत्यु और विनाश. आंभी के दुभाषिए ने उस के कान में सिकंदर के उपसेनापति के शब्द दोहराए और वह चौंक उठा. उस ने देखा कि आक्रमणकारी का चेहरा तमतमा उठा. इस से पहले कि वह क्रोध में कुछ आदेश देता, आंभी उठा और बोला :

"अलक्षेन्द्र का प्रताप दिन दूना और रात चौगुना बढ़े. वे साधु, जिन्हों ने अलक्षेन्द्र की अवहेलना की है, इस संसार से परे के प्राणी हैं. वे संसार के सुखदुःख, मोहमाया और जीवनमरण की चिंता से दूर हैं. साथ ही वे असंख्य भारतीयों के आध्यात्मिक गुरु हैं. यदि महान् सिकंदर ने अपने क्रोध का विद्युत् प्रहार उन पर किया तो सारा भारत भभक उठेगा और उस के निवासी बौखला जाएंगे. मुझे पूरी आशा है कि

अलक्षेन्द्र की महत्ता व्यर्थ के हत्याकांड में अपना गौरव नष्ट नहीं करेगी."

सिकंदर ने आंभी का एक एक शब्द सुना. देखते देखते सूर्य के ताप में शीतलता आ गई. उस ने अपने उपसेनापति की ओर लक्ष्य कर के कहा, "हम वीरों को धरती पर सुलाते हैं, कायरों को नहीं. खाली हाथ सिकंदर का सामना करने वाला पागल के सिवा और कुछ नहीं है. हम इस शर्त के साथ उन पागल साधुओं को माफ़ करते हैं कि वे हमारे हजूर में आ कर हमें अपना दर्शन बताएं. उन के दर्शन से महान् अरस्तू का मनोरंजन होगा."

अभी खतरा बिल्कुल दूर नहीं हुआ था. आंभी ने कहा, "यूनाना-धीश, इस प्रकार उन साधुओं को यहां नहीं लाया जा सकता. बुद्धिबल को केवल बुद्धिबल परास्त कर सकता है. आप यूनान के दर्शन के किसी प्रतिनिधि को उन के पास भेजें, तो संभव है वे आ सकें. यदि उन्हें लाने के लिए किसी तरह की ज़ोरजबरदस्ती उन के ऊपर की गई, तो वे इसे मानवी उपसर्ग समझ कर मौन धारण कर लेंगे और फिर उन की ज़बान नरक की यातना भी नहीं खुलवा सकेगी."

सिकंदर के दाएं-बाएं परडीकस, सैल्यूकस, फिलिप और नियारकस जैसे शक्तिशाली सामंत और सेनापति सीना ताने खड़े थे. आसपास, इधरउधर यूनान की अतुल शक्ति के ये प्रतीक सिकंदर की महत्ता और उस के अधिकार की घोषणा कर रहे थे. वह हंसा.

"महाराज आर्मीस, यूनान बुद्धिबल में भी संसार का नेता है." वह एक यूनानी सामंत की ओर घूमा. "ओनेसिक्राइटस, तुम महाराज आर्मीस के साथ जा कर उन साधुओं को हमारे हजूर में लाओगे. यह विरोध हमारा नहीं, महान् अरस्तू का है, और तुम उन की बुद्धि का प्रतिनिधित्व अच्छी तरह कर सकते हो."

ओनेसिक्राइटस ने गरदन झुकाई. "मैं महान् अरस्तू की निधि की रक्षा करूंगा."

निमिष मात्र में सारी यवन सेनाओं में उन अद्भुत साधुओं की चर्चा

फैल गई, जिन्हों ने शक्ति के देवता की उपेक्षा की थी. इस उपेक्षा के पीछे जो दार्शनिक शक्ति थी उसे जानने के लिए प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक ओनेसिक्राइटस व्यग्र हो उठा.

राजसभा समाप्त हो जाने पर ओनेसिक्राइटस के जाने से पहले सिकंदर ने उसे अपनी सेवा में बुलवाया. उस के कंधों पर हाथ रख कर यवन विजेता बोला : "तुम समझ रहे हो, यह यूनान की बुद्धि-परीक्षा है. हम ने शस्त्र के बल से पृथ्वी का आधा भाग जीता है और शेष आधा हमारे कदम चूमने के लिए सिमटता आ रहा है. यदि तुम ने इस जीती हुई पृथ्वी की बुद्धि को जीत लिया, तो यूनान की सत्ता अमर हो जाएगी."

ओनेसिक्राइटस ने सिर झुकाया. "यूनान का दर्शन अजेय है, अविचल है. जुपिटर का बेटा सिकंदर उस का रक्षक है."

फिर सिकंदर ने अपने गुरु भाई के साथ एक परिहास किया : "हम जानते हैं कि तुम्हारी आधी और उत्तम बुद्धि हम फ़ारस में ही छोड़ आए हैं. लेकिन हमारा विचार है कि इस अवसर के लिए तुम्हारी वर्त्तमान शक्ति ही काफ़ी होगी."

ओनेसिक्राइटस की वह आधी बुद्धि, यूनानी सौंदर्य की सर्वोत्तम प्रतीक, उस की रूपसी पत्नी हेलेना थी, जिसे भारत आते समय सिकंदर ने मार्ग की कठिनाइयों के विचार से फ़ारस में ही रहने को विवश किया था.

महत्ताशाली स्वामी से परिहास पा कर ओनेसिक्राइटस को अपनी शक्ति के प्रति गर्व हुआ और वह मुसकरा उठा.

महाराज आंभी के साथ यूनानी दार्शनिक पूरे साज़बाज़ के साथ अपने आध्यात्मिक प्रतिद्वंद्वियों को परास्त करने के लिए चला. तक्षशिला से दस मील दूर जब यह छोटा सा राजसी दल अपने लक्ष्य स्थान पर पहुंचा, तो उन्हों ने देखा कि जेठ की तपती दुपहरी में कुछ शिलाखंडों पर पंदरह नग्न मुनि आंखें मींचे साधना में तल्लीन थे. इन लोगों को आगे बढ़ते जान कर महाराज आंभी ने कहा :

"सावधान! इस पवित्र स्थान में जूते पहन कर जाना वर्जित है."

सब लोग सहम कर खड़े रह गए. तत्काल तीन दुभाषिए सामने आए. उन्हों ने महाराज के शब्दों का संस्कृत से अरबी, अरबी से लेटिन और लेटिन से यूनानी भाषा में रूपांतर कर दिया. ओनेसिक्राइटस ने रुष्ट हो कर आंभी की ओर देखा. आंभी ने कहा, "यहां की यही रीति है. विद्वान् लोग जहां जाते हैं वहीं की रीतिनीति का पालन करते हैं."

यूनानी दार्शनिक ने अपने एक पैर का जूता उतार कर पैर पत्थर के सपाट फ़र्श पर रखा ही था कि उस के मुंह से एक 'सी' की आवाज़ निकली और तत्काल उस का पैर अपने आवरण के भीतर छिप गया. पत्थर लाल तवे की तरह भुन रहा था. उस ने आश्चर्य के साथ उन मुनियों की ओर देखा, जो उन पत्थरों पर नंगे बदन बैठ कर ज्ञान का ओरछोर पकड़ने के लिए तपस्या कर रहे थे. उस की आंखों ने आज तक इस तरह का चमत्कार नहीं देखा था. वह बोला :

"महाराज आर्मीस, आप को विश्वास है कि यह किसी तरह का शोबदा तो नहीं है?"

"नहीं," आंभी ने कहा. "लेकिन लोग कहते हैं कि देवता इन की रक्षा करते हैं. यदि ऐसी दैवी शक्ति हो, तो उसे शोबदे का नाम नहीं दिया जा सकता."

ओनेसिक्राइटस की आंखों में साधुओं के प्रति प्रशंसा का भाव उदय हुआ. वह अपने दुभाषिए से बोला, "इन से पूछो कि ये लोग नंगे क्यों हैं और यह किस तरह की साधना है, जो अकेले बिना किसी साधन के जंगल में बैठ कर की जाती है."

दुभाषियों ने तुरन्त उस के प्रश्न का उल्था कर दिया.

एक मुनि ने उत्तर दिया : "सब प्रकार की हिंसा का त्याग कर के ही मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है. प्रत्येक कृत्रिम वस्तु को बनाने में मनुष्य अगणित जीवों की हिंसा करता है. उस हिंसा को स्वयं करने से, किसी से कराने से अथवा किसी की की हुई हिंसा का अनुमोदन करने

से या उस का परिणाम ग्रहण करने से हिंसा का समान पातक लगता है. वस्त्रों के बनाने में भी इसी प्रकार असंख्य जीवों की हिंसा होती है. मनुष्य की आत्मा पाप और पुण्य के रूप में कर्मों के बन्धनों से जकड़ी हुई संसार की चौरासी लाख योनियों में भ्रमण कर रही है. जन्ममरण के अपार दुःख और बंधन से छुटकारा पाने के लिये और अखंड आनन्द के स्थान मोक्ष की प्राप्ति के लिए इन कर्मों के बन्धनों से छुटकारा पाना आवश्यक है. शरीर को निष्क्रिय रख कर और ध्यान को एकाग्र कर के, शरीर पर पड़ने वाले दुःखों को निर्विकार भाव से सहने से कर्म फल नष्ट होते रहते हैं और नवीन कर्मों की उत्पत्ति नहीं होती. यही हमारी साधना है....लेकिन तुम कौन हो?"

"तुम लोगों का विचार कितना भ्रांतिपूर्ण है!" यूनानी दार्शनिक ने उन की बुद्धि पर तरस खाते हुए कहा. "मैं यूनान का निवासी हूं, विश्वगुरु अरस्तू का शिष्य हूं और तुम्हें सही मार्ग सुझाने के साथ साथ तुम लोगों की विचित्र बुद्धि का रहस्य जानने आया हूं. मेरा नाम ओनेसिक्राइटस है."

"आश्चर्य है!" मुनि ने कहा. "इतने विद्वान होते हुए भी तुम लोग वस्त्र-आभूषण जैसी अनावश्यक वस्तुओं के लोभ में पड़े हुए हो! जब तक इन वस्तुओं का मोह तुम्हें सताता रहेगा, तुम कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकोगे. तुम हमें ज्ञान की शिक्षा देने आए हो! हमें सच्चा ज्ञान प्राप्त हो चुका है. भगवान जिनदेव महावीर की कृपा से वह ज्ञान आज शत शत दिशाओं में फूट कर मानव मात्र को मुक्ति का संदेश दे रहा है. तुम हमारा रहस्य जानने आए हो. जब तक लौहकवच, वस्त्राभूषण, शस्त्र और केश व पदत्राण आदि तुम्हारे शरीर के ऊपर लदे रहेंगे, तुम्हें मुक्ति का रहस्य पता नहीं लगेगा."

यह स्पष्ट वर्जना थी. ओनेसिक्राइटस के लिए प्रबल प्रतिद्वंद्वी की यह एक चुनौती थी. उस ने तिलमिला कर कहा, "जिन वस्तुओं को तुम अनावश्यक बता रहे हो वे प्राकृतिक विपत्तियों से मनुष्य की रक्षा करती हैं और इस प्रकार उसे उन्नति की ओर बढ़ने के लिए शक्ति देती

हैं. जीव, आत्मा, हिंसा, पातक, कर्मफल, पुण्य, मोक्ष....समाज से दूर जंगल में बैठ कर, बिना किसी प्रयोगशाला के तुम लोगों ने जो मूर्खतापूर्ण कल्पनाएँ स्थापित की हैं, उन से तुम लोग स्वयं भी कष्ट पाते हो और अपने देश के मानवों में भी भय और आशंकाओं का संचार करते हो. इस दुनिया से दूर की दुनिया को जीतने वाले पहले इस संसार को जीतते हैं. यदि तुम से यह संसार नहीं जीता जाता, तो जीतने वालों के दर्शन करो. संभव है उन से तुम्हें कुछ प्रेरणा मिले."

"तुम लोग म्लेच्छ हो," मुनि महाराज ने कहा. शांत भाव से वह बोले, "तुम लोगों की बुद्धि सच्चे धर्म को नहीं जान सकती. हमारा मार्ग निश्चित है. जिसे जिनदेव का ज्ञान प्राप्त करना हो वह जिज्ञासु बन कर हमारी तरह साधना करे, तभी उसे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता है. सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने से पहले सच्चे धर्म में विश्वास करना होगा, तभी मोक्ष मिलेगा."

यूनानी दार्शनिक आखें फाड़ कर इन विचित्र साधुओं की ओर देखता रह गया. वह बोला, "आश्चर्य है कि जिस वस्तु का ज्ञान तक नहीं पहले उस पर विश्वास करने से ही तुम्हारे कल्पित मोक्ष तक पहुंचा जा सकता है! मालूम होता है कि तुम लोगों ने बुद्धि का दिवाला निकाल कर इस तपस्या के बहाने आत्मघात पर कमर कसी है. तुम अपने विश्वास को अपने पास ही रखो. यूनान की प्रयोगशालाओं में रात-दिन सच्चे ज्ञान का उद्‌भव हो रहा है. हम लोग पहले ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसे तरह तरह की कसौटियों पर कसते हैं, तब उस पर उस समय तक विश्वास करने के लिये तैयार होते हैं, जब तक कोई बुद्धिमान् व्यक्ति उसे ग़लत सिद्ध न कर दे. महान् विजेता सिकंदर तुम लोगों को उन प्रयोगशालाओं में सच्चे ज्ञान के दर्शन के लिए एक ऐसा अवसर दे रहा है, जो इस संसार में बिरलों को ही प्राप्त होता है."

मुनि महाराज ने मौन धारण कर लिया. भगवान जिनदेव से ऊपर किसी व्यक्ति की महत्ता उन्हें स्वीकार नहीं थी. ओनेसिक्राइटस कुछ देर तक प्रतीक्षा में खड़ा रहा. तब आंभी ने उसे बताया कि अब

उस के प्रश्न का उत्तर नहीं मिलेगा.

यूनानी दार्शनिक क्षुब्ध हो गया. उस ने एक बार दयापूर्ण दृष्टि से उन मुनियों की ओर देखा, फिर अपने एक अनुचर को लक्ष्य कर के बोला, "इन संवादों को लिख लो, ताकि महान् विजेता सिकंदर भी इन लोगों की बुद्धि पर तरस खाए. चलिए, महाराज आर्मीस, मुझे आप के आध्यात्मिक गुरुओं से बहुत बड़ी निराशा हुई....ज्ञान से पहले विश्वास, आश्चर्य है!"

अभी इस दल ने अपनी पीठ मोड़ी भी नहीं थी कि मुनियों के समूह से एक मुनि उठे और बोले, "ठहरो! मैं तुम लोगों के साथ चलूंगा."

सैंकड़ों नेत्र एक साथ उन की ओर उठ गए. मुनियों के अधिष्ठाता के नेत्र भी खुल गए. उन्हों ने कहा, "यह क्या करते हो! समस्त विश्वास, ज्ञान और चरित्र का विसर्जन कर के तुम इन म्लेच्छों के साथ जाओगे! क्या अपने लिए रौरव नरक का द्वार खोलना चाहते हो?"

जाने के लिए तत्पर मुनि ने गुरु के सम्मान में हाथ जोड़ कर कहा, "भगवन्, पांच वर्षों की निरंतर साधना के बाद भी न मैं सच्चा विश्वास ही प्राप्त कर सका हूँ, और न सच्चा ज्ञान ही, चरित्र की तो बात दूर रही. मोक्ष अभी मुझ से बहुत दूर है, कभी कभी मुझे शंका होने लगती है. मुझे अनुभव होता है कि संसार के सभी दर्शनों का ज्ञान प्राप्त कर के ही मैं सच्चा ज्ञान खोज सकता हूं. ज्ञान तुलना से प्राप्त होता है, एकांत से नहीं."

"तो जाओ," गुरु महाराज ने कहा, "अभव्य प्राणी को कोई मोक्ष मार्ग पर नहीं ले जा सकता. कल्याण हो."

ओनेसिक्राइटस प्रसन्नता से फूल उठा. उस ने गुरु के अंतिम शब्दों से मुनि के नाम की कल्पना करते हुए कहा, "साधु कल्याण जी, हमारे साथ चलने के लिए आप को वस्त्र धारण करने होंगे."

मुनि कल्याण ने उत्तर दिया : "सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए मैं नरक में भी जाने को तैयार हूं."

इस प्रकार यूनान के निवासियों का यह छोटा सा दार्शनिक अभि-यान अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर के लौटा. सिकंदर के सामने पहुंच कर मुनि ने अभिवादन के स्थान पर अपना हाथ उठा कर उसे आशीष दिया : "कल्याण हो."

"यूनानी भाषा में हम तुम्हें कैलानोस कहेंगे," सिकंदर ने कहा. "तुम ने संसार विजेता के रूप में जुपिटर के बेटे के दर्शन किए हैं, यूनान पहुंच कर तुम विश्वबुद्धि के विजेता महान् अरस्तू के दर्शन करोगे."

इस के बाद सिकंदर भारत में बहुत थोड़े दिन ठहरा. पौरव के साथ लड़ने में ही उसे भारत की वीरता और सैन्य शक्ति का भली प्रकार अनुमान हो गया और वह समुद्र के रास्ते भारत छोड़ कर वापस लौटने की तैयारी करने लगा. तब तक कैलानोस ने यूनानी सेनाओं में अपने असंख्य मित्र बना लिए थे. क्रूर मानवी हिंसा से जिन लोगों के हृदय भर गए थे और जो दूसरों के ऊपर दुःख ढा कर स्वयं अपने परिजनों की याद में जल रहे थे, उन के ऊपर कैलानोस की मीठी और शाँतिपूर्ण वाणी मरहम का काम करती थी. ओनेसिक्राइटस उस का प्रशंसक और मित्र था. इस मित्रता की परीक्षा का समय एक दिन विकट रूप से आ पहुंचा.

ओनेसिक्राइटस अपने शिविर में बैठा हुआ बहुत मनोयोग से सामने रखे पट पर, कोयले से बनी हुई एक बड़ी पेंसिल से किसी चित्र का आकार खींच रहा था. उस के होंठ वक्र हो गए थे और उस के मुख पर अपनी कला की ओर से भारी असंतोष दिखाई पड़ रहा था. उसी समय मुनि कैलानोस शिविर का परदा हटा कर भीतर आए. ओनेसिक्राइटस ने नीचे ही नीचे द्वार की ओर नज़र डाल कर मुनि के नंगे पैरों को देखा और मुसकरा कर बोला :

"मालूम होता है जूतों का अभ्यास नहीं हो पा रहा है." फिर भी जब उसे उत्तर न मिला, तो उस ने कहा, "इस चित्र को देखिए. क्या आप इस आकार को सुन्दर कह सकते हैं?"

इस के उत्तर में कैलानोस का उत्तेजित स्वर सुनाई पड़ा। "मित्र ओनस!"

स्वर की तीव्रता का आभास पा कर ओनेसिक्राइटस ने आश्चर्य के साथ मुनि के मुंह की ओर देखा. उन के मुख पर चिंता की छाया और उत्तेजना की बहुत हल्की लाली दृष्टिगोचर हुई. वह बोला, "आप को कभी साधारण लोगों की तरह विचलित होते नहीं देखा. क्या बात है?"

"मित्र ओनस!" कैलानोस ने फिर कहा, "क्या आप मेरे कुछ काम आ सकते हैं?"

ओनेसिक्राइटस का हाथ रुक गया. इस बार वह पूरी तरह घूम गया. "मैं आप का मतलब नहीं समझा," उसने आश्चर्य के साथ कहा. "मित्र का क्रियात्मक रूप कुछ काम आना ही है. इस में पूछने की आवश्यकता नहीं है."

"आवश्यकता है, इसी लिए पूछा है," कैलानोस ने कहा. "यह कोई साधारण काम नहीं है, बहुत बड़ा काम है. मेरी और आप की सारी मित्रता इस में सार्थक हो जाए, तो मित्रता का मान हिमालय की चोटी पर जा पहुंचेगा."

यूनानी दार्शनिक की उत्सुकता तीव्र हो गई. "अब भूमिका समाप्त कीजिए."

"सम्राट अलक्षेन्द्र से एक व्यक्ति का प्राणदान दिलवा सकेंगे?" कैलानोस ने सीधे शब्दों में अपना मतलब कहा. "मैं अपनी मित्रता को न्योछावर करता हूं."

ओनेसिक्राइटस के नेत्र फैल गए. "किसी व्यक्ति के प्राणदान पर आप सारी मित्रता को न्योछावर कर रहे हैं! क्या वह व्यक्ति बहुत प्रिय है?"

मुनि ने अपना सिर झुका लिया. "पांच वर्षों की कठोर तपस्या कर के मैं ने मोह का दमन कर लिया था. अब मालूम होता है कि उस ने फिर सिर उठाया है. किन्तु मैं पहचान नहीं पाया हूं कि यह मोह है या केवल...."

"दया-भावना," ओनेसिक्राइटस ने बात पूरी की. "लेकिन सम्राट एलेग्जेंडर इस समय प्रस्थान की तैयारी में हैं. देवताओं की

इच्छा जानने के लिए उन्हें भेंट देना बाकी रह गया है. यह काम आज समाप्त हो जाएगा. किन्तु, मित्रवर, आप ने मेरी उत्सुकता को बहुत तीव्र कर दिया है. यह व्यक्ति कौन है और इस के प्राणों पर किस प्रकार आ बनी है यह जानने से पहले सम्राट् के सम्मुख उस के प्राणों के लिए सिफारिश करने से हो सकता है कि स्वयं के ही प्राणों पर आ बने."

कैलानीस ने निराशा के साथ अपने मित्र की ओर देखा. "मैं यूनानियों को नहीं जानता. इसलिए यह भी नहीं जानता कि एक यूनानी मित्र पर किस सीमा तक विश्वास किया जा सकता है."

ओनेसिक्राइटस हो हो कर के हँस पड़ा. उस ने कहा, "मुनिवर, मित्रता तो एक ही सार्वभौमिक मूल्य की वस्तु है. देश देश के अनुसार उस के मूल्य नहीं बदलते. आप खड़े क्यों हैं? बैठिए न!"

मुनि कैलानीस नहीं बैठे. वह अपने स्थान पर जड़ की तरह स्थिर रह कर ही बोले, "यह मैं जानता हूँ. लेकिन मैं विश्वास की बात कर रहा हूं. आप मेरे सब से बड़े मित्र हैं, यह मानने में मुझे संकोच नहीं है. पर, मित्र ओनस, मित्रता और विश्वास एक ही वस्तु के दो नाम नहीं हैं. मित्रता मनुष्य के संस्कार का एक रूप है और विश्वास मनुष्य के समस्त संस्कारों का निचोड़ है. स्वयं मनुष्य कितने ही विरोधी संस्कारों का संगम है. इसी लिए भगवान जिनदेव ने अनेकांत का सिद्धांत बताया है. इस के अनुसार आप मेरे मित्र हैं भी और नहीं भी, भले ही मैं अपना सारा मन आप को दे चुका होऊं."

ओनेसिक्राइटस यह बात सुन कर फिर हंसा. "भला, आप मेरे मित्र कैसे कैसे नहीं हैं ?"

कैलानोस गंभीर रहे. "मैं आप से पूंछता हूँ कि जुपिटर के बेटे और यूनान के लिए आप के हृदय में जो प्रेम है और इन दोनों वस्तुओं ने जिस विश्वास की थाती आप के पास रख रखी है, मैं यदि कभी उस विश्वास के आड़े आ जाऊं, तो आप किस को तरजीह देंगे?"

प्रेम और स्नेह पाने का कोई भी अधिकारी पात्र किसी समय भी

इस प्रश्न को पूछ बैठता है. तब उत्तर देने वाले के लिए उत्तर देना सहज नहीं होता. कुछ क्षणों तक विचार कर ओनेसिक्राटस ने कहा, "आप ऐसी अवस्था में किस को तरजीह देंगे?"

"मित्रता को," निःसंकोच भाव से कैलानोस ने कहा. "हमारा देश आध्यात्मिक देश है. जिस बात से आत्मा की उन्नति हो, वही ग्रहण करने योग्य है."

अपनी स्वाभाविक मुसकराहट के साथ ओनेसिक्राइटस ने कहा, "मित्र मैं अपनी उत्सुकता का प्रश्न बहुत पीछे छोड़ आया हूँ. आप का उत्तर बहुत अधिक विवादास्पद है. देश और सम्राट् ने जो थाती मेरे पास रख रखी है, उस से भी आत्मा की उन्नति होती है. उस से मेरे सारे समाज और देश की उन्नति का सम्बन्ध है. इन दोनों उन्नति की राहों में किस समय किस को अपनाया जाए यह बहुत कुछ मनुष्य की समझ पर और बहुत कुछ उस की परिस्थिति पर निर्भर करता है."

कैलानोस ने कुछ क्षणों तक विचार करने के बाद कहा, "मित्र ओनस, मैं अपने पात्र का नाम बताने की स्थिति में अपने को नहीं पाता. आप सम्राट् अलक्षेन्द्र से कहिये. यदि वह मुझ पर इतनी अनुकम्पा करने का वचन देंगे, तो मैं अपने दयापात्र का नाम बता दूंगा."

"अच्छी बात है," ओनेसिक्राइटस ने कहा. "आप के मन का सौंदर्य निरख कर मुझे आप से ईर्ष्या होती है. देवताओं को भेंट दी जा चुकने पर मैं सम्राट् से इस की चर्चा अवश्य करूंगा. आशा है भारत से लौटते समय वह आप की इस छोटी सी प्रार्थना को अस्वीकार न करेंगे."

मुनि ने कहा, "यदि देवताओं ने भेंट स्वीकार कर ली, तो क्या अलक्षेन्द्र अभी भारत में आगे बढ़ेंगे ?"

"नहीं, देवता भेंट स्वीकार नहीं करेंगे," ओनेसिक्राइटस ने कहा. वह होंठों ही होंठ मुसकरा कर बोला, "इतने सारे मनुष्यों को देख कर भेंट के रूप में रखी भोज्य सामग्री को उनके बीच में से उठा भागने का साहस आकाश के पक्षियों को नहीं होगा. इसलिए भेंट स्वीकार न

होने का निश्चय है. जब उसे स्वीकार कराना होता है, तो इतना ठाट-बाट नहीं किया जाता और पक्षियों को अवसर दिया जाता है. महामुनि कैलानोस, संभव है आप को यह नई बात लगे, किंतु यह सत्य है. धर्म शक्तिवानों का सेवक होता है और शक्तिहीनों का पूज्य रहता है."

मुनि कैलानोस को यह बात चुभती थी. उन्हों ने चर्चा को दूसरी ओर मोड़ते हुए कहा, "मित्र ओनस, आप के चित्र की रेखाओं में जो नारी बांधी गई है, उस में सौंदर्य नहीं उभरा है."

ओनेसिक्राइटस ने एक दीर्घ निःश्वास फेंका. "शायद मैं इस कला को नहीं सीख पाऊंगा. जब जब मैं इस नारी को रेखाओं में बांधता हूं, तब तब एक कुरूपता मेरी रेखाओं में आ जाती है. आश्चर्य है, यह नारी यूनान की सब से सुन्दर स्त्री मानी जाती है!"

"क्या मैं जान सकता हूं, यह कौन है?" कैलानोस ने पूछा.

"हेलेना, मेरी पत्नी, जो आजकल फ़ारस में है. किंतु मैं नहीं कह सकता कि वह वहां मेरे लौटने की प्रतीक्षा कर रही है या नहीं."

"मित्र ओनस, तुम्हारी इस विचित्र निराशा से मेरी सहानुभूति है," कैलानोस ने कहा और उन्हों ने लौट कर द्वार की ओर पग बढ़ाए.

उसी समय सैनिकों को एकत्रित करने के लिये सिकंदर की सेनाओ का बिगुल तीव्र स्वर में चीख पड़ा. ओनेसिक्राइटस उठ खड़ा हुआ. "ठहरिए, महामुनि, यह असमय पुकार कैसी हुई यह जानना आवश्यक है. मैं भी चलता हूं."

बाहर निकलने पर दोनों दार्शनिकों ने देखा : जुपिटर के बेटे की जय का नाद करते हुए यूनानी सैनिक, हथियारों से लैस, मानो किसी युद्ध के लिए भागे जा रहे थे. दोनों विचारकों ने जल्दी जल्दी विशाल मैदान की ओर पग बढ़ाए. चारों ओर बिगुलों का शोर सुनाई पड़ रहा था और सारी छावनी, जैसे अपने शूरवीर नेता पर निछावर होने के लिए, उन्मत्त की भांति मैदान की ओर दौड़ रही थी. जब तक दोनों मित्र उस मैदान तक पहुंचे, जहां सारी सेनाओं को जमा होना था, सर्वत्र

शांति छा चुकी थी और सेनाओं का एक एक व्यक्ति पंक्तिबद्ध खड़ा था.

विस्तीर्ण सभा के एक कोने पर सिकंदर का छायादार तख्त था, जिस पर बैठने के लिए कोई सिंहासन दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था. यूनानी नरेश कूल्हों पर हाथ रखे, छाती ताने, क्रोध में भरा खड़ा था. उस की निगाह इस विशाल सभा के बीचोंबीच पांच छोटे छोटे खंभों पर थी, जिन में से हर एक के साथ एक एक बलिष्ठ व्यक्ति बंधा था.

मुनि कैलानीस पंक्तियों के बीच में से निकल कर ज्यों ही सिकंदर के सामंतों के समूह में मिल जाने के लिए बढ़े, त्यों ही उन की दृष्टि उन खंभों की ओर गई और वह एक क्षण के लिए ठिठक गए. उन्हों ने माथे पर हाथ फेरते हुए ओनेसिक्राइटस से कहा : "मित्र, ओनस, मैं आप से अनुरोध करता हूं कि आप मेरे लिए जो काम करने जा रहे थे वह तुरन्त करें, अन्यथा वह बाद में व्यर्थ हो जाएगा."

"क्यों, कैसे?" ओनेसिक्राइटस ने पूछा.

'इन पाँच खंभों में से बीच वाला व्यक्ति मेरी दया का पात्र है. यदि में इसे नहीं बचा सका, तो मेरा मन निराशा से भर जाएगा. यह भव्य जीव प्रतीत होता है और इस की भाग्य रेखाएं बता रही है कि कालांतर में इसे मोक्ष लाभ होगा."

ओनेसिक्राइटस ने तिरस्कार के साथ उन खंभों की ओर देख कर आगे पग बढ़ाते हुए कहा, "आप ने अपनी दया का पात्र विचित्र व्यक्ति को बनाया है, मुनि कैलानोस. जानते हैं इन का अपराध क्या है?"

"नहीं," कैलानोस ने ओनेसिक्राइटस को आश्चर्य में डालते हुए कहा. "मानव को मानव पर हिंसा का प्रयोग करने का अधिकार नहीं है, इस कारण दया का पात्र निश्चित करते समय यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि उस का अपराध क्या है. हिंसा न हो यही सर्व प्रथम कर्त्तव्य है."

"आप का दर्शन विचित्र है!" यूनानी दार्शनिक बोला. "जहां शक्ति है वहां हिंसा का होना अनिवार्य है. हिंसा को रोकने के लिए

हिंसक से अधिक सशक्त होने की आवश्यतता होती है. बन में बैठ कर तपस्या द्वारा अपने शरीर को सुखा डालने वाले लोगों को संसार को हिंसा से मुक्त करने का दंभ नहीं करना चाहिए. आपने जिस व्यक्ति पर अपनी अमूल्य दया का अमृत छिड़का है वह राजद्रोही है, साथ ही साथ वह देशद्रोही भी है क्यों कि वह यूनानी है. इन लोगों को दंड मिलना निश्चित् है."

मुनि कैलानोस ने व्यग्र, हो कर पूछा, "क्या दंड मिलेगा?"

"मृत्यु-दंड, भयानक यातना के साथ. जुपिटर के बेटे का इशारा पाते ही सैकड़ों सैनिक इन अभागों पर पत्थर बरसाना आरंभ कर देंगे और ये पत्थर उस समय तक बरसते रहेंगे, जब तक कि इन का अंत न हो जाए. . ."

"ओह!" कैलानोस ने अपने कानों पर हाथ रख लिए. फिर बच्चों की तरह वह आग्रहपूर्वक अपने मित्र से बोले, "मित्र ओनस, यदि मैं इन सभी अभागों को सम्राट से क्षमादान न दिलवा सका, तो मेरा जीवन धिक्कार है. . ."

ओनेसिक्राइटस ने इस का कोई उत्तर नहीं दिया. दोनों उस स्थान तक पहुंच गए, जहां सैल्यूकस हाथ उठा उठा कर देवताओं के कोप की ओर सैनिकों का ध्यान आकर्षित कर रहा था. जिन लोगों ने देशद्रोह कर के यूनानी सेनाओं में विदेशियों के लिए गुप्तचरों का काम किया था उन पर देवताओं का कोप बरसने वाला है, यही उस के समस्त कथन का सार था. उसी समय मुनि कैलानोस सिकंदर के सामने जा पहुंचे. सैल्यूकस का कथन समाप्त होते ही उन्हों ने अपना हाथ ऊपर उठा कर यूनानाधीश को आशीष दिया : "कल्याण हो."

भारतीय दार्शनिक की सूरत देखते ही सिकंदर के माथे पर पड़े हुए बल मिट गए. उस ने अपने दुभाषियों की ओर देखते हुए पूछा, "कैलानोस क्या चाहते हैं?"

मुनि कैलानोस ने कहा, "मैं जानना चाहता हूं कि सम्राट अलक्षेन्द्र के निकट मेरा कितना मूल्य है?"

सिकंदर की भौंह पर फिर बल पड़ गए. "इस सवाल के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है, कैलानोस."

"मैं जानता हूं," कैलानोस ने उत्तर दिया. "किन्तु इस प्रश्न का मूल्य इसी समय है. कृपा कर के सम्राट् मेरी जिज्ञासा शांत करें."

सिकंदर विद्वान भारतीय दार्शनिक की इस उद्दंडता से क्षुब्ध नहीं हो सका. उस ने हंस कर कहा, "कैलानोस, तुम एक अनूठे दिमाग़ हो, इसलिए हम दिमाग़ की शोख़ी को नज़रअन्दाज़ करते हैं. हमारे निकट तुम्हारा वही मूल्य है, जो शरीर के अन्य अंगों के मुकाबले में दिमाग़ का होता है."

मुनि कैलानोस ने गंभीर भाव से खंभों की ओर संकेत करते हुए कहा, "क्या इन पांच आदमियों के सम्मिलित मूल्य से मेरा मूल्य बड़ा है?"

"ओह!" सिकंदर होंठ चबाता हुआ बोला. "कैलानोस अपनी कीमत घटा रहे हैं. ये पांच आदमी अपनी कीमत खो चुके हैं. निश्चय ही मुनि कैलानोस हमारे निकट अधिक आदरणीय हैं."

"तब," मुनि कैलानोस ने उन खंभों की ओर सीधा हाथ करते हुए कहा, "सम्राट् अलक्षेन्द्र, मैं प्रार्थना करता हूं कि इन पांच आदमियों के प्राणों के बदले में मेरे प्राण ले लिए जाएं. मैं अपने जीवन का सौदा करना चाहता हूं."

दुभाषिए के अर्थ समाप्त करते ही सब सुनने वाले सेनापति और सामंत इस विचित्र भारतीय योगी का मुंह ताकने लगे. केवल ओने-सिक्राइटस, जो इस बीच मुनि कैलानोस की कृपा से संस्कृत सीख गया था, इन शब्दों के निकलते ही मुसकरा उठा.

सिकंदर ने कहा "हम आदरणीय कैलानोस का अर्थ नहीं समझे. क्या हम यह सुन रहे है कि कैलानोस अपने अत्यन्त मूल्यवान प्राणों को इन देशद्रोही गुप्तचरों के प्राणों पर न्योछावर करना चाहते हैं? असंभव कैलानोस, असंभव. यह सौदा मूर्खतापूर्ण है."

"लेकिन करने योग्य है," कैलानोस ने कहा. "सम्राट् को हिंसा से संतोष मिलेगा, मुझे हिंसा को रोकने से संतोष मिलेगा. सम्राट् ही

इस तरह का ऊंचा सौदा कर सकते हैं. इस व्यापार में किसी को भी घाटा नहीं है."

"विद्वानों के प्राण स्वयं उन के नहीं होते," सिकंदर ने कहा, "सारे संसार के होते हैं. आप को अपने प्राणों पर कोई अधिकार नहीं है. इसलिए हम आप की प्रार्थना को स्वीकार नहीं कर सकते."

मुनि कैलानोस ने अविचल भाव से उत्तर दिया, "नहीं, सम्राट् भूलते हैं, फिर वही ग़लती दोहराते हैं, जिस ने सम्राट् को इतनी विराट हिंसा का निमित्त बनाया है. प्रत्येक संसारी की आत्मा अलग अलग है. वह अपने अपने कर्मों के अनुसार स्वयं ही सुख-दुःख भोगती है. उस का कण मात्र सुख-दुःख भी कोई दूसरा प्राणी नहीं बंटा सकता. इसलिये उस के प्राण स्वयं उसी के हैं. मैं अपनी प्रार्थना दोहराता हूं."

इस दार्शनिक विवाद का समुचित उत्तर देने के लिए सिकंदर ने अपने दार्शनिक की ओर देखा. लेकिन ओनेसिक्राइटस गरदन झुकाए खड़ा था. सिकंदर की दृष्टि को अपने ऊपर अनुभव कर के भी उस ने सिर नहीं उठाया.

सिकंदर ने स्वयं मुसकरा कर उत्तर दिया, "तब मुनि कैलानोस इन अधम देशद्रोहियों के दुःख को कैसे बंटा सकते हैं? इन लोगों ने जो कर्म किए हैं उन का फल इन्हें मिलना ही चाहिए, और वह अवश्य मिलेगा."

"नहीं," कैलानोस ने कहा. "सम्राट अभी निश्चय न करें. मानव मानव के कार्य का मूल्य निर्णय नहीं कर सकता. यदि वह ऐसा करता है, तो स्वयं उस निर्णय के अनुसार पाप और पुण्य का भागी होता है. यह मूल्य नियति स्वयं ही निर्णय करती है और स्वयं ही उस का फल देती है. इन पांचों व्यक्तियों को दिया हुआ दंड इन के उन कर्मों का फल नहीं होगा, हिंसा की दिशा में सम्राट् अलक्षेन्द्र के नवीन कर्म होंगे, जिन का फल कालांतर में सम्राट् की आत्मा को दुःख के रूप में मिलेगा."

इस प्रश्नोत्तरी का रूप धीरे धीरे गंभीर होता जा रहा था. कुछ लोगों का विचार था कि सिकंदर अपने स्वभाव के अनुसार इस भारतीय को उंगली के इशारे से हटा देगा और कुछ लोगों की दृष्टि ओनेसिक्राइटस की ओर जमी हुई थी. इस बार फिर सिकंदर ने उस की ओर देखा, तो वह बोला, "इस सेवक की जीभ महामुनि कैलानोस ने अपनी मित्रता के धागे से सी दी है. मैं असमर्थ हूं."

लेकिन सिकंदर अभी नहीं हारा था. वह उस अरस्तू का शिष्य था, जिस ने जीवन की प्रत्येक धारा को छूने वाले ज्ञान-विज्ञान को एक नवीन और प्रगतिशील धारा दी थी. उस ने पूछा, "और इन व्यक्तियों के, नराधमों के प्राण बचाने के लिए कैलानोस जो निमित्त बन रहे हैं उस का फल उन्हें क्या मिलेगा?"

मुनि कैलानोस को अपने दर्शन की व्याख्या करनी ही पड़ी. उन्हों ने इस के उत्तर में उस दर्शन की व्याख्या का सार बताया, "व्यक्ति चाहे या न चाहे, अच्छे कर्मों का फल उसे सुख के रूप में अवश्य भोगना ही पड़ता है. मेरा उद्देश्य उस फल की प्राप्ति नहीं है, केवल इन लोगों के प्राण बचाना है. सम्राट अलक्षेन्द्र इन्हें प्राणदान दें."

अलक्षेन्द्र ने बात समाप्त करते हुए अंतिम रूप से कहा, "आप के इस उद्देश्य की जांचपड़ताल और आप के दर्शन की मीमांसा उस्ताद अरस्तू के सामने यूनान में होगी. तब तक आप हमारे रास्ते से हट जाएं." फिर सैल्यूकस की ओर देख कर उस ने निर्णयात्मक स्वर में कहा, "सैल्यूकस, काम खतम किया जाए."

दो यूनानी सिपाहियों ने आगे बढ़ कर आंसू बहाते हुए कैलानोस को सिकंदर के सामने से हटा दिया. सैल्यूकस ने हाथ उठाया और भेरी बज उठी. साथ ही सैकड़ों सैनिकों का एक दस्ता उन पांच निरीह प्राणियों की ओर बढ़ा और सैंकड़ों पत्थर एक साथ उन के शरीर पर पड़े.

इस के बाद क्या हुआ यह न देखने के लिए मुनि कैलानोस ने अपनी आंखें ढांक लीं. वह 'त्राहिमाम्' 'त्राहिमाम्' कहते, बीच सभा से होते

हुए अंधाधुंध अपने निवास की ओर भागे.

अपने कम्बल पर लेटे हुए कैलानोस मुनि बार बार अपने तापसी जीवन को छोड़ कर इस मोह-माया, राग-द्वेष और हिंसा के वातावरण में आने के लिए मन ही मन पश्चात्ताप करते रहे. संसार के पतनशील जीवों को मुक्ति का संदेश देने में कितनी आकुलता है, कितना आत्मदाह है, कितना मानसिक क्षोभ है! इस सब को देख कर उन्हें निश्चय न हो सका कि उन्हों ने फिर से सांसारिक बाना धारण कर के, मोक्ष की ओर से कदम पीछे लौटा कर, कोई बुद्धिमानी का काम किया है या बुद्धिहीनता का.

लेकिन अब प्रश्न था कि आगे क्या किया जाए? क्या सिकंदर के साथ यूनान चला जाए? या फिर से उसी बन में पहुंच कर आत्मा को इस कलंक और जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करने के लिये कठोरतम तपस्या की जाए? उन्हें लगा कि यदि वह भारत में ही रह गए, तो पश्चिम की ओर से आने वाली विनाश, लूटपाट, हत्या और अनर्थ की यह आंधी कैसे रुकेगी? इस आंधी को अपना पीठ पर झेलने वाले पूर्व के पास दया-माया का, आध्यात्मिक उन्नति का दर्शन है, तो इन हिंसकों के पास भी हिंसा और विनाश का दर्शन है. पूर्व के दर्शन के सामने पश्चिम की हिंसक वृत्ति को खंड खंड करने की एक ऐसी समस्या है, जिस को सुलझाए बिना संसार से हिंसा का लोप नहीं होगा. तब इस के लिए पूर्व और पश्चिम के दर्शन का मल्ल युद्ध करना ही होगा और इस काम के लिए इस से अच्छा अवसर और आदर शायद ही किसी पूर्वीय दार्शनिक को मिले, जो कैलानोस को सिकंदर के हाथों मिला है. मोक्ष को चार कदम दूर रख कर ही कैलानोस को इस मोह-माया में फंसना होगा, और इस के लिए यूनान जाना ही पड़ेगा.

इसी उहापोह में पड़े हुए कैलानोस मुनि अंतिम समय तक भी यह निश्चित नहीं कर सके कि उन्हें जाना है या रह जाना है. लेकिन जब सिकंदर के विशाल दल ने वापस लौटने के लिए समुद्र और पहाड़ों में अपने पैर डाल दिए, तो कैलानोस के पग ओनेसिक्राइटस के साथ साथ बढ़ गए. यहां से फ़ारस, फ़ारस से यूनान के लिए.

सिकंदर के सामने मुनि कैलानोस के वाद-विवाद को सुन कर ओने-सिक्राइटस की श्रद्धा उन के प्रति कई गुना बढ़ गई थी. उस ने मुनि कैला-नोस के रूप में पूर्व के एक ऐसे साहसी व्यक्तित्व और मस्तिष्क के दर्शन किए थे, जो पश्चिम में अभी अधिक जाने-पहचाने नहीं थे. ज्ञान-विज्ञान में पश्चिम पूर्व से अधिक उन्नत है इस का विश्वास ओनेसिक्राइटस को था. लेकिन उस उन्नति में किस तरह की अशांति और पीड़ा दिखाई पड़ती थी, किस तरह विनाश का यह दर्शन विनाश की ओर पश्चिम को ले जा रहा था! विजय पर विजय और समृद्धि पर समृद्धि की बढ़ोतरी के बीच से जो मर्मान्तिक टीस पश्चिम को भुगतनी पड़ रही थी वह असह्य थी.

सिकंदर के साथ फ़ारस के किनारे पर पैर रखते हुए ओनेसिक्राइटस ने मुनि कैलानोस का हाथ दबाया. "फ़ारस तुम्हारे लिए शुभ हो, मित्र. यह विजित देश है. हम ने यहां की धरती को भी वीरों से हीन कर दिया है. उन वीरों के परिवारों का जीवित आधार मिट चुका है. आप के द्वारा उन्हें शांति और संतोष का दर्शन मिलेगा इस का मुझे विश्वास है."

"ज़रा अपनी ओर भी निगाह डालो," मुनि कैलानोस ने कहा. "जो यूनानी वीर इस पीड़ा देने के काम को सिद्ध करने के लिए स्वयं अपने ही प्राण निछावर कर गए, उन के परिवारों का जीवनाधार भी मिट चुका है. क्या तुम्हारा लूटा हुआ धन उन के परिजनों को संतोष दे सकेगा? जुपिटर का बेटा उत्साह, देशभक्ति और देशाभिमान के कुछ शब्द कह कर उन के हृदयों पर मरहम लगाएगा, लेकिन क्या यह मरहम वैसा ही नहीं, जो कभी ज़ख्म अच्छा नहीं करता, केवल रोगी को यह संतोष दिए रखता है कि उस का इलाज हो रहा है?"

उत्तर में ओनेसिक्राइटस बोला, "इस पीड़ा के आदान-प्रदान से भावी मानव समाज की सुख समृद्धि के बीज बोए जाते हैं."

निश्चयात्मक स्वर में कैलानोस ने कहा, "हिंसा और विनाश कभी किसी सुख-समृद्धि के आधार नहीं बन सकते. इस के बाद जो क्षणिक सुख मिलता है वह सुख नहीं सुख की कल्पना है."

ओनेसिक्राइटस ठहाका मार कर हंस पड़ा. "मुनिवर, आप का

दर्शन बड़ा निराशाजनक है. इस में सुख और दु:ख को इच्छानुसार बड़ा या छोटा कर के दिखाने की अद्‌भुत क्षमता है. हम मानते हैं जिस प्रकार सुख क्षणिक होता है उसी प्रकार उस को प्राप्त करने के प्रयत्न में होने वाला दु:ख भी क्षणिक होता है. इस सुखदु:ख के सामंजस्य से ही मनुष्य सुख की अनुभूति प्राप्त कर सकता है, अन्यथा उस के पास सुख प्राप्त करने का और कोई साधन नहीं है. सुख की कल्पना का नाम ही सुख है."

तेहरान की गलियों में विगत युद्ध की विभीषिका से त्रस्त मानवों का समूह जब कैलानोस मुनि देखते, तो वह विचलित हो जाते. तब उन्हें याद आता अपना देश, जहां इसी प्रकार के सहस्त्रों मानवों को वह ज़मीन पर कीड़े-मकोड़ों की तरह रेंगते छोड़ आए थे. जब तेहरान के बारहों दरवाज़े सिकंदर की सेनाओं को अपने भीतर समाने की चेष्टा कर रहे थे, मुनि कैलानोस और ओनेसिक्राइटस एक यूनानी बनावट के रथ पर बैठे उस महल की ओर बढ़ रहे थे, जहां हेलेना के दर्शन हो सकते थे.

"ठहरो," सहसा मुनि कैलानोस ने कहा. "उस ओर देखो."

रथ रुक गया. ओनेसिक्राइटस ने मुनि के इंगित की दिशा में देखा. एक टांग से लंगड़ा एक सत्रप जाति का व्यक्ति, जिस की लम्बी दाढ़ी उस की छाती को छू रही थी, और जिस के एक हाथ में एक कासा और दूसरे में एक लाठी थी, भयभीत दृष्टि से उन लोगों की ओर देख रहा था.

ओनेसिक्राइटस ने लापरवाही से कहा, "एक भिखारी है."

"ठहरो," मुनि कैलानोस दोबारा बोले. वह शांति के साथ रथ से नीचे उतर पड़े और उस भिखारी की ओर बढ़ते हुए कहने लगे, "मित्र ओनस, यह व्यक्ति दान का पात्र है."

ओनेसिक्राइटस भी साथ साथ उतर पड़ा. कैलानोस उस व्यक्ति के पास गए और उस से पूछा, "तुम्हारा नाम?"

एक क्षण तक उस ने मुनि का मुंह ताका और इस के बाद उत्तर में बोला, "इलिया."

मुनि सहसा चौंक पड़े. "क्या तुम संस्कृत समझते हो?"

सुनने वाले ने सिर हिलाया. "मेरा सौभाग्य है."

मुनि ने एक क्षण उस के हाथ में थमे हुए कासे को देखा और तत्काल उन्हों ने अपने लम्बे चोगे के अस्तरबंद को टटोला. उस में जितने भी स्वर्ण के सिक्के थे, उन्हों ने निकाल कर खनाखन कासे में डाल दिए.

वह व्यक्ति एक क्षण स्तंभित सा खड़ा मुनि कैलानोस को देखता रहा. फिर उस ने अपने कासे की ओर देखा और सहसा आश्चर्य के साथ मुनि कैलानोस ने देखा कि उस व्यक्ति ने अपने कासे को उलट दिया. उस के चेहरे पर असंतोष और तीव्र घृणा के भाव थे. इस घटना के साथ ही ओनेसिक्राइटस के साथ आए अंगरक्षकों के नेज़े म्यानों से खिच गए.

मुनि कैलानोस ने घबरा कर उन नेजों को देखा और स्वयं छाती तान कर इलिया नामक उस व्यक्ति के सामने खड़े हो गए. ओनेसिक्राइटस ने आंख का इशारा किया और नेजे ज्यों-के-त्यों अपने पूर्व स्थानों पर पहुँच गए.

मुनि कैलानोस घूम कर बोले, "एक भारतीय का दान आप को अस्वीकार है?"

इलिया ने घृणा से होंठ सिकोड़ते हुए कहा, "आप के धर्म में केवल दान लेने वाले पात्र की परीक्षा कर के ही दान देना लिखा है. हम दान देने वाले पात्र को देख कर दान लेते हैं. यूनानियों ने हमें नष्ट कर दिया है, लेकिन हमारे स्वाभिमान को वे अभी नष्ट नहीं कर सके हैं. आप उन्हीं यूनानियों के साथी हैं. आप पर थू है!"

इस के साथ ही श्वेत दाढ़ी वाले वृद्ध इलिया की गरदन आवेग के आधिक्य से हिलने लगी.

मुनि कैलानोस ने मुसकरा कर ओनेसिक्राइटस की ओर देखते हुए कहा, "मित्र ओनस, इस घृणा का अन्त आप के दर्शन के अनुसार कहां होगा?"

ओनेसिक्राइटस भी मुसकराया. उतने ही निश्चयात्मक स्वर में उस ने उत्तर दिया, "मृत्यु में. लेकिन अनुभव कहता है कि उस तक पहुँचने से पहले ही, उत्तरोत्तर हीन होती हुई अवस्था के साथ साथ, घृणा करने

वाले प्रशंसक और सहिष्णु हो जाते हैं. दास लोगों को नहीं देखते?"

ओनेसिक्राइटस का प्रत्येक उत्तर क्रूरता और निर्दयता से भरा हुआ था. कैलानोस की क्षमाशील दृष्टि नत हो गई. उन्हों ने उस ज्ञानवान भिखारी के जगह जगह से फटे हुए वस्त्रों को देखा और अपना मूल्यवान चोग़ा उतार कर उस की ओर बढ़ा दिया. "मेरा नाम कैलानोस है," उन्हों ने कहा. "यह यूनानियों का दिया हुआ नाम है. मैं इन के साथ ज्ञान की खोज में आया हूं. क्या एक भारतीय का यह उपहार भी तुम अस्वीकार करोगे?"

इलिया ने फिर परीक्षा के तौर पर कैलानोस के मुंह को देखा. फिर उस ने वस्त्र पकड़ लिया. तत्काल ओनेसिक्राइटस के अंगरक्षक रथ की ओर दौड़ पड़े और मुनि के लिए दूसरा चोग़ा ले कर लौटे.

"चलो, मित्र ओनस," कैलानोस बोले. "अब तक यूनान की क्रूरता देखी. अब यूनान के सौंदर्य के दर्शन करेंगे."

दोनों दार्शनिकों का तीव्रगामी रथ और भी तेज़ी के साथ हेलेना के महल की ओर दौड़ चला.

ऊंचे पथरीले महलों के बीच, एक विस्तीर्ण महल के द्वार पर जा कर रथ के घोड़ों की तनी हुई लगामें खिंच गईं. चारों ओर निर्जन लगता था और उस में छाई हुई शांति श्मशान की शांति के समान थी. कौन कह सकता था कि तेहरान के लोग भय से सिमटे हुए अपने अपने घरों के भीतर बंद थे या भीतर ही भीतर कोई ज्वाला सुलग रही थी. सड़क पर इधर-उधर केवल दो-चार श्वान ही दिखाई पड़ रहे थे. दूर से यवन सेनाओं के गाजेबाजे इस प्रकार चीख़ रहे थे, जैसे बार बार कोई कराह रहा हो.

रथ अभी भली प्रकार रुका भी नहीं था और महल के द्वार के प्रहरी रथ तक पहुंचे भी नहीं थे कि नारी कंठ की एक बड़ी तेज़ चीख़ सहसा महल के दरवाज़े से निकल कर वायुमंडल में फैल गई. मुनि कैलानोस जहां-के-तहां ठिठक गए. उन का एक पैर ज़मीन के ऊपर रखा गया था

और दूसरा उतरने वाला था. उन्हों ने अचकचा कर ओनेसिक्राइटस की ओर देखा.

इतने में दूसरी चीख़ आई और इस के बाद चीख़ों का एक ऐसा तांता बंध गया कि वहां उपस्थित सभी लोग हड़बड़ा गए. केवल महल के द्वार पर जो प्रहरी थोड़ी देर पहले खड़े थे और रथ को आता देख कर उस की ओर लपके थे, वे दृष्टि नीची किए अपने काम में लग गए. उन्हों ने रथ का सामान नीचे उतारा.

"मित्र ओनस," कैलानोस ने पूछा, "यही आप का निवास स्थान है?"

ओनेसिक्राइटस को स्वीकार करने में लज्जा अनुभव हुई. फिर भी उसे 'हां' कहनी पड़ी.

"क्या आप बता सकते हैं कि वह स्त्री कौन है, जिस को कोई भयानक कष्ट प्रतीत होता है, और वह कष्ट क्या हो सकता है?" मुनि कैलानोस ने पूछा.

"जहां तक मेरा अनुमान है, यह आवाज़ एथेना की है," ओनेसिक्राइटस ने कहा. "एथेना हमारी दासी है. उसे इस समय क्या कष्ट है यह बिना भीतर जाए मालूम होना कठिन है."

यूनानी दार्शनिक झपट कर महल के भीतर जाने के लिए तत्पर हुआ और मुनि कैलानोस उस के पीछे पीछे चले. चीख़ की आवाज़ें अभी तक आ रही थीं और उन की तेज़ी में किसी प्रकार का अंतर नहीं आ पाया था.

तेहरान स्थित यूनानी दार्शनिक का महल सिकंदर के सामंतों के वैभव के अनुरूप यूनानी अभिरुचि की मूल्यवान् सामग्री से सजा था. स्थान स्थान पर कुशल मूर्तिकारों के हाथों से निर्मित नृत्य मुद्राओं में ढली हुई मूर्तियां और दीवारों पर उभरे हुए अस्थाई चित्र चिपके हुए थे. झालरदार ईरानी परदों के बीच से हर मोड़ पर एक न एक छोटी-बड़ी प्रस्तर-प्रतिमा सहसा ही सामने पड़ कर कानों में कोई रहस्य सा कहती प्रतीत होती थी. ये ईरान की कला के नमूने थे.

दोनों दार्शनिक सहसा ही एक ऐसे प्रांगण में पहुंचे, जहां का दृश्य

देख कर मुनि कैलानोस स्वयं मूर्त्ति की भाँति जड़ हो गए. यही नहीं, यूनानी दार्शनिक स्वयं जड़ की भांति दिखाई पड़ने लगा.

एक अत्यन्त सुन्दर यूनानी रमणी हाथ में एक विचित्र प्रकार का बना हुआ कोड़ा लिए प्रहार करने की मुद्रा में खड़ी थी. एक दूसरी स्त्री आने वालों की ओर पीठ किए, दीवार के सहारे खड़ी थरथर काँप रही थी. उस की पीठ उघड़ी हुई थी और उस के दोनों हाथ ऊपर की ओर किसी खूंटी के साथ जुड़ कर बंधे हुए थे. पदचाप सुन कर उस ने जरा गरदन घुमा कर भयभीत दृष्टि से नवागंतुकों को देखा और फिर एक चीख मारी.

मुनि कैलानोस हिल गए. ओनेसिक्राइटस पर घड़ों पानी पड़ गया, और आक्रांता रमणी के क्रोध से लाल मुख पर सहसा ही एक रंग आता और एक रंग लौट जाता. अभ्यागतों के सामने इस प्रकार पड़ना निश्चय ही नितांत अशोभनीय था और उस सौंदर्य की विकराल प्रतिमा के हाथ में अभी तक वह कोड़ा था. उस ने उपेक्षा के साथ एक बार गरदन तिरछी कर के 'हूं' की और कोड़े को एक ओर फेंक कर वह पैर पटकती हुई चली गई.

अब यूनानी दार्शनिक अपनी भूल समझा. उसे बिना कारण मालूम किए इस प्रकार अपने साथ एक अतिथि को लिए हुए भीतर नहीं आना चाहिए था. किन्तु अब स्थिति बिगड़ चुकी थी. खूंटी से बंधी दासी एथेना का सिर उस की बांहों के बीच में से निकल कर नीचे की ओर इस प्रकार लटक गया था मानो वह मृतप्रायः हो चुकी हो. उस की पीठ पर आठ-दस लकीरें उभर आई थीं और अब उन में से लाल आभा बड़ी तेजी के साथ फूट रही थी.

ओनेसिक्राइटस यही सब सोचता हुआ जड़ बना खड़ा रहा, जब कि मुनि कैलानोस ने शांत वाणी में कहा, "मित्र ओनस, क्या आप मुझे इस नारी के हाथ खोल देने की अनुमति दे सकेंगे?"

ओनेसिक्राइटस ने चौंक कर कहा : "ओह!" और वह स्वयं आगे बढ़ कर दासी एथेना के हाथ खूंटी से खोलने लगा. हाथ खुलते ही वह

उस की गोदी में ढह पड़ी. एक बार उस की भयभीत दृष्टि विस्फारित हो कर उन लोगों के ऊपर पड़ी और उस के बाद वह अचेत हो गई.

उसी समय दो अन्य दासियां बाहर से क्रुद्ध हेलना का संकेत पा कर एथेना को लेने के लिए आईं. उन के हाथों में अचेत एथेना को छोड़ कर यूनानी दार्शनिक उठा और कैलानोस से बोला, "आइए, अब विश्राम के लिए चलें. शाम के समय जब हेलेना शांत होगी, तब आप देखेंगे कि वह हृदय से उतनी विकराल नहीं है, जितनी ऊपर से दिखाई पड़ती है."

मुनि कैलानोस हंसे. "मित्र ओनस, यह बात मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है. मैं मनुष्यत्व में विश्वास करता हूं."

द्वार की ओर बढ़ता हुआ ओनेसिक्राइटस बोला, "लेकिन स्वयं मनुष्यत्व क्या है इस बात का निश्चय आज तक नहीं हो पाया है. धर्म के नाम पर विधर्मियों के ऊपर हर तरह का अत्याचार करना भी कहीं कहीं मनुष्यत्व का सब से बड़ा प्रमाण समझा जाता है."

"विवाद अन्तहीन है," मुनि कैलानोस बात को समाप्त करने की चेष्टा करते हुए बोले.

"किन्तु सत्य पर पहुंचने की कसौटी केवल यही है," ओनेसिक्राइटस ने अपने ढंग पर बात को समाप्त किया.

एक बहुत सीधे-सादे कक्ष में पहुँच कर ओनेसिक्राइटस ने कहा, "मुनिवर, विश्राम बड़ी अच्छी चीज़ है. जाग्रत अवस्था की मीठी-कड़वी स्मृतियां मनुष्य नींद में खो देता है."

उसी समय एक यूनानी परिचारिका हाथ में एक थाल थामे हुए आई. उस में कुछ खाद्य सामग्री और दो सुमधुर पेय के कटोरे थे.

नींद आने पर, यूनानी दार्शनिक के कथन के विपरीत, मुनि कैलानोस को शांति नहीं मिली. कुछ देर तक वह करवटें बदलते रहे और संभवतः पांच साल के तापसी जीवन के बाद पहली बार उन्हें दुःस्वप्न दिखाई दिए. जब वह अपने स्वप्न से घबरा कर सहसा ही उठ बैठे, तो उन्हों ने देखा कि उन का मित्र अपनी कोमल शैय्या पर बैठा उन की ओर

एकाग्र दृष्टि से निरख रहा था. उन्हें जागते देख कर उस ने कहा, "हेलेना का महल स्वप्नों का महल होता है. क्या यूनान और क्या ईरान, स्वप्न हेलेना के साथ साथ चलते हैं. आप के स्वप्न कुछ बुरे तो नहीं रहे?"

आलस्य उतारने के लिए मुनि ने अपने हाथ-पैरों को विभिन्न दिशाओं में घुमाया-फिराया. फिर वह बोले, "मित्र, स्वप्न में मुझे दिखाई दिया है कि सारा संसार ज्वाला से धधक रहा है और जहां कहीं आग बुझी हुई दिखाई देती है, उस ओर झपट कर तुम्हारा निकाटोर अपने हाथ की मशाल से फिर आग जला देता है. मित्र ओनस, इस प्रचंड अग्नि में मैं ने मनुष्य मात्र को हाथ ऊपर उठा उठा कर त्राहि त्राहि करते देखा है. ज्वालाओं से दग्ध होते हुए भी मैं ने मनुष्यों को भयंकर ईर्ष्या के वशीभूत हो कर एक-दूसरे को अस्त्रशस्त्र से काटते देखा है. देवी हेलेना के महल के ये स्वप्न बड़े भयंकर थे."

ओनेसिक्राइटस हो हो करके हंसा. "मित्र कैलानोस, आप के भारत के दार्शनिकों ने वास्तविकता को कल्पना और कल्पना को वास्तविकता के रूप में बदल दिया है. मैं आशा कर रहा था कि कल्पना की पुष्टि करने के लिए आप कोई सुन्दर सी कथा सुनाएंगे. लेकिन आप ने उस के स्थान पर स्वप्न को तरजीह दी. खैर, आइए, हेलेना के हाल-चाल मालूम करें. वह स्वप्नों की बड़ी अच्छी व्याख्या करती है."

कैलानोस की स्वप्नावस्था में ही ओनेसिक्राइटस जागने के बाद हेलेना से भेंट का प्रबन्ध कर चुका था.

हेलेना का कक्ष विलास सामग्री से भरपूर था. सुगन्ध उस के कण कण से फूटी पड़ रही थी. दीवारों पर शीघ्रता में बनाई हुई कलाकृतियां अंकित थीं और ईरानी कालीनों से फ़रश पटा हुआ था. जहां-तहां झालरदार मख़मली परदे थे और आबनूस का छपरखट मलमल के श्वेत वस्त्रों से ढंका था. इस पर हेलेना विराजमान थी.

आगत व्यक्तियों के सम्मान में वह उठी. "यूनान के मित्र को ईरान का आगमन शुभ हो. आशा है दोपहर की उस अशोभनीय घटना का

प्रभाव आप के मन से दूर हो चुका होगा."

ओनेसिक्राइटस ने दुभाषिए का काम किया.

हेलेना के कल्याण की कामना से अपना हाथ ऊपर उठा कर मुनि कैलानोस ने कहा, "मनुष्य का मनुष्य के ऊपर अत्याचार का प्रभाव इतनी जल्दी नहीं मिटता, देवी."

दार्शनिक की पत्नी ने दोनों को आसन दिखाया. फिर वह मुसकराते हुए बोली, "उस ने अपराध किया था, इसलिए उसे दंड मिलना ही चाहिए था. जानते हैं उस ने क्या अपराध किया था? उस ने ईरान के एक गुलाम मनुष्य से प्रेम का स्वांग रचा था."

"आप के विचार अद्भुत हैं, देवी," मुनि कैलानोस बोले. "हर मनुष्य की आत्मा एक सी है. दास हो कर न ही कोई मनुष्य मनुष्यत्व खो देता है और न ही उस की प्रेम-भावना स्वांग हो जाती है."

हेलेना फिर मुसकराई. उस के हास्य में लावण्य था. वह बोली, "ओह! मैं भूली. आप भारतीय अध्यात्मवादी हैं. आप के कथन से कोई सहज ही समझ सकता है कि भारत आत्माओं का देश है. वहां पर शरीर नहीं रहते, आत्माएं रहती हैं. जिन शरीरों में ये आत्माएं निवास करती हैं, उन की दुष्टता के कारण उन्हें समुदाय बना कर रहना पड़ता है, नहीं तो हर आत्मा को अपनी मुक्ति की चिंता है. हमारा यूनान शरीरों का देश है. वहां शरीर बनते हैं, बनाए जाते हैं, खरीदे जाते हैं, बेचे जाते हैं. महान् नेता सिकंदर के नेतृत्व में यूनान के इन शरीरों ने विश्व के उन शरीरों को अपना दास बना लेने का निश्चय किया है, जो आत्माओं के रूप में अपनी छाया को मुक्त करने की चिंता में मूल शरीर को रात-दिन सुखा रहे हैं."

कठोर व्यंग्य से मुनि कैलानोस जड़ से हो गए. ओनेसिक्राइटस होंठों-ही-होंठों में हंस पड़ा. शांति के साथ भारतीय दार्शनिक ने एक क्षण चुप रह कर यूनानी रमणी के इस व्यंग्य को आत्मसात् किया. फिर दो बार पलकें झपका कर उतनी ही कोमल और शांतिपूर्ण वाणी में उन्हों ने

कहा, "देवी, यदि इन शरीरों ने मनुष्यत्व भुला दिया, तो स्वयं इन का भी कल्याण नहीं है. अध्यात्मवाद कल्पना ही सही, किंतु वह शांति की कल्पना है. यदि विज्ञान का रूप इतना ही कठोर है, जितना आप के कथन से प्रकट हो रहा है, तो इस के द्वारा मनुष्य कभी ऐसे साधनों का आविष्कार करेगा, जिन की कल्पना तक नहीं की जा सकती. आज जो विचार हैं, कल वे साधनों का रूप लेंगे और मनुष्य स्वयं अपने बनाए हुए उपकरणों से नष्ट हो जाएगा."

हेलेना ने उसी उपेक्षा के भाव से कहा, "मनुष्य उन साधनों का आविष्कार कर चुका है. संघर्ष और हिंसा प्राणियों का स्वाभाविक गुण है. बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है. इस संसृति के गर्भ में व्याप्त हिंसा को देख कर ही प्रकृति के सब से अधिक बुद्धिमान प्राणी ने प्राकृतिक और विरोधी जाति के शत्रुओं से लड़ने के लिए अपने को संगठित करने का सिद्धांत सीखा है. इस सिद्धांत को भुला कर, भिन्न भिन्न मानव समूहों के भिन्न भिन्न स्वार्थ होने के कारण ही युद्धों की रचना होती है. मनुष्य ने स्वयं अपना ही विनाश करने के लिए, देवताओं और धर्म की सृष्टि कर के, इन भिन्न भिन्न स्वार्थों की नींव डाली है. असली संघर्ष विनाश और निर्माण की शक्तियों में है. विज्ञान ने विनाश को शक्ति दी है, तो निर्माण को भी दी है. इसलिए विज्ञान मात्र विनाश का जनक नहीं माना जा सकता. विनाश होता है भिन्न भिन्न राहों से, इस संसार से दूर भगा कर, कल्पित मोक्ष और स्वर्गों की ओर ले जाने का दावा करने वाले देवताओं के कारण. अपनी बताई हुई राह को सर्वोपरि रखने के लिए ये धर्म और देवता मनुष्य को आपस में लड़ाते हैं. मानव समाज की भावी सुखसमृद्धि अध्यात्मवाद व देवताओं की चिता पर ही निर्मित होगी."

उसी समय हेलेना को ध्यान आया कि उस ने अपने अतिथि का सत्कार भली प्रकार नहीं किया है. उस ने ताली बजाई और तत्काल एक दासी आ उपस्थित हुई. हेलेना ने कहा, "हमारे अतिथि को यूनान के फल चखाए जाएं. लेकिन ठहरो, एथेना को भेजो."

दासी चुपचाप खड़ी रही. हेलेना ने पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

"एथेना नहीं है," दासी ने कहा.

"नहीं है!" हेलेना ने चौंक कर पूछा. "क्या मतलब?"

"दासी एथेना महल में नहीं है," दासी ने फिर कहा. "मैं आप के पास इसी समाचार को पहुंचाने के लिए आ रही थी. वह चली गई...."

"चली गई! कहां चली गई?" हेलेना ने तीव्र स्वर से पूछा. फिर स्वयं ही उत्तर दिया, "शायद उसी ईरानी के साथ भाग गई. बीनस, हमारे सैनिकों को उसे खोजने के लिए भेजो. उन से कहो तेहरान का चप्पा चप्पा छान मारें, किन्तु एथेना को खोज निकालें. किसी भी तरह हो एथेना यहां आनी ही चाहिए. आवश्यकता हो, तो महासेनापति परडीकस से सैनिक सहायता ली जाए. जाओ!"

विवाद का वातावरण समाप्त हो गया था. ओनेसिक्राइटस अपने मित्र को संकेत कर के उठ खड़ा हुआ. मुनि कैलानोस उठते हुए बोले, "देवी, मैं आप के गुरु अरस्तू से मिल कर इन सब प्रश्नों का निर्णय करूंगा."

हेलना भी उठ गई. उस ने अपने पति की ओर संकेत करते हुए कहा, "सम्मानित अतिथि का सत्कार नहीं हो पाया. कृपया इस बात का ध्यान रखिए."

मुनि कैलानोस और ओनेसिक्राइटस वापस लौटे. जिस समय दोनों मित्र उद्यान में निकल कर आए, अनेक अश्वारोही सैनिक भवन से निकल कर राजमार्ग पर पहुंच चुके थे. मुनि कैलानोस ने कहा, "मित्र ओनस, क्या आप देवी हेलेना से प्रार्थना कर सकेंगे कि उस दीनहीन दासी के संबंध में अपने मन को हिंसा की ओर न झुकने दें. इतने सौंदर्य में इतनी क्रूरता शोभा नहीं देती."

"व्यर्थ है," ओनेसिक्राइटस ने कहा. "आप ने मेरे बनाए हुए चित्र नहीं देखे? हेलेना के भीतर जो कुरूपता है वही मेरे चित्रों की रेखाओं में प्रकट हो जाती है. किन्तु, मित्र, इस से यह कल्पना न कर लेना कि

विज्ञान का पोषण करने वाला प्रत्येक हृदय इसी भांति शुष्क होता है. विज्ञान बहुत सरस ज्ञान है....ओह!"

कैलानोस ने आश्चर्य से अपने मित्र के मुंह को देखा, जिस से आश्चर्य मिश्रित खेद का स्वर निकला था. उन्हों ने पूछा, "क्या बात है?"

ओनेसिक्राइटस कुछ क्षणों के लिए बेचैन हो गया. "मित्रवर, हमें चलना चाहिए. यदि हेलेना के कथनानुसार हमारे सैनिकों ने सेनापति परडीकस के सैनिकों की सहायता ली, तो मामला महान् सिकंदर तक जा पहुंचेगा."

"फिर, इस में घबराने की क्या बात है?" मुनि कैलानोस ने कहा. "आप महान् सिकंदर से कह कर अपनी दासी को छुड़ा लीजिए."

"ओह! नहीं, नहीं. आप नहीं जानते. यूनान में दासों के भागने का दंड मृत्यु है. यदि किसी तरह मामला सिकंदर तक पहुंच गया, तो एथेना की मृत्यु निश्चित है. आइए, अभी शायद स्थिति सुधर जाए."

यह बात सुन कर मुनि कैलानोस भी चिंतित हो गए. वह ऐसे व्यक्ति थे, कि जहां वह उपस्थित हों, उस स्थान पर सभी जीव सुखशांति के साथ रह सकें. वह तुरन्त ओनेसिक्राइटस के साथ अश्वशाला की ओर बढ़े.

जिस दिशा में थोड़ी देर पहले हेलेना के सैनिक गए थे उसी दिशा में दोनों दार्शनिकों ने अपने घोड़े दौड़ा दिए. बहुत देर तक तेहरान के गलीकूचों का चक्कर काटने के बाद उन्हें अपने सैनिक दिखाई दिए.

किन्तु उस स्थान पर स्थिति बड़ी विचित्र थी. ओनेसिक्राइटस के दस-पंद्रह सैनिकों के मुकाबले में सत्रपों के एक हज़ार के लगभग लोगों का दल हाथों में तरह तरह के बड़े-छोटे अस्त्र लिए खड़ा था. तेहरान के निवासियों की एक भीड़ थी, जो हिंसक दृष्टि से यूनानी सैनिकों को घूर रही थी.

यूनानी दार्शनिक के उस स्थान पर पहुंचते ही उस का एक सैनिक अफ़सर उन के निकट आया और बोला, "एथेना को इन लोगों ने छिपा रखा है."

"कैसे मालूम हुआ?" ओनेसिक्राइटस ने सीधा प्रश्न किया.

"हमारे एक प्रहरी ने उन दोनों को सामने वाले घर में घुसते देखा था. सेनापति परडीकस के पास सैनिक सहायता के लिए हमारा आदमी जा चुका है. वे लोग आते ही होंगे...."

"ओह!" ओनेसिक्राइटस ने कैलानोस की ओर निराशाजनक दृष्टि से देखा. फिर वह झल्ला कर अपने सैनिक से बोला, "यह तुम लोगों ने क्या किया?"

"हमारे सामने और कोई चारा नहीं था," सैनिक ने उत्तर दिया.

अभी ये बातें चल ही रही थी कि ओनेसिक्राइटस की निगाह दूर राजपथ पर चली गई. परडीकस के सैनिक आ रहे थे. ओनेसिक्राइटस भीड़ की ओर मुंह कर के चिल्लाया : "क्या तुम लोग पागल हो गए हो? अगर कत्ले-आम मच गया, तो तेहरान का एक भी नागरिक जीवित नहीं बचेगा. हमारा अपराधी हमें सौंप दो— अब भी वक्त है."

लेकिन बेचारे दार्शनिक की यूनानी भाषा को कोई भी सत्रप नहीं समझ सका. भीड़ चिल्लाई : "भाग जाओ. तुम लोग निर्दयी हो, हत्यारे हो. तुम लोग क्यों आए हो?"

और तब तक सिकंदर के दो हज़ार सैनिकों का दल सामने आ गया. सेनापति परडीकस का एक अंगरक्षक सेनापति सैनिकों का संचालन कर रहा था. उन के आते ही ओनेसिक्राइटस के सैनिकों ने मार्ग छोड़ दिया.

मुनि कैलानोस ने देखा कि साक्षात् मृत्यु को देख कर भी भीड़ में से कोई व्यक्ति पीछे नहीं हटा. लोगों की मनोवृत्ति विचित्र होती है. एक ज़रा से भय से जो लोग अस्तव्यस्त चींटियों की तरह इधर-उधर भागने लगते हैं, वे किसी समय इस प्रकार प्राण देने के लिए उतारू हो जाते हैं कि उस से बड़ी मूर्खता की बात दुनिया में कोई मालूम ही नहीं होती.

मुनि कैलानोस विचलित हो गए. क्या अब यहां पर सामूहिक हत्याकांड होगा, और वह भी उन के सामने? उन्हों ने ओनेसिक्राइटस की ओर देख कर, बेचैनी के साथ कहा, "मित्र ओनस, क्या आप थोड़ी देर के लिए इन सैनिकों को रोक सकते हैं? संभव है मैं इन लोगों से बातें कर के

कोई सहज परिणाम निकाल सकूं. एक ज़रा सी बात के लिए इतनी बड़ी हिंसा नहीं होनी चाहिए. ये लोग इस समय अपने आपे में नहीं हैं."

ओनेसिक्राइटस ने कहा, "आप प्रयत्न कर देखें. मैं भी नहीं चाहता कि हत्याकांड हो."

जब तक यूनानी दार्शनिक परडीकस के सैनिकों की ओर स्थिति समझाने के लिए बढ़ा, मुनि कैलानोस भीड़ की ओर गए. एक निहत्ये आदमी को अपनी ओर आते देख कर भीड़ में से कुछ व्यक्ति आगे आ गए. मुनि कैलानोस ने संस्कृत में अपना मतलब बयान किया :

"भाईयों, आप लोग साक्षात् मृत्यु को सामने खड़ी देख रहे हैं. क्या आप कृपा कर के मुझे अपनी इच्छा बताएंगे?"

वहां संस्कृत भी समझने वाला कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था. भीड़ अपनी भाषा में चिल्लाई : "भाग जाओ. तुम यूनानियों के पिट्ठू हो!"

मुनि कैलानोस असहाय की भांति खड़े रह गए. समस्या के सुलझाने की राह में भाषा सब से बड़ी रुकावट बनी हुई थी. उसी समय उन की आंखों में आशा की एक चमक आई. वह जोर लगा कर चिल्लाए, "इलिया! इलिया!"

भीड़ में कानाफूसी आरंभ हो गई थी. शायद कुछ व्यक्तियों का यह मत था कि इस आदमी की बातों का पता लगना चाहिए कि यह कह क्या रहा है. जब कैलानोस ने इलिया का नाम पुकारा, तो भीड़ के कुछ लोग भीड़ के भीतर घुस गए. कुछ ही देर में वे इलिया को अपने कंधों पर बैठाए बाहर निकले. वृद्ध इलिया की गरदन हिल रही थी.

मुनि कैलानोस और आगे बढ़े. अब वह सत्रपों के हिंसक हाथों के बीच में थे. इलिया को संबोधन कर के उन्हों ने कहा, "भाई इलिया, क्या मैं आप लोगों का शत्रु हूं?"

"नहीं," इलिया ने संक्षिप्त उत्तर दिया.

"इन लोगों की क्या इच्छा है, क्या मैं जान सकता हूँ?"

"ये यूनानी पशु हैं," इलिया ने कहा. "सत्रपों के आध्यात्मिक गुरु महामना इसराईल के पौत्र याकूब ने एक यूनानी दासी को सत्रपों के धर्म

में दीक्षित कर के उस से विवाह किया है. हम लोग उसे इन लोगों के हाथों में मरने के लिए नहीं सौंप सकते. हम युद्ध में हार गए हैं, लेकिन हमारा धर्म और ईमान अभी नष्ट नहीं हुए हैं. सत्रपों का बच्चा बच्चा अपनी जान पर खेल जाएगा. हमारे देवता हमारे साथ हैं."

सुन कर मुनि कैलानोस को क्षोभ हुआ. सहसा ही उन्हें हेलेना का कथन याद आ गया. एक स्त्री के लिए इतने आदमियों की हत्या और इतना बड़ा विनाश! उन्हों ने कहा, "बंधु इलिया, आप के धर्मगुरु के पौत्र ने विवाह के लिए ही यूनानियों की दासी को अपने धर्म में दीक्षित किया है. सांसारिक विलास और वासना के लिए वह धर्म की आड़ ले कर आप सब लोगों को मौत के घाट उतरवाने में भी नहीं हिचकिचाता. क्या ऐसा आदमी आप लोगों की श्रद्धा का पात्र हो सकता है? आप वृद्ध हैं. क्या आप एक स्त्री के लिए इतने लोगों की बलि सहन कर सकते हैं? यदि नहीं, तो इन लोगों को समझाइए. धर्म व्यक्तियों को मुक्ति देने के लिए होता है, न कि मार डालने के लिए."

वृद्ध इलिया अपनी गरदन हिलाता हुआ कुछ समय तक सोचता रहा. इस के बाद वह अपने लोगों की ओर मुड़ा. बहुत देर तक वह हाथ हिलाता हुआ उन लोगों को जोश के साथ न जाने क्या क्या कहता रहा. तब तक मुनि कैलानोस यूनानियों के अस्त्र-शस्त्रों से लैस दल की ओर देखते रहे. उन लोगों के घोड़े मचल रहे थे और वे बार बार कभी ओनेसिक्राइटस की ओर और कभी कैलानोस की ओर देख लेते थे. उन लोगों को रोकने का काम ओनेसिक्राइटस का प्रभुत्व कर रहा था या भारतीय दार्शनिक के प्रति उन का सम्मान इस बात का क्या पता लग सकता था.

सत्रपों की भीड़ में भीषण वादविवाद छिड़ गया. जब देरी संयम की सीमा पार करने लगी, तो सहसा ही कैलानोस ने देखा कि वादविवाद समाप्त हो गया है और इलिया उन की ओर बढ़ रहा है.

इलिया ने मुनि कैलानोस के चेहरे की ओर दृष्टि जमा कर कहा,

"हम लोग यूनानियों की दासी को लौटा देने के लिए तैयार हैं. दूसरों की स्त्रियों पर हमारा क्या अधिकार हो सकता है? लेकिन देवताओं का अधिकार अपने सभी पूजकों पर समान भाव से होता है. अपने धर्म में दीक्षित करते समय सत्रपों ने उसे सुरक्षा का आश्वासन दिया था. हम अपना वचन नहीं तोड़ सकते. यदि एथेना को कोई दंड न दिया जाए, तो हम उसे लौटा देंगे."

मुनि कैलानोस ने शांति की एक सांस भरी. फिर वह बोले, "लेकिन कोई दंड नहीं दिया जाएगा इस का विश्वास कैसे किया जा सकता है?"

"और कोई राह नहीं है," इलिया ने निराशा के साथ कहा.

कुछ देर तक मुनि कैलानोस सोच में पड़े रहे. फिर सिर उठा कर उन्हों ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, "अच्छी बात है, एथेना को कोई दंड नहीं मिलेगा."

बूढ़ा इलिया हंसा. "यह आप ही तो कहते हैं, यूनानाधीश तो नहीं कहते."

"मुझ पर विश्वास करो," मुनि कैलानोस ने इलिया की बूढ़ी आंखों में तापसी की दृष्टि से निहारते हुए कहा.

इलिया ने अपने साथियों को एक बार निरखा. फिर बोला, "हमें आप पर विश्वास है. क्या आप वचन देंगे?"

"हां," मुनि कैलानोस ने बिना हिचकिचाए उत्तर दिया. "मैं वचन देता हूं कि इस अपराध के लिए दासी एथेना को कोई दंड नहीं दिया जाएगा."

इलिया की आंखें चमक गईं. "और अगर वचन भंग हुआ, तो?"

"तो....तो..." मुनि कैलानोस की आंखें भी चमक गईं. "वही दंड पहले मैं सहन करूंगा, वचन देता हूं."

"आप महान् हैं," इलिया ने केवल इतना कहा और वह वापस अपने साथियों में लौट गया.

कुछ समय बाद सहस्त्रों यूनानी सैनिकों ने देखा कि जिस काम के

लिए हज़ारों लोगों की हत्या होने जा रही थी, वह बिना रक्तपात के ही पूर्ण हो गया. सत्रपों ने सुबकती हुई दासी एथेना को यूनानियों के हाथों में सौंप दिया. देखते देखते मुंह लटका कर सत्रप उस स्थान से हट गए.

एथेना को लेने के लिए ओनेसिक्राइटस के सैनिक आगे बढ़े. किंतु सेनापति परडीकस का अंगरक्षक तुरंत बीच में आ कर बोला, "दासता के नियमों को तोड़ कर अपराध करने वाले का निर्णय पहले महान् विजेता सिकंदर के दरबार में होगा. इस के बाद आदरणीय ओनेसिक्राइटस अपनी दासी को लौटा सकेंगे." और अंतिम शब्दों पर ज़ोर देते हुए वह विचित्र व्यंग्य के साथ मुसकराया.

ओनेसिक्राइटस ने निराशा के स्वर में अपने मित्र के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, "एथेना की मृत्यु निश्चित् है."

मुनि कैलानोस ने उस हाथ को थपथपाते हुए कदम आगे बढ़ा कर कहा, "ऐसा न कहो, मित्र. इस के अर्थ हैं कि आप के मित्र कैलानोस की मृत्यु निश्चित् है."

ओनेसिक्राइटस चौंक गया. "आप का मतलब क्या है, मैं नहीं समझा? महान् सिकंदर अपने अपराधियों के प्राणदान के विषय में एक बार आप की प्रार्थना को ठुकरा चुके हैं."

"किंतु इस बार वह नहीं ठुकरा सकेंगे," निश्चय और विश्वास के स्वर में कैलानोस ने कहा. "चलो, चलें."

यह समाचार जिस समय दार्शनिक की पत्नी को मिला, उस ने उपेक्षा से मुंह मोड़ लिया. "अपराध करने वालों को उस का दंड मिलना ही चाहिए," उस ने कहा.

"अवश्य मिलना चाहिए," यूनानी दार्शनिक ने कहा. "साथ ही साथ यह भी तुम्हारे लिए एक मनोरंजन का विषय सिद्ध होगा कि मुनि कैलानोस महान् विजेता सिकंदर को आत्मबल से झुकाने का निश्चय कर चुके हैं."

इस बार हेलेना के चौंकने की बारी थी. "यह आप ने क्या कहा?"

"मैं ने ठीक कहा," ओनेसिक्राइटस बोला. "इस में चौंकने की

क्या बात है?"

"आप पूछते हैं चौंकने की क्या बात है!" विस्मित स्वर में हेलेना ने कहा. "आज तक कोई फ़ौलाद को मोड़ सका है? मुझे भय है कहीं सम्मानित अतिथि का अपमान न हो जाए."

"हेलेना," ओनेसिक्राइटस मुसकराते हुए बोला, "यह तो तुम ने ग़लत कहा है. मनुष्य तपा कर फ़ौलाद को भी मोड़ लेता है."

हेलेना ने केवल चितायुक्त स्वर में इतना कहा, "लेकिन सिकंदर के रूप में यूनान ने जिस फ़ौलाद को जन्म दिया है, उसे तपाने के लिए ईंधन कहां से आएगा?"

इस का उत्तर ओनेसिक्राइटस के पास नहीं था. वह मुंह ताकता रहा. तभी हेलेना विचलित स्वर में बोली, "मुनि कैलानोस से कहिए मैं उन के साथ सिकंदर की सेवा में उपस्थित होने के लिए जाऊंगी."

अगले दिन सुबह की शांत बेला में सिकंदर के अस्थाई निवास के सामने दोनों दार्शनिक और यूनानी दार्शनिक की पत्नी हेलेना उपस्थित थे. भीतर सामंतों की एक अस्थाई सभा चल रही थी, जिस के बीच में जाना किसी के लिए भी संभव नहीं था.

कुछ देर बाद भीतर से महासेनापति परडीकस निकले. ओनेसिक्राइटस तथा हेलेना ने हाथ उठा कर उन का अभिवादन किया. परडीकस ने मुसकरा कर हेलेना के हाथ को चूमा. फिर उन्हों ने धीमे स्वर में कहा, "हेलेना, यह शृंगार पहले कभी देखने में नहीं आया. देखना, कहीं महान् सिकंदर पिघल न जाएं! यूनान को फिर ऐसा नेता नहीं मिलेगा."

हेलेना मुसकरा कर बोली, "मेरे साथ महामुनि कैलानोस का आत्मबल भी है. यदि महान् विजेता पिघलना पसंद नहीं करेंगे, तो उन्हें मेरी दासी को छोड़ना पड़ेगा."

"किसे, एथेना को?" परडीकस घे प्रश्न किया. "उस का तो निर्णय अभी अभी हो चुका है."

"क्या!" हेलेना चौंक पड़ी.

"एथेना को जीवित ही चिता पर जला दिया जाएगा," परडीकस ने कहा. "यही महान् सिकंदर का निश्चय है. संसार को विजय करने के लिए पहले आंतरिक अनुशासन ठीक रखना होगा."

परडीकस के अंतिम बोल ओनेसिक्राइटस और मुनि कैलानोस के कानों में भी पड़े. मुनि कैलानोस यद्यपि यूनानी भाषा को अच्छी तरह नहीं समझ पाते थे, लेकिन कुछ ठहर कर शब्दों का अस्पष्ट सा अर्थ निकालते हुए उन्हें भी अधिक देर नहीं लगी. उसी समय उन के विचार की पुष्टि ओनेसिक्राइटस ने कर दी. "एथेना को जीवित ही चिता पर जला दिया जाएगा!"

तभी भीतर से सिकंदर का प्रहरी बाहर आया. "दार्शनिक ओनेसिक्राइटस, उन की पत्नी हेलेना और दार्शनिक कैलानोस विश्वविजेता की सेवा में उपस्थित हो सकते हैं."

तीनों प्राणी हृदय में भीषण उहापोह लिए हुए सिकंदर के कक्ष में पहुंच गए. बाईं ओर एक ऊंचे सिंहासन पर सिकंदर दोनों हाथ हत्थों पर रखे बैठा था. बड़े बड़े सामंत सभा में उपस्थित थे. एथेना जड़ की भांति एक कोने में, सिकंदर के सामने, मुंह को दोनों हाथों से ढके खड़ी थी. यह दृश्य अद्भुत और रोमांचकारी था.

मुनि कैलानोस ने आशीष का हाथ ऊपर उठा कर यूनानाधीश के कल्याण की कामना प्रकट की. शेष दोनों ने अभिवादन किया.

सिकंदर हल्के हास्य से मुसकराया. "हेलेना, हम यूनान के सौंदर्य का अभिवादन करते हैं. ओनेसिक्राइटस, हमें आशा है कि इस बार तुम मूक बन कर नहीं आए हो. हमें मालूम है तुम दोनों मिल कर यूनान की प्रवासी सेनाओं के विचारों का नियंत्रण करते हो. हमें तुम दोनों पर गर्व है....और महामुनि कैलानोस, हम स्वीकार करते हैं कि भारतीय अध्यात्मवाद सचमुच मनोरंजक है."

तीनों व्यक्तियों ने सिर को ज़रा सा झुका कर शक्ति के देवता की अभ्यर्थना को स्वीकार किया. फिर हेलेना ने सिर उठा कर कहा, "महान् विजेता का यश सूर्य की किरणों की तरह समस्त संसार पर फैले. मैं अपनी दासी की मुक्ति चाहती हूं."

"यदि तुम ऐसा न चाहती, तो हमें आश्चर्य होता," सिकंदर ने उसी हास्य-मुद्रा से कहा. "हम ने निर्णय करते समय तुम्हारी इस इच्छा को ध्यान में रखा था. हमें खेद है कि वह असफल रही. जिस अनुशासन ने यूनान को एक अजेय सैनिक शक्ति बना दिया है, उस का नियंत्रण तुम्हारी इच्छा से बड़ा समझा गया. फिर भी तुम्हारी हानि नहीं होगी. यूनान का राजकोष तुम्हारी दासी का मूल्य चुकाएगा."

हेलेना ने होंठ काट लिए. अभी उस में इतनी क्षमता थी कि एथेना जैसी हज़ार दासियां खरीद सके. "सम्राट् का निर्णय उचित है," उस ने कहा. "किंतु किसी के प्राणों का मूल्य मुद्राओं में नहीं आंका जा सकता."

सिकंदर ने उस की ओर उंगली उठाते हुए कहा, "यह तुम कह रही हो, हेलेना, आश्चर्य है! ओनेसिक्राइटस, यह बात हम तुम्हारे मुंह से सुनने की आशा करते थे. भारतीय दर्शन का सब से अधिक प्रभाव तुम्हारे ऊपर पड़ा है."

ओनेसिक्राइटस ने फिर अपनी गरदन झुकाई. "महान् विजेता, अब धारा बदल गई है. मैं यह आग्रह करने के लिए उपस्थित हुआ था कि एथेना को अवश्य मृत्यु-दंड दिया जाए. किन्तु निर्णय मेरे आने से पूर्व ही हो चुका है."

सभी सामंत निर्वाक् और भौंचक्के बैठे थे. ओनेसिक्राइटस को सब लोग अच्छी तरह जानते थे. वह हाथों पर सरसों उगा कर दिखा देने का अभ्यस्त था. सब लोग उस की ओर प्रशंसा के भाव से ताक रहे थे. सिकंदर की दुर्दम्य प्रवृत्ति के सम्मुख यदि कोई युक्तियुक्त उत्तर देने वाला था, तो वह ओनेसिक्राइटस था.

"यह दूसरा आश्चर्य है! अब हमें इस धारा के बदल जाने का कारण जानने की उत्सुकता हो चली है," सिकंदर ने कहा.

ओनेसिक्राइटस स्पष्ट स्वर में बोला, "इस का कारण तीसरा आश्चर्य है, महान् एलेग्जेंडर. भारतीय दार्शनिक महामुनि कैलानोस इस बार आप को नत करने का निश्चय कर चुके हैं."

राजसभा स्तब्ध हो गई. यह स्पष्ट चुनौती थी. सिकंदर के माथे पर बल पड़ गए. उस ने तनिक क्रोध से ओनेसिक्राइटस की ओर देखा. "यदि आदरणीय कैलानोस के मुंह से इस बात की पुष्टि नहीं हुई तो, ओनेसिक्राइटस, तुम्हें राजदंड सहना होगा."

"मैं इस की पुष्टि करता हूं," मुनि कैलानोस ने निर्द्वंद्व स्वर से कहा. "संसार में एक ही बल है, जिस के सामने कोई शक्ति नहीं ठहर सकती. यूनान के नरपति का बल उस के सामने नगण्य है."

सिकंदर ने उत्तेजना से सिंहासन के हत्थे पर हाथ मारा. "ओह! काश कि इस आश्चर्य को अपनी आंखों से देखने के लिए विश्वगुरु यहां उपस्थित होते. यूनान के लोगों को एक अचंभा आप दिखाने जा रहे हैं!" फिर कुछ देर राजसभा में एक अपूर्व चुप्पी छाई रही. सिकंदर ने सिर उठा कर कुछ क्षण विचार करने के बाद कहा, "हम आप के साहस की प्रशंसा करते हैं, कैलानोस. किंतु अब भी यदि आप क्षमा मांगें, तो हम क्षमादान के लिए तैयार हैं. नहीं तो आप को वह चमत्कार सारे यूनानियों के सामने दिखाना होगा."

मुनि कैलानोस ने शांत स्वर से कहा, "यूनान के महान् विजेता, मेरे पास कोई चमत्कार नहीं है. मेरे पास मेरी शक्ति है, लेकिन उस का प्रयोग आप के लिए दुःखदायी होगा. मैं प्रार्थना करता हूं कि वृथा अभिमान को अपने मन में स्थान न दे कर महान् विजेता का गौरव क्षुद्र दासी के प्राणों पर दया की बूंदें बरसाए."

"हम इस प्रार्थना को अस्वीकार करते हैं. आप का स्वभाव बहुत दयापूर्ण है. आप पहले भी ऐसी ही एक प्रार्थना कर चुके हैं. हमें

कभी न कभी आप की अवमानना करनी ही पड़ती."

"मैं सत्रपों को इस का वचन दे चुका हूँ," मुनि कैलानोस ने कहा.

"किसी देश के हित के सामने किसी व्यक्ति के वचनों का कोई मूल्य नहीं होता. यदि हम केवल सिकंदर होते, तो हम आप के सामने झुक जाते. आप की दया और करुणा का सागर बहुत बड़ा है, महान् है, हम यह स्वीकार करते हैं. लेकिन हम सिकंदर नहीं हैं. हम यूनान हैं. यूनान अजेय है. उसे झुकाया नहीं जा सकता."

कैलानोस ने अपना संयम नहीं छोड़ा. "मैं ने सत्रपों को वचन दिया है कि यदि एथेना को प्राणदंड मिला, तो उस से पहले वह दंड मैं सहन करूंगा."

सिकंदर तड़प गया. "यह मूर्खता की सीमा है!" उस का स्वर उत्तेजित हो गया. "यह आत्मघात है. आप इस पर फिर से विचार करें."

ओनेसिक्राइटस ने हेलेना के कानों में कैलानोस के शब्दों का अर्थ कहा, तो वह चौंक कर लगभग चिल्ला उठी : "महामुनि कैलानोस, क्या स्वयं को नष्ट कर देना ही वह शक्ति है, जिस से आप विरोधियों को झुकाते हैं?"

मुनि कैलानोस ने सब लोगों की बातों को ध्यान के साथ सुना. सब के बाद में ओनेसिक्राइटस ने भर्राए हुए गले से कहा, "मित्र कैलानोस, आप अपने निश्चय को बदलिए. बस, मैं और क्या कहूँ?" मित्र के प्राणों की चिंता से आकुल मित्र के पास ज़बान से कहने के लिए केवल ये ही कुछ अनुरोध के स्वर थे.

मुनि कैलानोस की आंखें अज्ञात प्रेरणा से चमकीं. "यूनानाधीश, धर्म और देवताओं के पूजकों के पास यही अमोघ अस्त्र है. इस अस्त्र का नाम त्याग है. मनुष्य आत्मत्याग से मोक्ष पा सकता है. संसार की विजय-समृद्धि तो उस के सामने कुछ भी नहीं है." . . . ..

सिकंदर तीव्र स्वर में बोला, "हम अपने अतिथि को इस की अनुमति नहीं देंगे. यह नहीं होगा."

मुनि कैलानोस हंसे. "मनुष्य मनुष्य को परिग्रह रखने से रोक सकता है, त्याग करने से नहीं रोक सकता. मैं वही दंड प्रसन्नता के साथ सहन करूंगा, जो एथेना को उस की इच्छा के विरुद्ध दिया जाएगा. संभव है सम्राट इस में बाधा पहुंचाना चाहें. लेकिन एथेना से पहले शरीर त्याग करने का मेरा निश्चय है. यूनानाधीश की ओर से होने वाली बाधा इस निश्चय के सम्मान को घटा सकती है, स्वयं निश्चय को नहीं. यदि यूनानाधीश अपने अतिथि की इच्छापूर्ति सम्मान के साथ होने देना चाहते हैं, तो पहले मेरी जीवित चिता जलेगी."

चमत्कार की घोषणा सामने आ चुकी थी. सभी उपस्थित राजपुरुषों को केवल घोषणा से ही संतुष्टि हो चुकी थी. कोई उस का मूर्त रूप देखने का इच्छुक नहीं था. किंतु सिकंदर मुट्ठियां भींच रहा था. इतना उद्वेग उसे महावीर पौरव से लड़ते हुए भी नहीं हुआ था.

सब लोग चुप थे. मुनि कैलानोस ने कहा, "महान् विजेता मुझे जाने की अनुमति दें और स्वयं अपने निश्चय पर पुनः विचार करें."

सिकंदर चुप था. शायद वह सुन नहीं रहा था. मुनि कैलानोस ने फिर आशीष देने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया और वह अकेले कक्ष को छोड़ कर बाहर निकल गए.

उन के जाने के बाद ऐसा मालूम होता था कि सिकंदर की राजसभा जड़ हो गई थी. वहां बड़े बड़े वीर उपस्थित थे, जिन का दिल भयंकर से भयंकर युद्ध में भी नहीं दहला था. लेकिन आज उन के दिल भी दहल रहे थे. भारतीय योगी सब के ऊपर एक विचित्र प्रकार की मोहिनी छोड़ गया था.

अंत में सिकंदर ने सिर उठाया. वह यूनानी रमणी को लक्ष्य कर के बोला, "हेलेना, तुम ओनेसिक्राइटस को सहारा दे कर ले जाओ. हम

नहीं चाहते कि उस की आंखों के आंसू हमारे निश्चय को हिला दें."

ओनेसिक्राइटस ने सिर झुका लिया. उस की आंखें चू रही थीं. और एथेना?....वह अचेत हो चुकी थी.

उसी दिन दोपहर के समय :

ईरान के विशाल मैदान में फिर पहले की ही भांति यूनानी सेनाओं का जमघट जुटा. इस बार तेहरान के निवासियों का ठठ यूनानी सैनिकों द्वारा बनाई हुई बाड़ों को तोड़े दे रहा था. सिकंदर के छत्र के ठीक सामने लगभग सौ गज के अन्तर पर दो चिताएं तैयार थीं. उन में एक चिता चंदन की थी और उस में घी डाला जा रहा था.

कुछ समय बाद भारतीय दार्शनिक यूनानाधीश के सम्मुख आए. सिकंदर ने कहा, "महान् पुरुष, क्या आप ने अपने निश्चय को नहीं बदला?"

मुनि कैलानोस ने अभिमान के साथ अपनी आंखें ऊपर उठाईं. "महान् विजेता, यही प्रश्न मैं आप से पूछता हूं."

सिकंदर का मुंह उतर गया. पहली बार उस ने अपने स्वर में निराशा का अनुभव किया. "यदि हम मान-सम्मान का ध्यान न कर के आप को इस आत्मघात से रोक दें?"

मुनि कैलानोस ठठा कर हंसे. "कैलानोस का प्राण-त्याग इसी स्थान पर खड़े खड़े हो सकता है. भारतीय योग में इतनी सामर्थ्य है."

उसी समय एक अद्भुत कांड हो गया. न जाने किधर से ओनेसिक्राइटस झपटता हुआ आया और मुनि कैलानोस के गले से लिपट गया. "नहीं, नहीं!" वह चिल्लाया, "मेरे मित्र, यह नहीं होगा." और उस ने पास ही खड़े एक सैनिक की कमर में से खड्ग खींच लिया. उसी समय सिकंदर की तेज़ आवाज़ सुनाई दी : "सावधान!"

इस से पहले कि ओनेसिक्राइटस का खड्ग उसी के सिर पर गिर कर

उस का काम तमाम कर देता, दो सैनिकों की बलिष्ठ बाहुओं में उस के दोनों हाथ कस गए. बेचारा यूनानी दार्शनिक केवल विस्मय से भौंचक्का हुआ देखता रह गया.

सिकंदर के माथे पर बल पड़ गए. उस का दिमाग़ किसी दिशा में तेज़ी के साथ चल रहा था. उस ने मुसकरा कर हेलेना की ओर देखा और बोला, "हेलेना, क्या इसी प्रकार आत्मबल भौतिक बल को पराजित कर सकता है?"

अपने दर्शन के गर्व से सिर उठा कर हेलेना ने तिरस्कार के साथ भारतीय योगी को देखा. वह बोली, "महान् विजेता, इतिहास की आवश्यकताओं और विज्ञान की पराकाष्ठा के सम्मुख धर्म, देवताओं और देवताओं के पूजकों, सब को नष्ट होना है. इस मरणांतक संघर्ष में अपने को बचाने के लिए वे अपनी विचित्र विचित्र शक्तियों का प्रयोग करेंगे. हो सकता है कि भौतिक संसार इन शक्तियों के सम्मुख यदाकदा झुकता रहे, किंतु इतिहास की गति निश्चित् है. वह नहीं रुकेगी. यदि सम्राट अब भी क्षमादान देना चाहें, तो यह विज्ञान की पराजय नहीं होगी."

"नहीं!" सिकंदर ने अचल हो कर कहा.

बाजे बजने आरंभ हो गए. तेहरान-निवासियों के शोर और यूनानी वाद्यों के स्वर के बीच मुनि कैलानोस शांति के साथ चंदन की चिता पर जा बैठे.

लोगों ने देखा कि अपूर्व तेज से आलोकित भारतीय योगी चिता पर पालथी मार कर ध्यानपूर्वक बैठ गया. सिकंदर ने संकेत किया और दो यूनानी सैनिकों ने चिता में आग लगा दी. सत्रपों का शोर बाजों के भीषण स्वर में आकाश के मार्ग में ही रुक गया.

ज्वालाएं ऊपर उठीं, तेज़ी के साथ धधकीं और उन की लाल-पीली आभा के बीच दार्शनिक की अखंड मूर्ति धीरे धीरे गलने लगी. समस्त यूनानी, समस्त तेहरानी; क्या नारी क्या पुरुष, योग के इस

चमत्कार को आंखें फाड़ कर देखते रहे. किसी की आंखों में श्रद्धा थी, किसी की आंखों में करुणा थी, तो किसी की आंखें क्षोभ से पागलों की तरह फिर गई थीं. सब के सामने वह चिता थी, जहां भारत दूसरों के ऊपर करुणा का मेंह बरसा कर स्वयं अपने विचारों को लिए-दिए जल रहा था.

कुछ समय बाद एथेना को भी चिता की ओर ले जाया जाने लगा. वह इस समय सीधी थी, गंभीर थी, आंखें ऊपर उठी हुई थीं. उन में साहस था और वीरता का एक ऐसा अनोखा भाव था, जो बड़े से बड़े कष्ट को सहने की शक्ति देता है.

चिता के पास पहुंच कर वह रुकी और उस ने मुड़ कर यूनानाधीश के सम्मान में सिर झुकाया. उस के मुंह से तेज स्वर में निकला : "यूनान की जय!"

सहसा सिकंदर ने हाथ उठा दिया. सारी क्रियाएं जहां-की-तहां रुक गईं. यूनान की शक्ति के प्रतीक ने कहा, "ठहरो! अब इस की आवश्यकता नहीं रही. हम एथेना को क्षमा करते हैं."

मुनि कैलानोस की चिता अब भी धू धू कर के जल रही थी.

कवि का पाप

सातवीं शताब्दी के अंतिम चरण में गुजरात अपने वैभव के शिखर पर था. थोड़ी ही दूर दक्खिन के मैदानों में कल्याणी का शक्तिशाली राज्य था. गुजरात यदि सुकोमल, सुवासित पुष्पों का उद्यान था, तो कल्याणी के सोलह भट सोलह दिशाओं से उठते तूफ़ान की तरह अपनी निगाहें उस पर जमाए हुए थे. अनेक बार उस उद्यान पर उन सोलह तूफ़ानी भूपतियों ने आक्रमण किया था, किंतु उद्यान का अजेय माली जयशिखर कौशल से उद्यान की रक्षा कर लेता था. इस सुवासित उद्यान का सब से अधिक मनोहर पुष्प था जयशिखर की रानी रूपसुन्दरी का अप्रतिम सौंदर्य. जिस डाल पर यह पुष्प खिला था उसी से उत्पन्न एक तीखा कांटा था सूरपाल.

दीपावली को गुजरात की राजधानी पंचासुर लाखों दीपों से देदीप्यमान हो उठती थी. ऐसी ही एक दीपावली की रात्रि के प्रथम प्रहर में सूरपाल ने अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में राजमहल के दीपों की छटा निहारते हुए अपनी बहन और बहनोई को टोका और बोला, "पंचासुर की इस मनोरम छटा पर यदि कोई भावुक कवि कविता करे, तो?"

जयशिखर ने कहा, "कवियों का काम होता है तिल का ताड़ बनाना, और यदि वह कविता करते करते बहक गया, तो यह दीपावली यहीं रखी रह जाएगी और कल्पना के करोड़ों दीप जलने लगेंगे—है न?" वह रूपसुन्दरी की ओर देख कर मुसकराया.

रूपसुन्दरी ने मुसकराहट का उत्तर मोती चमका कर दिया, "यदि ऐसा कोई कवि हो, और इसी समय कविता करे, तो वे करोड़ों दीप बड़े दर्शनीय होंगे."

"तो फिर ले आऊं?" सूरपाल ने तत्परता से कहा.

"ओह!" आश्चर्य प्रकट करते हुए जयशिखर बोला, "मालूम होता है किन्हीं कवि महोदय को तुम ने प्रतीक्षा में बैठा रखा है!"

"बैठा क्या रखा है, कहिए कि रमते को पकड़ लिया है. परंतु कल्पना की इतनी ऊंची उड़ान नहीं देखी आज तक....अब स्वयं सुनिएगा. मैं ले ही आता हूँ."

थोड़ी देर बाद सूरपाल एक श्वेत वस्त्रधारी युवक को अपने साथ ले कर आता दिखाई दिया. जयशिखर और रूपसुन्दरी दोनों ने उसे देखा. लम्बे बाल, सुव्यवस्थित ढंग से कढ़े हुए, पीठ पर पड़े थे. वस्त्र कसे हुए थे. कमरबंद केसरिया रंग का था. कवि के मुख पर सौम्यता थी और आँखें साफ़ कौड़ियों की भांति चमक रही थीं. उस ने राजा-रानी के सम्मुख सिर झुकाया और एक कवित्त पढ़ा, जिस का आशय इस प्रकार था :

"पंचासुर के प्रांगण में रजनी सोलह शृंगार कर के आई है, अपने घाघरे में व्योम के सितारे टाँक लाई है, चारों ओर छमाछम नाचती फिर रही है. कवि जिधर देखता है, उधर ज्योति का साम्राज्य है. राव जयशिखर तक को वह नहीं पहचान पा रहा है, क्यों कि इस विराट ज्योति-पुंज ने राव की समरूप कीर्त्ति को छिपाने का षड्यंत्र रचा है. परंतु, लो, षड्यंत्र अंत में असफल हो गया!"

कवित्त के शब्द-संयोजन से झूम कर राव जयशिखर ने कहा, "सुदंर! कवि, अति सुदंर! किंतु देखो, रानी तो तुम्हारी पहचान में भलीभांति आ रही है न?"

रूपसुदंरी लज्जामिश्रित हास्य बिखेरते हुए बोली, "दीपक तले जो अंधेरा होता है, मैं उसी का प्रतिरूप हूँ, कवि. मेरे लिए कविता न करना, नहीं तो कविता ही कुंठित हो जाएगी."

सूरपाल भोलेपन से ताली बजा कर बच्चों की भांति हंसा.

कवि ने अपने नेत्रों की स्पष्ट कौड़ियां ऊपर कीं और उस की दृष्टि दो क्षणों के लिए तीव्र हो कर रूपसुंदरी के सौंदर्य पर टिक गई. फिर उस ने अपने दाएं-बाएं फैले हुए दीपों की असंख्य पंक्तियों को देखा. कुछ पल चुप्पी में बीते. जयशिखर आगे बढ़ कर उस का कंधा हिलाने ही वाला था कि धीरे धीरे कवि के मुख से भाव साकार हो कर निकलने लगे :

"ओ तमिस्रा, अपनी इस दीपमालिका को पंचासुर से दूर ले जा. देखती नहीं, पंचासुर के राजमहल में एक ऐसा ज्योतिपुंज जल रहा है, जो तेरी लक्ष ज्योति के एकत्र समूह को लजा रहा है! सावधान, शलभों, इस ज्योतिपुंज की ओर दृष्टि न उठाना. जिस प्रकार भगवान् कृष्ण ने अपना विराट रूप दिखा कर अर्जुन को संसार के आवागमन का भान कराया था, उसी प्रकार यह ज्योतिपुंज मुझे अपना विराट रूप दिखा रहा है. इस के सम्मुख आ कर बड़े बड़े योद्धा, भटट भस्म हो रहे हैं, जिस में समस्त गुजरात और पंचासुर अपूर्व चमक के साथ अनंत दीपावली मना रहे हैं...."

और सहसा ही कवि ने भावना की मादकता से चौंक कर फिर रानी की ओर दृष्टि फेरी. फिर उस का सिर पूर्ववत् नत् हो गया.

जयशिखर ने अपने कंधे पर किसी कोमल दबाव का अनुभव किया. वह रानी रूपसुंदरी का करतल था, जो अपनी स्वामिनी की काव्यजनित प्रशंसा के कारण विचलित होने के भय से स्नेह का आश्रय टटोल रहा था. उस कोमल दबाव से पुलकित हो कर जयशिखर ने कहा, "कवि, कहां के रहने वाले हो? क्या नाम है?"

"मालवा का रहने वाला हूं, देव. मेरा नाम भुवन है."

"हम तुम्हारी प्रतिभा से प्रसन्न हैं. गुजरात में रहोगे?"

"राज्याश्रय के लिए धन्यवाद, देव. गुजराज में जो मिला उसे सारे भारत को दूंगा."

"हमारी समझ में नहीं आता हम तुम्हें कितना पुरस्कार दें! अपनी कल्पना में हमारी कुछ सहायता करो, कवि."

"देव क्षमा करें, मेरे कवि को अपने काव्य की प्रतिमा मिल गई है. अन्य पुरस्कार की इच्छा नहीं है."

"फिर भी?"

"दोबारा पंचासुर में आऊंगा, तब के लिए इस दानेच्छा को संजो रखिए, देव. अब नहीं लूंगा, मेरी प्रतिमा धूमिल हो जाएगी."

"अच्छा, हम इस बात को याद रखेंगे. सूरपाल, कवि को दीपावली का मिष्ठान्न खिलाओ."

"किंतु दोबारा पंचासुर अवश्य आना. मेरी भी कुछ देने की इच्छा है," रूपसुन्दरी ने अपनी मधुर वाणी में कहा.

"अवश्य आऊंगा, देवि," कवि ने कहा. "आप की वाणी फिर से सुनने का मोह रहेगा." और उस ने एक दृष्टि रूपसुंदरी के मुसकराते हुए मुख पर फिर डाली.

सूरपाल ने स्नेह से कवि भुवन के कंधे पर हाथ रखा. सजग हो कर वह उस के साथ राजभवन के अंतरीय भाग की ओर चलने लगा.

कवि को खिलापिला कर सूरपाल ने उस के विश्राम का प्रबंध स्वयं किया. रात भर वह उस के साथ रहा और उस के काव्य का आनन्द लेता रहा. सुबह को जब वह बिदा होने लगा, तो सूरपाल उसे पंचासुर की चारदीवारी के बाहर चौड़ी खाई के पुल के पार तक छोड़ कर आया. जाते समय मित्रता के चिह्नस्वरूप उस ने उसे अपना अश्व दिया.

सूरपाल के अश्व की पीठ पर दिन बिताता हुआ यह रमता कवि अनेक राजदरबारों में पहुंचा और हीरेमोतियों के पुरस्कार पाता हुआ वह अपने काव्य की प्रतिमा को अलंकार पहनाता रहा. इसी प्रकार दस महीने बीत गए. ग्यारहवें मास में वह कल्याणी के राजदरबार में पहुंचा, और उस समय पहुंचा, जब कल्याणी के अधिपति, सोलह भटों के नायक, भुवदराज के सम्मुख राजकवि कामराज अपनी कविता का पाठ कर रहा था. भट्टराज चंद ने राजा को कवि के आगमन की सूचना दी.

"कोई कवि आया है!" भुवदराज ठठा कर हंसता हुआ बोला." हम तो समझे थे कि कामराज तक आ कर काव्यकला समाप्त हो गई है. बुलाओ, बुलाओ, इस से हमारे कामराज का मनोरंजन होगा."

कामराज होंठों ही होंठों में मुसकराया. उस ने राजा के आसपास बैठे अनेक भटों की ओर गर्व से देखा. वे सब मुसकरा रहे थे.

चंद कवि भुवन को राजसभा में ले आया. आते ही कवि ने राजा की प्रशंसा में एक सामान्य कवित्त पढ़ा. कवित्त गंठा हुआ था. राजा के मुंह से निकला, "सुन्दर!"

"अच्छा है. चलता हुआ है," कामराज ने कहा.

कवि भुवन ने एक ही नजर कामराज पर डाली और वह सब कुछ समझ गया. उस ने हंस कर एक दूसरा भाव दर्शाते हुए कवित्त पढ़ा :

"जिस प्रकार बिना सूर्य को देखे सूर्यमुखी नहीं खिलती, बिना स्वाति बूंद के पपीहे की प्यास नहीं बुझती, बिना मलय के पवन सुवासित नहीं होता, बिना वर्षा के कोयल की वाणी में रस नहीं आता, बिना जल के धान नहीं उगता—उसी प्रकार, हे कवि, बिना सौंदर्यमयी का दर्शन किए रसराज भटकते रहते हैं."

अपने स्वभाव के अनुसार भुवदराज ठहाका लगा कर हंसे. "लो जी, कामराज, आप तो रसराज-श्रृंगार में अपना सानी नहीं रखते. इस अत्यन्त रसीले कवित्त का उत्तर दो, तो पता चले कि तुम्हारी सौंदर्यमयी अधिक सुन्दर है या इन कविराज की."

"क्षमा करें, महाराज, मेरी काव्य-प्रतिमा तो स्वयं महाराज की पट्टरानी हैं. 'कविराज' की 'सौंदर्यमयी' कौन है यही पहले मालूम करने की बात है," कामराज ने व्यंग्य से मुसकराते हुए कहा.

"प्रमाण?" निर्लिप्त भाव से भौंह ऊंची उठाते हुए महाराज ने कहा.

उसी समय कामराज ने एक कवित्त पढ़ा. भट्टराज चंद, द्वंद्व और वैद्य ने 'सुन्दर' कह कर कवित्त के रस का सम्मान किया.

"सुन्दर," महाराज भुवदराज ने कहा. "अब, अभ्यागत कवि,

आप भी अपना कवित्त पढ़िए."

कवि भुवन ने कहा, "महाराज, काव्य में प्रतियोगिता उचित नहीं. ये तो प्रत्येक कवि के मन के भाव हैं. भाव वस्तुजगत् से स्वतंत्र नहीं हैं. इसलिए कविता का हीन होना कवि का दोष नहीं होता."

"हमारी आज्ञा है," भुवदराज ने कहा.

कवि भुवन ने राजा के भटों की ओर देखा. भट्ट चंद ने कहा, "हाँ, कविराज, आप के ऊपर आप की सौंदर्यमयी का कैसा प्रभाव पड़ा इस का अनुमान बिना आप के कवित्त पढ़े हमें कैसे होगा?"

और कवि ने बरबस वही कवित्त पढ़ा, जो रूपसुन्दरी को देखते ही उस के मुंह से स्वयमेव निकल गया था. कवित्त समाप्त होते न होते भुवदराज और उन के भट्ट वाह वाह कर उठे. वैद्य भट्ट ने कहा, "वाह, कविराज! आप की कल्पना निश्चय ही ऊंची है..."

भुवदराज ने कहा. "मानना ही पड़ेगा...."

किंतु कामराज जल उठा. तड़प कर बोला, "कल्याणी की पट्टरानी से भी सुदंर हो ऐसी कौन है, महाराज, पहले इन कविराज से यह तो पूछें."

"ठीक है," भुवदराज ने कहा. "बताओ, कविराज!"

कवि भुवन ने कहा, "काव्य की श्रेष्ठता के लिए काव्य ही प्रमाण होता है, महाराज."

"मगर हम जानना चाहते हैं, आप को बताना होगा," भुवदराज ने सख्ती से कहा. "कौन है वह जिस से आप ने अपने शृंगार-काव्य की प्रेरणा ग्रहण की है?"

"महागुजरात की पट्टरानी रूपसुदंरी," कवि भुवन ने सरल भाव से उत्तर दिया.

"ओह! गुजरात की पट्टरानी रूपसुदंरी! रूपसुदंरी!" भुवदराज धीमे से कुछ याद करता हुआ बोला. फिर सहसा ही वह जोरों से चीख पड़ा. "भट्टराज, कविराज को पुरस्कार दे कर बिदा करो. सेनापति मीर को बुलाओ. गुजरात पर आक्रमण होगा. रूपसुन्दरी हमारी अंकशायिनी

बनेगी. इस बार यदि गुजरात जय न हुआ, तो मैं अपने सोलह के सोलह भटों के सिर स्वयं अपने हाथ से काट डालूंगा!"

पल भर में ही कल्याणी में सनसनी सी फैल गई. तेजी के साथ लाल लोहा पीटा जाने लगा. संदेशवाहक इधर से उधर दौड़ने लगे. कल्याणी राज्य का हर कारीगर दिन-रात, सोलह सोलह, अठारह अठारह घंटे जुटा रहने लगा. मारू बाजे बजने लगे.

हीरे-मोतियों के पुरस्कार पा कर कवि भुवन दो दिन तक कल्याणी में घूमता रहा. उस ने भीषण तमस में प्रलय के बादलों को जल लेते देखा और जब आकाश में घुप अंधेरा छाने लगा, तो उस ने सूरपाल के दिए अश्व की बाग पंचासुर की दिशा में मोड़ दी....न खाना न पीना, दिन रात दौड़ना....तीन दिन बाद पंचासुर की सड़कों पर गुजरात के सैनिकों ने सूरपाल के अश्व को पहचाना, जिस पर क्षीणकाय, मृतप्राय: कवि भुवन अचेत पड़ा था. निरुद्देश्य घूमते हुए अश्व को शीघ्र ही राज-भवन मे पहुंचाया गया. राजवैद्य ने कवि भुवन की दवादारू की.

चेतना आते ही कवि भुवन ने सूरपाल को अपने ऊपर झुका देखा. वह कष्ट से बोला, "कल्याणी से टिड्डी दल की भांति सैन्द-समूह इधर आ रहा है....! चारदीवारी बंद करो....तैयार हो जाओ! एक कवि ने अपने ही हाथों अपने काव्य की वाटिका उजाड़ डाली है ...! ओ मेरी वाटिका के नन्हे नन्हे प्राणियों, भूल से कवि ने सोए हुए झंझावात को जगा दिया है... तुम्हारे घोंसले, तुम्हारे ये छोटे-छोटे निवास कितने अरक्षित हैं! आज इस वाटिका में कितनी चहलपहल है! कल को यहां श्मशान की शांति होगी...." और उस ने एक ही सांस में पूरी कथा कह दी.

सूरपाल ने कहा, "चिंता न करो, मित्र. कल्याणी से तो हमारा जन्म का वैर है. हमें तो अपने बल के सहारे जीना है. तुम इस से अपना मन छोटा न करो....मैं महाराज को बुलाता हूं. वही तुम्हें सांत्वना देंगे."

कुछ ही देर में जयशिखर आ गया. सूरपाल से उस ने सब सुन

था. प्रसन्न हो कर उस ने सेनापति को बुला कर उचित आदेश दिए थे. फिर कवि भुवन के पास आ कर उस ने उस के सिर पर हाथ रखा और बोला, "कवि, वीरता को परीक्षण का अवसर न मिले, तो वह कायरता में बदल जाती है. संपत्ति की रक्षा भय से नहीं, साहस से की जाती है. हम तो सब कुछ गंवाने को तैयार बैठे हैं, कोई लेने का साहस तो करे!"

पंचासुर में युद्ध की तैयारियां होने लगीं. प्राचीर पर बड़े बड़े पत्थर इकट्ठे किए जाने लगे. खाड़े बनने लगे. अभ्यास होने लगे.

दूसरे ही दिन सूरपाल के साथ जयशिखर की सेवा में उपस्थित हो कर कवि भुवन ने कहा, "देव, मेरी इच्छित वस्तु का पुरस्कार देना शेष है अभी आप को."

"मांगो," जयशिखर ने हंस कर कहा.

"मुझे भी एक तलवार चाहिए," कवि ने कहा.

"तुम्हें! तुम तो हमारे अतिथि हो, परदेसी हो."

"दीजिए, देव, नहीं तो परिताप के मारे मैं वैसे ही मर जाऊंगा."

"अच्छी बात है. सूरपाल, उत्तरी द्वार का सैन्य-संचालन कवि भुवन करेंगे और तुम सहायता पर रहोगे."

दस दिन बाद महाविनाश का पहला समाचार मिला. कल्याणी की सेनाओं ने पंचासुर को चारों ओर से घेर लिया था. कल्याणी का दूत युद्ध का भय दिखा कर पंचासुर का सम्मान छीनने का संदेश ले कर आया और जयशिखर ने अतीव शांतिमय मुद्रा के साथ उस के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "भुवदराज से जा कर कहो, जलपात्र ले कर रूपसुन्दरी के चरण धोने के लिए आ जाएं, एक कटाक्ष तो बदले में मिल ही जाएगा!"

सुन कर भुवदराज के सोलहों भटों ने मूंछें चढ़ाईं. अगले दिन की पहली किरण के साथ रणभेरी बज उठी. भट्टराज चंद और द्वंद्व भुवदराज की दो भुजाएं थीं. उन्हों ने उत्तरी द्वार के रक्षकों पर तीरों की वर्षा की. कवि भुवन ने बुर्जी के खंभे की ओट से स्थिति देखी और उस के मुंह से निकला : "जय गुजरात!"

बावन दिनों तक पंचासुर 'जय गुजरात' के गगनभेदी नाद से गूंजता रहा. गुजरात के धनुर्धरों ने आत्मविनाश के बल पर ही आगे बढ़ते हुए कल्याणी के दुर्दान्त सैनिकों को रोके रखा. तीरों के निशाने समाप्त नहीं हुए, तीर समाप्त हो गए. भंडारों के फ़रशों पर चींटियां रेंगने लगीं. पंचासुर के बच्चे और बूढ़े भूख से बिलबिलाने लगे—और जवान? उन्हों ने नरपति जयशिखर की ओर निहारा : "क्या आज्ञा है?"

"फाटक खोल दो!" जयशिखर की आज्ञा चारों दरवाज़ों पर पहुंच गई. प्राचीर की सेना उद्यान की रविशों पर आ गई. चारों ओर केसरिया ही केसरिया दिखाई पड़ने लगा. प्रमुख सेनानायकों की गोष्ठी हुई.

सभी सेनानायकों ने सूरपाल को समझाबुझा कर इस के लिए तैयार किया कि वह रूपसुन्दरी को ले कर सुरंग के द्वारा पंचासुर से बाहर निकल जाए. जिस मूल कारण से सूरपाल को इस के लिए तत्पर होना पड़ा वह सभी पर प्रकट हो गया. वह निकट भविष्य में ही मामा बनने वाला था. भावी भांजे की रक्षा के लिए, जयशिखर के वंशदीप के लिए, उस ने जलभरी आंखों से कायरता के मार्ग को अपनाया.

सुरंग के द्वार पर कवि भुवन ने अपनी काव्य-प्रतिमा के फिर एक बार दर्शन किए. फिर वह बोला, "आप ने इस अधम कवि को कुछ देने की इच्छा प्रकट की थी."

"मांगो, कवि," रूपसुन्दरी ने सजल नेत्रों से उसे देख कर कहा.

"मैं जानता हूं मुझे मांगने का अधिकार नहीं है. किंतु आप के दान की महिमा को नहीं घटाऊंगा. मैं ने भावी भूपति को उद्यान का राज्य उजाड़ कर बन का राज दिया है. मेरे इस पाप की स्मृति में उस का नाम बनराज रखा जाए, यही मेरी मांग है, देवि."

"निश्चिन्त रहो, कवि," रूपसुन्दरी ने कहा. "पुत्र हुआ, तो वह बनराज के नाम से पुकारा जाएगा, पुत्री हुई तो बनदेवी कहलाएगी. युगोंयुगों तक तुम्हारा काव्य जीता रहे." फिर उस ने अपने नेत्रों का जल

पोंछ कर कवि को स्पष्ट दृष्टि से एक बार निहारा, और सूरपाल से कहा, "चलो, भैया. कायर बन कर वंश की रक्षा करें."

सुरंग की राह बाहर निकल कर सूरपाल ने रूपसुंदरी को भीलों के सरदार के पास ले जा कर राजा जयशिखर की इच्छा कह सुनाई. भीलों की पंचायत हुई. गरमागरम वादविवाद हुआ. किंतु वीर भीलों ने अंत में निश्चय किया: चाहे काल ही स्वयं रानी के रूप में क्यों न हो, वे शरणागत को शरण देंगे.

इस सब काम से निबट कर सूरपाल ने रूपसुन्दरी से विदा चाही. "बहन, कल फिर आऊंगा, राजा को साथ ले कर."

रूपसुन्दरी को रोते छोड़ सूरपाल जल्दी जल्दी सुरंग की राह फिर वापस राजमहल में पहुंचा. चोर दरवाजे से भीतर आ कर उस ने देखा कि सारा महल, सारा पंचासुर धू धू कर के जल रहा है. सर्वत्र चीत्कार और ज्वालाओं की चटख् व्याप्त हो रही हैं. कहीं कोई जीवित प्राणी घूमता-फिरता दिखाई नहीं देता. और तभी सहसा एक खंभे के सहारे एक थकीहारी सी मानवमूर्त्ति को देख कर उस ने अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखा. उस मानवमूर्त्ति के मुख पर ज्वालाओं का प्रकाश नृत्य कर रहा था.

"कौन? कवि भुवन!" आश्चर्य से चीख् कर सूरपाल बोला.

"हाँ," कवि ने कहा. "मै ही हूँ." उस ने अपनी छाती पर रखा हाथ और भी दबा कर खांसा, मुंह में कुछ अटक गया.

"महाराज कहां हैं?"

"वीरगति पा गए," कवि ने कहा. वह कुछ रुका. फिर अटकते हुए शब्दों में बोला. "तुम कौन हो?"

"मैं? मुझे नहीं पहचानते? मैं सूरपाल हूं."

"भैया, सूरपाल," कवि ने सिर कंधे से टिका कर आंखें बन्द कीं, "महाराज बहुत वीरता से लड़े. भट्टराज चंद और द्वंद्व उन के हाथों से मारे गए. भट वैद्य ने उन पर पीछे से वार किया....मैं उस से जूझ

गया. महाराज गिर कर स्वर्ग सिधारे. वैद्य बहुत बली था, भैया. मैं उसे नहीं जीत पाया. उस की और मेरी तलवारें एकदूसरे की छाती से एक ही समय में पार हो गईं....!"

सूरपाल झपट कर उस की छाती टटोलने लगा, "मुझे दिखाओ, मैं घाव का अभी प्रबन्ध करता हूं...."

"कोई लाभ नहीं," कवि ने उसे हाथ से हटाया. "समय नहीं रहा. ज्ञान मत खोना. अच्छा, जान....मत खोना. मेरे बनराज के लिए मत खोना...लौट जाना...भैया, सूरपाल....तुम हो न?"

"हां, हां, यहीं हूं," सूरपाल ने कहा.

"राजमहल की सारी वीरांगनाएं सती हो गईं," कवि ने पीड़ा से कराहते हुए कहा. "पंचासुर की रविशों पर इस समय लूटमार और बलात्कार का घटनाएं घटित हो रही हैं! ज्वालाएं एकाकार हो रही हैं....! तुम्हें याद है न वह कवित्त?....जरूर याद होगा....लक्ष दीप एकाकार हो गए हैं. ज्योतिपुंज का विराट रूप साकार हो गया है.... असंख्य शलभों के जलने से इस विराट दीपशिखा की ज्योति तीव्र हो-हो कर आकाश चूम रही है....! बड़े बड़े योद्धा और भट्ट इस में भस्म हो गए हैं....कवि के गुजरात का हृदय अपूर्व चमकदमक के साथ अनंत दीपावली मना रहा है....!

रक्त का एक उबाल तेज खांसी के रूप में सहसा कवि के मुख से निकल कर दूर फ़रश पर फैल गया और वह निश्चेष्ट हो कर फ़रश पर गिर पड़ा. अस्पष्ट ध्वनि के रूप में उस के मुंह से निकला: "जय गुजरात....! जय बनराज....!"

पचास वर्ष बाद कवि की यही अंतिम वाणी सारे गुजरात में गूंजती सुनाई दी.

★

प्रणय की भीख

जहांगीर के अंतिम कुचक्र ने जब शेर अफ़गन का अंत कर दिया, तो उस ने मेहरुन्निसा को बर्दवान से बुला भेजा. महमिल में अधलेटी मेहर बर्दवान से आगरा तक भीतर और बाहर हिचकोले खाती चली आई. किंतु जब तक वह आगरा पहुंची, तब तक जहांगीर के प्रणयलोलुप मन पर एक उद्दाम अंतर्द्वन्द्व का कुहासा छा चुका था. जिस ने तीन बार अपनी वीरता के बल पर अनायास टूट पड़ने वाले मौत के राक्षस को खुले हाथों पछाड़ दिया था, क्या उस शेर अफ़गन को नीचतापूर्वक घेर कर तीरों और बन्दूकों के द्वारा मार देने मात्र से उस के प्रणय की राह खुल गई? क्या इस अमिट कलंक को अपने माथे पर ले कर वह उस शेर की शेरनी से अपना प्रेम निवेदन कर सकेगा? इस हालत में क्या उस की शहंशाहियत एक हठी प्रेमी की स्नेहतप्त मुद्रा ले कर मेहरुन्निसा के सामने खड़ी हो सकेगी? अपने समस्त पूर्वप्रणय की स्मृतियां संजो कर भी क्या मेहरुन्निसा अपने अंतर्मन में जहांगीर को शेर अफ़गन के समक्ष रख सकेगी? यदि नहीं, तो आगरा और बर्दवान का अंतर आज भी उतना ही है, जितना पहले था. इस अंतर को समाप्त करने के लिए मेहरुन्निसा को यह जानना ही होगा कि जहांगीर जहांगीर है, संसार को परास्त करने वाला है, और शेर अफ़गन की गर्विता विधवा उस से प्रणय की भीख मांग सकती है, पूर्व स्मृतियों के आधार पर उस का दावा नहीं कर सकती.

जहांगीर की मेहरबानियों के बिना मेहरुन्निसा कितनी दीन-दुर्बल है यह जताने के लिए जहाँगीर ने मेहर को बंद करने वाले पिंजरे की सलाखों पर से सोने का पानी तक उतरवा डाला. उस की तथा उस की दासियों की गुज़रबसर के लिए केवल चौदह आना प्रति दिन शाही खज़ाने से देना तय हुआ. यह आर्थिक शिकंजा कस कर वह उस दिन का स्वप्न

देखने लगा, जब जगह जगह पेबंद लगे, मोटे-झोटे वस्त्रों में मेहरुन्निसा उस के हुजूर में आएगी और उस के दामन को अपने कांपते हुए होंठों से चूम कर, आंखों में पानी भर कर, उस से उन स्मृतियों की भीख मांगेगी, जिन्हें शेर अफ़गन के अस्तित्व ने ढांक दिया था.

इस प्रकार मेहरुन्निसा को ज़ंग लगे पिंजरे में बंद कर के स्वर्णसेवी प्रणयी ने चार साल बिता दिए. किंतु ये चार साल उस के स्वास्थ्य के लिए बहुत बुरे बीते. उस का खोया-खोयापन, उस की विक्षिप्तता, उस का अंतर्दाह किसी से छिपे न रहे. इस दुःखद अवस्था को समाप्त करने के लिए सब से पहला पग उठाया मल्का ज़मानी रुकिया बेगम ने, जो जहांगीर की सौतेली मां थी और उसे अपनी अन्य माताओं से अधिक प्रिय थी....

एक रात को पूर्णमासी का चांद खिला हुआ था और जहांगीर केवल दो स्त्री-सैनिकों की पहरेदारी में बुर्ज पर खड़ा यमुना के जल को निर्निमेष नेत्रों से देख रहा था. तभी उस के कानों में स्वर पड़ा : "शहंशाहे आलम के दिल पर फ़रिश्तों की मेहर हो..."

जहांगीर ने गरदन घुमा कर देखा. मल्का ज़मानी थी. उस ने कहा, "हम आदाब बजा लाते हैं, अम्मी जान." और वह फिर नज़र फिरा कर यमुना के जल को देखने लगा.

"आदाब तसलीम," मल्का ज़मानी ने कहा. "आज शहंशाहे आलम को यमुना के पानी में ऐसा क्या दिखाई दे रहा है, जिस में इतने व्यस्त हैं?"

"हम देख रहे हैं कि यमुना के काले पानी में चांद का चेहरा कितना काला पड़ गया है!" जहांगीर ने उत्तर दिया. "शाही किले की तड़क-भड़क को देख कर वह कांप रहा है."

"शहंशाहे आलम को वहम हो गया है," मल्का ज़मानी ने कहा. "यमुना में जो कांपता दिखाई पड़ रहा है वह केवल चांद का प्रतिबिम्ब है. शहंशाहे आलम चांद की शान को देखना चाहते हैं, तो नज़र ऊपर

उठाएं. वह धन्य हो जाएगा."

जहांगीर की मुद्रा सहसा ही कड़ी हो गई. कसे हुए स्वर में उस ने पूछा," रात के इस वक्त मल्का ज़मानी हम से क्या कहने आई हैं?"

"यह याद दिलाने, शहंशाहे आलम, कि दिल के साथ और ज्यादा ज़बरदस्ती न कीजिए. अपनी सेहत की ओर ध्यान दीजिए. चांद का स्वभाव दिल को ठंढक पहुँचाना है. उसे देख कर दिल जलाने से शहंशाहे आलम खुद अपने आप को खो बैठेंगे. ज़िद को छोड़ दीजिए. मेहर को गले लगाईए. उस के नूर से यह सारा किला जगमगा उठेगा."

जहांगीर फीकी हंसी हंसा. "मल्का ज़मानी," उस ने कहा, "आप हमारे दिल की बात जानती हैं. आप जानती हैं कि मेहर ने हमारे दिल को कितनी तकलीफ़ पहुँचाई है. एक वक्त था कि हम ने उसे अपनी जिन्दगी की सब से बड़ी चाह समझा था. स्वर्गीय शहंशाह ने उसे हम से छीन कर ग़ैर को सौंप दिया. हम ने समझा कि मिट्टी में दब कर भी हमारी मुहब्बत का चिराग़ उस के दिल में जलता रहेगा. सत्ता हाथ में आने पर हम ने एक साधारण प्रेमी की तरह उस के पास अपनी मुहब्बत का पैग़ाम भेजा और बदले में मिली हमें एक बेमुरौवत हंसी. एक मामूली सी रंगीन चिड़िया की तरह वह एक मज़बूत दिखाई देने वाले दरख्त की सब से ऊंची शाख़ पर बैठी मस्त हाथी को चिढ़ाती रही. बहुत ठीक, उस हाथी ने क्रुद्ध हो कर उस दरख्त को जड़ समेत उखाड़ फेंका और चिड़िया को पत्थरों के एक पिंजरे में बन्द कर दिया. अब हम देखना चाहते हैं कि वह रंगीन चिड़िया उस पिंजरे में कितने ऊंचे उड़ती है."

"मुझे मालूम है, शहंशाहे आलम," मल्का ज़मानी ने कहा. "यह भी मालूम है कि उस मज़बूत दरख्त को उखाड़ फेंकने में उस मस्त हाथी की सूंड में कितने ज़ख्म लगे हैं, देखने वालों ने कितनी धूल उस के ऊपर उड़ाई है, और वह भीतर से भी कितना चुटीला हो गया है. लेकिन यह मस्त हाथी जब बहुत छोटा बच्चा था, तब उस रंगीन चिड़िया के साथ खूब खेला करता था. जिंदगी भर दोनों साथ रहेंगे यह वचन भी उन्हों

ने आपस में लिया-दिया था. ये सब बातें भी भूलने की थोड़े ही हैं."

"ठीक है, अम्मी जान," एक लम्बी सांस छोड़ कर जहांगीर ने कहा. "हम उन जख्मों और चोटों से इनकार नहीं करते. हमारी मुहब्बत ने जोश मारा और हम ने वह दरख्त उखाड़ फेंका....और जब चिड़िया हमारी कैद में आ गई, तो हम ने महसूस किया कि वह मुहब्बत नहीं थी. वह हमारी शहंशाहियत का तक़ाज़ा था. हम हिन्दुस्तान के शहंशाह हैं. हम जिस चीज को चाहें वह हमारे कदमों में होनी चाहिए. यह सोचना हमारा काम है कि हम उसे उठाएं या न उठाएं. अगर मेहर को बचपन में कुछ लिए-दिए जाने का दावा है, तो वह करे न दरखास्त हमारे रूबरू आ कर. हम उस की प्रार्थना पर विचार करेंगे."

"जो नारी प्रेम की प्रार्थना ले कर स्वयं पुरुष के पास आए, क्या उसे शहंशाहे आलम अपनी मलका बनाना पसंद करेंगे? फिर कौन सा स्वाभिमान उस के भीतर रह जाएगा, जिस पर शहंशाहे आलम को संसार की श्रेष्ठ सुंदरी का पति होने का गर्व होगा?" मलका जमानी ने पूछा.

जहांगीर का स्वर तीव्र हो गया. "शहंशाहे हिन्दुस्तान के आगे हिन्दुस्तान का हर फ़रिश्ता तीन बार जमीन छू कर कोरनिश करता है. हिन्दुस्तान के घमंडी से-घमंडी आदमी का सिर उस के आगे झुकता है. हमारे सामने आ कर कोई स्वाभिमानी सिर नीचा करे, तो क्या इस के ये माने होंगे कि उस का स्वाभिमान चला गया? आप कभी कभी कैसी बच्चों जैसी बातें करने लगती हैं, मलका जमानी! हमारी शहंशाहियत इस तरह की बातें सुनने की आदी नहीं. हम कुछ देर अकेले रहना चाहते हैं."

मलका जमानी ने तनिक गरदन झुका कर शाही रुतबे का अदब किया और होंठ दबा कर बुर्ज के बाहर निकल गई. उस के सामने जहांगीर कभी इतना आपे से बाहर नहीं हुआ था. आज अपनी शहंशा-

हियत के गर्व में उस ने मल्का ज़मानी का भी अनादर कर डाला था. तब इतना गर्व आत्माभिमानिनी मेहर कैसे ओट पाएगी ? यदि नहीं ओट पाएगी, तो शहंशाहियत के भीतर लगा यह घुन कैसे दूर होगा?

बीते हुए चार वर्षों में जहांगीर ने एक बार भी शाही हरम के उस भाग की ओर मुंह नहीं किया था, जिसे मेहरुन्निसा को रहने के लिए दिया गया था. शहंशाह अकबर के ज़माने में वह स्थान नीचे दरजे की बांदियों के रहने के लिए बनाया गया था. स्थान अलगथलग और अंधकारपूर्ण था, दीवारें पुरानी पड़ गई थीं और उन में कीड़े खाने वाले जीवों ने अपने घर बना लिये थे. बर्दवान से मेहरुन्निसा के साथ आई एक दर्जन दासियों के साथ उस का निर्वाह केवल चौदह आने रोज़ पर हो जाना काफ़ी समझा गया था. उस जगह को देख कर उस की उन निजी सेविकाओं की आंखों में पानी भर आया था....और पानी की उस धुंधली दीवार के पीछे से जब दो-चार सेविकाओं ने स्वयं मेहरुन्निसा को झाड़ू हाथ में उठाए देखा, तो उन का कलेजा मुंह को आ गया. उन्हों ने झपट कर उस के हाथ से झाड़ू छीन ली थी.

मल्का ज़मानी रुकिया सुलताना मेहर के बचपन से ही उसे चाहती थी. जब वह स्वयं उस से मिलने के लिए अपने तामझाम में वहां आई थी, तो उस स्थान की बहुत कुछ कायापलट हो चुकी थी. जो थोड़ाबहुत सामान मेहरुन्निसा बर्दवान से अपने साथ लाई थी उस से उस ने उस जगह को सजाने की भरसक कोशिश की थी. पर फिर भी मल्का ज़मानी की रुलाई नहीं रुक सकी थी. उन्हों ने मेहर को कलेजे से लगा लिया था और उस की पीठ पर थपकी देते देते कहा था: "मेहर, मेरी बच्ची, यह हालत हमेशा रहने वाली नहीं है."

और मेहर ने उस से भी अधिक दृढ़ विश्वास के साथ कहा था: "हां, मल्का ज़मानी, यह हालत हमेशा रहने वाली नहीं है."

तब दो मुंह से निकलते वाली इस एक ही बात के पीछे दो भिन्न भिन्न स्वप्न थे. मल्का ज़मानी के स्वर में एक आशा थी, जहांगीर की

तरफ़ से. मेहर के मन में एक संकल्प था अपनी ओर से. नारी को जब पीड़ा पहुंचती है, तो वह कर्मशील हो उठती है. सौंदर्य जब पीड़ित हो उठता है, तो उस का अहंकार युक्ति का आश्रय लेता है.

मल्का ज़मानी का आश्वासन कभी फलीभूत नहीं हुआ. किन्तु मेहर के सौंदर्य ने कभी दीन रहना नहीं सीखा था. उस की पतली पतली उंगलियों में सूई नृत्य करने लगी. मल्का ज़मानी ने अपनी ओर से उसे अशर्फियों का एक डिब्बा भेजा. उस ने आदर के साथ उसे ग्रहण किया, और उन के वापस अपने महल तक पहुंचने से पहले ही वहां पहुंचा दिया.

जल्दी ही शाही हरम के एक चौक में जब दैनिक व्यापार-विनिमय चल रहा था, तब हरम की बेगमों की नजरें एक ओढ़नी और पेशवाज़ के जोड़े पर फिसल पड़ी. इस जोड़े पर मानो साक्षात् चांद-सितारे पोत की सूई की नोक पर नाच रहे थे. उस की अकल्पनीय कढ़ाई को मानो किसी फ़रिश्ते ने अपने हाथ से छू दिया था. शीघ्र ही उस जोड़े पर कीमत लगाने की होड़ लग गई. वह जोड़ा उस दिन एक हज़ार अशर्फ़ियों में उठ गया. अगले ही सप्ताह ज़रदोज़ी के काम का एक दुपट्टा हरम की एक शाहखर्च बेगम के खजाने से पांच सौ अशर्फियां ले गया. बहुत जल्दी हरम में दूर दूर तक यह अफ़वाह फैल चली कि रेशम, मखमल और मलमल पर किसी जादूगरनी का हाथ लगता है, वह सीधा-सादा वस्त्र एक बहुत खूबसूरत और लुभावनी पोशाक में बदल जाता है, और हरम के चौक में ये चीजें सैंकड़ों विलासप्रिय रमणियों को तरसा कर हाथों-हाथ उठ जाती हैं. तब उन तरसने वालियों ने उस जादूगरनी का पता लगाने का संकल्प किया, ताकि उस के निवास स्थान पर धावा बोला जा सके और चौक में आने से पहले ही चीज़ उन के हाथ लग जाए. यह होड़ जल्दी ही शाही हरम से निकल कर उस की नकल पर चलने वाले अमीर-उमराओं के हरमों तक जा पहुँची. दिल्ली और आगरा के नवाबों और सरदारों की हवेलियों में मेहरुन्निसा और उस की सेविकाओं के हाथों से गुज़री हुई चीजों को शौक के साथ पहना जाने लगा.

मल्का ज़मानी के देखते देखते उस जगह की रंगत बदल गई, जहां मेहर रहती थी, वहां चिनाई लग गई. मैमारों ने नई दीवारें उठाईं और पुरानी दीवारों को दुरुस्त कर के उन पर रंगरौग़न के करिश्मे दिखाए. दो वर्ष के भीतर भीतर मेहरुन्निसा की दासियों के वस्त्र बेगमों के वस्त्रों को लजाने लगे. उन पर लगे कीमती पत्थर मुंह से बोलने लगे. इन सब के मध्य में, एक सजे हुए कमरे के कोने में बैठी मेहर की उंगलियां निरंतर चलती रहीं. मलमल के सादे वस्त्रों में आवेष्ठित वह प्रतिमा मानो एक अपूर्व योग-साधना में तल्लीन थी. मेहर ने कला को कौशल और गति में एकात्म करके जीवन के सौंदर्य को एक अभूतपूर्व निखार में बदल दिया था. इन बीते हुए चार वर्षों में कितनों ने उस की प्रशंसा के गीत गाए, कितनों ने उस की उंगलियों को विभोर हो कर चूमा, कितनों ने उस से ईर्ष्या की, उसे कुछ पता नहीं. हां, वे सपने उसे याद रहे, जिन्हों ने उस के सोते-जागते उस की कल्पना को त्रस्त किए रखा, उसे रुलाया, मुसकाया, उस के कानों में फुसफुसाहट कर के अतीत के दृश्य दिखाए और विराट अंतरिक्ष में व्याप्त छोटी छोटी सूईयों ने उस के जीवनसूत्रों को अपने में पिरो कर न जाने शून्य के किन किन कोनों के चक्कर लगाए.

तब एक दिन जब वह अपनी सारी विक्षिप्त चेतना को झिंझोड़ कर कला की गहराईयों में डूबने के लिए चली, तो उस ने पाया कि उस का भौतिक शरीर मल्का ज़मानी रुकिया सुलताना का स्वागत कर रहा है. मल्का ज़मानी ने इशारे से उस की सेविकाओं को बाहर चले जाने के लिए कह दिया है, और वह उस के कानों में एक सपने की तरह ही फुसफुसा रही है : "मेहर, शाही हरम की औरतों के बीच तेरा नूर सूरज की किरणों की तरह चमक रहा है. तू शाही हरम के इस भूले-बिसरे कोने में ज़मींदोज़ होने के लिए पैदा नहीं हुई है. तेरी रूह की रोशनी शाही दिल व दिमाग़ की राब से ज्यादा नाज़ुक रगों में पेवस्त है. चल मेरे साथ और अपनी उस रुहानी जागीर का दावा कर."

"दावा!" सपनों में खोई मेहरुन्निसा को आश्चर्य हुआ. "क्या मुझे किसी से किसी चीज़ का दावा करना है? नहीं, नहीं, अम्मीं हुज़ूर, ज़रूर आप को ग़लतफ़हमी हो गई है. मेरा तो किसी पर कोई दावा नहीं. मेरी कोई रूहानी जागीर नहीं, अम्मीं हुज़ूर."

"यह क्या कह रही है, मेहर!" मल्का ज़मानी को भी आश्चर्य हुआ. "क्या तू इतना भी नहीं समझती कि क्यों तुझे बर्दवान से आगरा लाया गया है?"

"समझती क्यों नहीं, अम्मीं हुज़ूर? शेर को मार कर ही शिकारी को इतमीनान नहीं हुआ. वह उस के कुटुम्ब को पामाल और पस्त देखना चाहता है. उस की ख्वाहिश ज़रूर पूरी होगी, अम्मीं हुज़ूर, क्यों कि उस के हाथ में दूर-ही-दूर से मार करने वाली बहुत लम्बी बंदूक है."

"नहीं, नहीं, मेहर, इस तरह से मत सोच. यों सोचने से आने वाले वक़्त का सारा शीराज़ा बिखर जाएगा. शहंशाहे आलम तुझे प्यार करते हैं. उन्हों ने जो भी कुफ़ किया है वह सब तेरे लिए किया है. वह तुझे पाना चाहते हैं, मेहर. लेकिन पुरुष नारी को प्यार के बदले अपना सर्वस्व अर्पण नहीं कर सकता. उसे अपनी प्रतिष्ठा, अपने समाज और अपने अन्य कर्त्तव्यों का भी ध्यान रखना पड़ता है क्यों कि इन्हीं के सहारे उस का प्यार फलफूल सकता है. वह अपनी प्रतिष्ठा को तिलांजलि दे कर यदि तेरे पास आएंगे, तो उन का पौरुष स्वयं उन्हें ही धिक्कार उठेगा....और जो पुरुष आत्माभिमान से हीन हो कर प्यार का दम भरता है, उस का प्यार कभी स्थायी नहीं होता."

"अम्मीं हुज़ूर, एक बात बताऊं?....सुनो, और किसी तरह शहंशाहे आलम तक भी इस बात को पहुंचा दो: मैं हिन्दुस्तान के शंहशाह से प्यार नहीं करती. मुझे हिन्दुस्तान की मल्का बनने की तमन्ना नहीं है. मैं उस आदमी से प्यार नहीं कर सकती, जिस ने अपनी वासना पूर्ण करने के लिये किसी के हरे-भरे चमन को उजाड़ दिया है. अपने शेर से ब्याह कर लेने के बाद मैं ने अनेक बार यह अनुभव किया कि शहज़ादा सलीम से मेरा

प्यार नहीं था, वासना की वह पहली भभक थी, जो हर किशोर युवक और युवती के जीवन में शुरू शुरू में सुलग उठती है, या फिर वह हिन्दुस्तान की भावी मल्का कहलाने का चाव था. सुनो, अम्मीं हुज़ूर, शेर की छाती से लग कर मेरा वह चाव कभी का तिरोहित हो चुका है. मेरा खुदा जानता है कि उस के बाद मैं ने कभी हिन्दुस्तान की मल्का बनने के ख्वाब नहीं देखे. क्या मेहर कभी उस आदमी को मुहब्बत की नज़र से देख सकती है, जिस ने उसे आश्रय देने वाले लहलहाते वृक्ष को ईर्ष्या और द्वेष के वश हो कर उखाड़ फेंका, उस के शेर को तड़पा तड़पा कर नीचता-पूर्वक मारा?—अम्मीं हुज़ूर, मेरे दिल की बात जानना चाहती हो, तो सुनो, मैं शहंशाह जहांगीर से नफ़रत करती हूं."

रुकिया सुलताना स्तंभित सी खड़ी रह गई. लगा कि कोई उस की समस्त आशाओं-प्रत्याशाओं को हर ले गया है, एक धुंधलका चारों ओर छा गया है, जिस में मेहरुन्निसा की आकृति दुर्भाग्य की अग्नि से निकले धुंएं की पतली लकीर में परिवर्तित हो कर किसी उलझी हुई गुच्छी के तार की तरह मंडराती फिर रही है. उस के मुंह से केवल यह शब्द निकला: "मेहर!"

मेहरुन्निसा के मुख पर घृणा के भाव अभी तक मौजूद थे. उस ने मल्का ज़मानी के आश्चर्य को देख कर कहा, "अम्मीं हुज़ूर, इस संसार में हर व्यक्ति की अपनी अपनी पीड़ा है, अपना अपना दर्द है, अपनी अपनी कामनाएं हैं. दुनिया का बड़े-से-बड़ा शहंशाह उन सब की उपेक्षा कर के अपने मन-महल में घी के चिराग़ नहीं जला सकता...."

रुकिया सुलताना ने अपना कांपता हुआ हाथ मेहरुन्निसा की कोमल बांह पर रख दिया और मेहरुन्निसा चुप हो गई. उस ने सहारा दे कर वृद्धा को उस चौकी पर बैठाया, जिस पर कुछ देर पहले वह स्वयं बैठी थी. फिर बोली, "अम्मीं हुज़ूर, इस नाचीज़ की गुफ़्तार से आप को तकलीफ़ पहुंची है. क्या आप इस के लिए अपनी मेहर को माफ़ नहीं करेंगी?"

सुलताना ने स्नेह से अपना दूसरा हाथ भी मेहर की बांह पर रख

दिया और हौले से बोली, "मेरी बच्ची, मैं तुझ से बहुत खुश हूं. तेरे दर्द को मैं अब तक नहीं समझ पाई थी....पर अब और अधिक न समझने का बहाना नहीं करूंगी. सच है, शहंशाहे आलम ने खुद अपने हक़ में बहुत बुरा किया है. प्यार से अधिकार मिलता है, अधिकार से प्यार नहीं मिलता. पर मैं सोच रही थी कि दो दिलों के इस झगड़े में अगर कहीं सल्तनत-मुग़लिया का सितारा डूब गया, तो फिर वही खूनखराबा, मार-काट और क़यामत बरपा हो जाएंगे. आज जिन दिलों में अरमान और अभिमान पलते हैं उन में धारदार ठंडा लोहा पेवस्त कर दिया जाएगा. पर शहंशाहे आलम को यह सब कौन समझाए? अच्छा, मेहर, खुदा तेरी तकलीफ़ में तुझे राहत दे, अब चलूंगी."

मल्का ज़मानी जब अपने महल में पहुंची, तो खबर मिली कि शहंशाह की सवारी कहीं जाने के लिए तैयार है. एक विशेष पालकी थी, जिस में बैठ कर शहंशाह किले में घूमने या शाही हरम में किसी बेगम से मिलने के लिए जाते थे. महीनों से जहांगीर ने किले का एक छोटा सा कोना ही अपनी हलचलों का केन्द्र बना रखा था. वहीं उन के लिए दीवान-ए-ख़ास लगता था. नित्य प्रति झरोखे में प्रजा को दर्शन देने का क्रम भी कई कई दिनों तक टूट जाता था. तब शहंशाह पालकी में आज किधर जा रहे हैं? मल्का ज़मानी ने पूरी ख़बर पाने के लिए ख़ोजासरा को भेजा. कुछ ही देर बाद खबर मिल गई. शहंशाह जहांगीर मेहरुन्निसा का आवास देखने के लिए जा रहे थे. सवारी रवाना हो चुकी था.

मल्का ज़मानी ने वस्त्र नहीं बदले. उस ने फिर तामझाम में पैर रखा और तामझाम के वाहक उसे ले कर फिर मेहरुन्निसा के आवासगृह की ओर चल दिए. सुलताना का दिल किसी भावी आशंका से धक धक कर रहा था.

शाही सवारी की धूमधाम सुन कर भी मेहरुन्निसा की दासियों को यह गुमान नहीं हुआ कि आज कोई अनहोनी होने जा रही है. किंतु जब

बादशाह की सवारी मुश्किल से सौ कदम दूर रही होगी, तो उस के संदेश-वाहक ने सूचना दी: "शहंशाहे आलम तशरीफ़ ला रहे हैं."

पलक मारते दासियां व्यस्त हो गईं. बाहर निकल कर उन्हों ने तुरंत शहंशाह के स्वागत के लिए परे बांध लिए. किंतु मेहरुन्निसा अपने आसन से नहीं उठी. शहंशाह जहांगीर तशरीफ़ ला रहे हैं, इस सूचना में उस के लिए कोई रस नहीं था, कोई उत्तेजना नहीं थी. उल्टे उस के अंतर्मन में गत जीवन की कटुताएं और गहन हो गईं.

जहांगीर ने पालकी से नीचे पैर रखा. उद्घोषक ने नियमानुसार शुभागमन की घोषणा की. शाही महलों के प्रबन्धक, खानसामा आगे आगे लपके. दासियों ने कोरनिश करनी आरंभ की और उन के वस्त्रालंकार दिन की तेज़ रोशनी में चमचमाने लगे. जहांगीर ठगा सा देखता रह गया. क्या ये ही मेहरुन्निसा की दासियां हैं? चौदह आने प्रति दिन के भत्ते पर इन के ये ठाट!

और जब कक्ष के द्वार पर खड़े हो कर जहांगीर ने बहुत दिनों की भूलीबिसरी मेहर पर एक नज़र डाली, तो दिल को एक धक्का सा लगा. सादी मलमल की पेशवाज़ और दुपट्टा, काले रंग की मखमल की एक कुरती—यही मेहरुन्निसा की पोशाक थी. कक्ष में शहंशाह के आगमन पर वह हड़बड़ा कर खड़ी हो गई थी और गरदन झुका कर माथे पर हाथ ले जाते हुए उस का स्वागत कर रही थी.

दो क्षणों तक जहांगीर के मुंह से कोई शब्द नहीं निकला. फिर उस ने एक संपूर्ण दृष्टि मेहरुन्निसा के शरीर पर डाली. शुभ्र, स्वच्छ वस्त्रों में वह नेकी की प्रतिमा सी मालूम होती थी. कुछ भी तो ऐसा नहीं लगता था, जो बीच के चार-पांच वर्षों में बदल गया हो. उसे दीनता से त्रस्त कर के उस की जिस त्रस्त अवस्था पर तरस खाने और बड़ा बनने के लिए जहांगीर आया था वह कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी: मेहरुन्निसा आज भी वैसी ही सरल, सौम्य और स्वाभिमान से पूर्ण थी, जैसी चार साल पहले थी. यदि कोई आहत दर्प था, तो बाहर

उस का कोई भी चिह्न परिलक्षित नहीं हो रहा था. उस की चारों ओर गरिमा का एक अलक्ष्य वातावरण था, जिस से जहांगीर स्वयं भी प्रभावित हुए बिना न रह सका. अभिभूत स्वर में उस ने कहा :

"मेहरुन्निसा!"

"हुक्म, जहांपनाह?"

"मेहर!" जहांगीर ने फिर पुकारा, मानो पहले नाम से उसे संतोष न हुआ हो.

"जी जहांपनाह," मेहर ने फिर उत्तर दिया.

"तुम्हारे और तुम्हारी कनीजों के लिबास में इतना फ़रक! यह क्यों?" जहांगीर को मानों बात करने के लिए और कोई सिरा ही नहीं मिला.

"इसलिए, जहांपनाह," मेहर ने नज़रें नीची कर के उत्तर दिया, "कि ये जिस की सेवा में है उस की यही मरज़ी है कि उस की सेविकायें शाही हरम में उचित सम्मान प्राप्त करें—लेकिन मेहरुन्निसा जिस की गुलाम है वह यही चाहता है कि गुलाम कभी अपनी हैसियत से आगे न बढ़े."

जहांगीर पलकें झपकाता रह गया. यह व्यंग्य कर के मेहरुन्निसा ने उस के अहंकार पर ऐसा तमाचा जड़ा था कि वह खील खील हो गया. दूसरे का अधिकार अनुचित रूप से छीन कर अपने अहं को पोषित करने से बढ़ कर नीचता और क्या हो सकती है? मेहरुन्निसा ने जो उत्तर दिया था वह युक्तियुक्त था, और उतना ही कंटीला था, जितना कोई भी कटु सत्य हो सकता है.

उपालम्भ देने के अतिरिक्त जहांगीर के पास कोई चारा नहीं था. वह बोला, "तो तुम माबदौलत को कसूरवार ठहराना चाहती हो, मेहर?"

"नहीं, जहांपनाह. बादशाह हमेशा कसूर से परे होता है. वह अगर हत्या भी करता है, तो वह सज़ा कहलाती है. कनीज़ की इतनी ताब कहां कि खुदा के नुमाइन्दे की तौहीन करे!"

जहांगीर तिलमिला गया. सचमुच उस ने शेर अफ़गन की हत्या की थी और आज तक वह मन-ही मन यह मान कर संतोष करता था कि शेर अफ़गन ने शाही प्रेमिका को हथिया कर एक अक्षम्य अपराध किया था और उसे उस की वाजिब सज़ा मिल गई. किन्तु मेहरुन्निसा ने जब समतल शब्दों की ओट ले कर उसे हत्यारे के नाम से पुकारा, तो सत्य ने यकायक प्रकट हो कर उस की ओर दोज़ख की हवाओं के द्वार खोल दिए. वह तड़प कर बोला, "मेहर!....तुम अच्छी तरह जानती हो कि इस्लाम में पैग़म्बर ही खुदा का नुमाइंदा होता है, बादशाह नहीं. तुम ने हमें खुदा का नुमाइंदा कह कर हमारी तौहीन की है."

"कनीज़ माफ़ी चाहती है," मेहरुन्निसा ने सिर झुका कर और भी विनम्र स्वर में कहा. "लेकिन ग़रीब मेहर सपने में भी यह ख्याल नहीं कर सकती कि जहाँपनाह ने कभी किसी बेकसूर को सज़ा दी होगी, क्यों कि जहाँपनाह के इंसाफ की जंजीर जमना के किनारे तक पहुंचती है. तो फिर खुदा के जिस बंदे का ज़ाहिर में कोई कसूर मालूम नहीं होता उसे अगर कोई मौत की सब से बड़ी सज़ा दे सकता है, तो वह खुदा का नुमाइन्दा ही हो सकता है, जहांपनाह."

"तुम ने कभी यह महसूस नहीं किया, मेहर, कि हम ने यह सब तुम्हारे लिए किया है, तुम्हारे प्यार के लिए किया है?" जहाँगीर ने विचलित स्वर में पूछा. थका सा वह उसी चौकी पर बैठ गया, जिस पर बैठ कर मेहर ने उंगलियां चलाते चलाते ये चार साल बिता दिए थे.

"कनीज खुदा की शुक्रगुजार है कि जहाँपनाह ने उस के दिल को कम-से-कम नाश्ते के लिए दस्तरखान के काबिल तो समझा!—नहीं तो एक उजड्ड सिपाही न जाने कब तक इस से खिलौने की तरह खेलता रहता!"

जहांगीर ने सहसा कुपित हो कर मेहर की ओर तीव्र दृष्टि से देखा. किन्तु देखते ही उस की नज़र पानी पानी हो गई. मेहरुन्निसा का शरीर घृणा और असमर्थ रोष के कारण कांप रहा था. उस के मुख पर एक अलौकिक तेज चमक रहा था और वह अपनी खुमार भरी आंखें निर्निमेष

जहांगीर के ऊपर गड़ाए हुए थी.

"मेहर!" वह चिल्ला कर बोला.

"जहांपनाह, देखिए न उस उजड्ड सिपाही ने कितना बड़ा कसूर किया था! जब जहांपनाह एक भयंकर चीते के शिकार के लिए गए और चीते को घेर कर जहांपनाह के फ़रमांबरदार बरछे-भाले संभाल कर उसे मारने के लिए बढ़े, तो जहांपनाह की ललकार सुन कर उस सिपाही ने नंगे हाथों उसे चीर कर रख दिया. जब जहांपनाह ने अपना सब से ताकतवर हाथी मस्त कर के उस के ऊपर एक तंग गली में छुड़वाया, तो उस ने अपने नेजे से उस ग़रीब की सूंड को जड़ से काट डाला और वह उल्टे पैरों भागता हुआ चिंघाड़ चिंघाड़ कर मर गया. और देखिए न, जहांपनाह, जब जहांपनाह के बंगाली सूबेदार कुतुबुद्दीन के चालीस बांके रात को सोते समय उस मौत से डरने वाले कायर सिपाही की छाती पर जा चढ़े, तो उस ने घबरा कर बीस आदमियों को तलवार के घाट उतार दिया और इस हत्याकांड को देख कर बाकी फ़रिश्तों को भाग जाना पड़ा. फिर जहांपनाह के फ़रमांबरदार सूबेदार ने जब बर्दवान के किले की दीवार के पास ले जा कर चुपचाप उसे दुनिया से रुखसत कर देना चाहा, तो उस गांवदी ने उस फ़रमांबरदार का सिर उतार लिया और तीस-चालीस आदमियों को अकेले ही बिना इजाज़त मार डाला! इस तरह के खतरनाक इनसान को दूर-ही-दूर से बन्दूकों की गोलियों और तीरों से मार कर जहांपनाह ने अपने इन्साफ़ की जो लाज रखी, उस से मेहर कृतज्ञ है, इतनी कृतकृत्य है, जहांपनाह, कि....कि शहंशाह, आलमपनाह जहांगीर बादशाह के नाम की तसबीह उस के हाथ से छुड़ाए नहीं छूटती!"

उत्तेजित बादशाह चौकी छोड़ कर खड़ा हो गया और गम्भीर स्वर में बोला, "मालूम होता है, मेहर, कि वक्त ने हमें और तुम्हें दोनों को ही बुरी तरह बदल दिया है. हमें यह ख्याल तक नहीं था कि तुम हम से नफ़रत करती हो....और हम यह भी भूले हुए थे कि तुम्हें का हक़

पहुंचता है. तुम ने यह नफ़रत जता कर हमारे मुंह पर एक करारा तमाचा जड़ा है. हम समझते थे कि तुम हमारे पास मुहब्बत की भीख मांगने आओगी, और हम अपना हाथ ऊंचा कर के तुम्हें उसे अता फ़रमाने का फ़ख हासिल करेंगे. लेकिन यहां भी हम भूलते थे. हमें यह मालूम तक नहीं था कि तुम्हारे दिल में बचपन की उस भावना का एक ज़र्रा भी बाकी नहीं रहा...."

"दख़लअंदाज़ी के लिए कनीज़ को माफ़ करें, जहांपनाह. आज भी जहांपनाह के सोचने की दिशा सही नहीं है. अगर मेहर के दिल में हुज़ूर के लिए कोई जगह होती, तो भी वह कभी आलमपनाह को हाथ ऊंचा करने की तकलीफ़ न देती. मुहब्बत की राह में हाथ ऊंचा करने का हक़ औरत का है क्यों कि वह जब हाथ ऊंचा करती है, तो उस के हाथ में उस का सब कुछ होता है. मर्द जब हाथ ऊंचा करता है, तो उस के हाथ में सिर्फ़ अपनी तमन्ना होती है. खुदा ने औरत को यह हक़ उसी वक्त से अता फ़रमाया है, जब से उस ने आदम को अधूरा समझा और हौवा की रचना की."

जहांगीर पूरी तरह पस्त हो चुका था. उसे कुछ पता नहीं रहा कि वह कौन है और कहां है. उसे सिर्फ़ इतना भान रहा कि वह हुस्न की मल्का मेहर के तीरों से घायल एक मामूली इनसान है. सहसा ही उस के होंठ कांपे और वह घुटनों के बल फ़रश पर झुक गया. मेहर का दामन थाम कर उस ने एक विवश प्रेमी की तरह त्रस्त स्वर में कहा, "मेहर, तू एक औरत ही नहीं सारे जहां का नूर है. अभागा सलीम तेरा गुनहगार है. ले यह खंजर—या तो इसे इस गुनहगार के सीने के पार कर दे या उसे मुहब्बत की भीख दे. तेरे एक इशारे पर सारी सलतनत की तबाही है, दूसरे इशारे पर तेरे सलीम की जिंदगी और हिन्दुस्तान की रिआया की परवरिश है. यह सारा जहां तुझे नूरजहां के नाम से याद करेगा क्यों कि नूर अंधेरे को अपने भीतर समा लेता है और फिर भी नूर ही रहता है. हिन्दुस्तान की मल्का बन जाने के बाद अगर तेरे इन्साफ़ ने जहांगीर

को भी सजा देनी चाही, तो जहांगीर उस इन्साफ़ के आगे सिर झुका देगा. तेरे हाथ की सील शहंशाहे आलम की सील होगी. मेहर, देख, अगर तुझे अपने इस सलीम की रूह में कहीं भी शहंशाहियत दिखाई देती हो, तो इसे ठुकरा दे. नूरजहां, मेरी साक़ी, तेरे हाथ के एक मुहब्बत से लबरेज़ प्याले के बदले में तेरे कदमों पर उस सारी सलतनत को लुटा रहा हूं, जिस की ताक़त ने तुझे चार चार आंसू रुलाए हैं. बोल, मेहर, बोल....!"

जहांगीर भूल गया था कि मेहर कांप रही थी. सिर ऊंचा न उठा सकने के कारण उस ने नहीं देखा कि कब मेहर के होंठ भिंच गए, पलकें बन्द हो गईं, नथुने फूल गए, गालों पर पीलापन छा गया और हाथों की मुट्ठियां बंद हो गईं. अगले ही क्षण जब उस का निश्चेष्ट शरीर ढहने लगा, तो जहांगीर ने हड़बड़ा कर उसे अपनी बांहों में थाम लिया. उस ने मदद के लिए किसी को पुकारने को मुंह खोला और मल्का ज़मानी रुकिया सुलताना को संदली के पीछे, दरवाज़े के पार खड़ी देख कर वह खुला-का-खुला रह गया. फिर वह धीमे शब्दों में बोला :

"देखा, अम्मीं जान, नूरजहां का नूर?"

"देखा, शहंशाहे आलम," मल्का ज़मानी ने कहा और उस ने लपक कर मेहरुन्निसा को उस के हाथों से ले लिया. तुरंत चारों ओर भागादौड़ी मच गई.

न जाने नफ़रत मुहब्बत में कैसे बदल गई! पर दो दिन बाद ही मेहरुन्निसा मर गई और उस की रूह में से नूरजहां ने जन्म लिया. सलतनत जहांगीरी में जश्न मनाए गए और एक प्याला शराब के बदले में नूरजहां की कठोर उंगलियों ने सलतनत की सील कस कर पकड़ ली.

नारी की कहानी क्या, एक भावना ही तो है.

★

अन्तिम नग

आगरे के किले में, जमना के सामने, सम्मन बुर्ज की जाली पर झुका मुगल सम्राट शाहजहाँ तल्लीन खड़ा था. पीछे या इधरउधर मुड़ कर देखने की ताब नहीं थी. हर बार जब वह नजरें उठाता था, तो लगता था कि अरजुमंद झांक रही है. हर जाली में दो आंखें नजर आती थीं. अब उस हृदयविदारक घटना को बीते डेढ़ साल हो गया था. और तब से जब भी वह सम्मन बुर्ज में आता था, मुमताज की दो आँखें उसे हर तरफ से, हर जाली से झांकती दिखाई देती थीं.

दूर क्षितिज पर उस की नजरें एकटक जमी हुई थीं. धीरे धीरे क्षितिज पर किसी सूक्ष्म तत्त्व का उदय हुआ. शाहजहाँ के चेहरे पर एक मुसकराहट खिलनी आरम्भ हुई, और जब वह तत्त्व आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता हुआ बृहदाकार हो गया, तो शाहजहां खिलखिला उठा. एकदम घूम कर वह जोर से चिल्लाया :

"बदरुन्निसा! बदरुन्निसा! वह देखो मुमताज हंस रही है."

बुर्ज के कोने पर खड़ी लौंडी ने सजल नेत्रों को छिपाते हुए सिर झुकाया और निवेदन किया: "जहांपनाह को आज ग्यारहवीं बार यह लौंडी यह याद दिलाने की गुस्ताखी करती है कि बदरुन्निसा उस महान शोक को सहन न कर पाने के कारण एक साल हुआ किला छोड़ कर चली गई."

"ओह, हम भूले!" शाहजहां ने निराश भाव से फिर क्षितिज की ओर देखा, जहां अब केवल निस्सीम के अतिरिक्त और कुछ नजर नहीं आ रहा था. होठों ही होठों में वह बुदबुदाया : "बदरुन्निसा किला छोड़ कर चली गई क्यों कि वह सदम-ए-अजीम को बरदाश्त नहीं कर सकती थी. हम बरदाश्त कर सकते हैं, तभी तो हम रोज रोज सम्मन बुर्ज में आते हैं, तभी तो हम अभी तक इस किले में जिंदा हैं."

डेढ़ साल से शाहजहां ने हर खास व आम से मिलना छोड़ रखा था. रंगमहल का शयनकक्ष, नमाज के लिए कसौटी के पत्थर का काला तख्त, या सम्मन बुर्ज—ये ही वे स्थान थे जहां शाहजहां जीवित शव की भांति घूमता था. बहुत कोशिशों के बाद एक दिन किसी तरह नमाज के समय वजीर-खास उस काले तख्त के सामने रखे सफेद तख्त तक आ पाए, जिस पर बैठ कर वह डेढ़ साल पहले सलतनत के खास मसलों पर शहंशाह के साथ बातचीत किया करते थे.

शाहजहां ने बहुत शांति के साथ बातचीत शुरू की थी :

"आप शायद हम से यह पूछने आए हैं कि हम अभी तक कैसे जी रहे हैं! सवाल वाजिब है. हमारा जवाब है कि मुमताज हमारी रूह को हमारे जिस्म से बांध गई है. हमें उस वक्त तक जीना पड़ेगा जब तक कि हम मुमताज की मासूम कब्र पर एक ऐसा रोजा खड़ा नहीं देखते, जिस में .... जिस में मुमताज जी उठे."

जिस में मल्का मुअज्जमा जी उठें ऐसा रोजा! चर्चा आम हो गई. समाचार नगर से नगर, प्रांत से प्रांत और देश से अन्य देशों में फैल गया. कुशल से कुशल कारीगरों ने दिन-रात एक कर दिया. नित्य दो चार नमूने सम्मन बुर्ज में शाहजहां के सामने पेश किए जाते. इन नमूनों को देख कर कभी शाहजहां के चेहरे पर हंसी नहीं आई. और एक दिन जब बड़े गर्व के साथ एक नामी कारीगर का बनाया हुआ नमूना लिए खुद वजीर साहब हाजिर हुए और उस की खूबियां बयान करने लगे, तो सब कुछ सुनने के बाद शाहजहां की आंखों में आंसू आ गए. उस ने धीमे से अपनी नजर वजीर-खास के चेहरे पर गड़ा कर कहा :

"आप इनामइकराम दे कर इस कारीगर को विदा कर दीजिए और नमूना अजायबघर में रख दीजिए."

"और इस पर तामीर कब शुरू होगी, आलीजाह?" वजीर खास ने पूछा.

"इस पर तामीर नहीं होगी," शाहजहां ने आंखें फेर कर कहा.

"यह तो इतना भारी है कि बानो की रूह इस से दब जाएगी."

तीन बार कोरनिश झुका कर वजीर साहब नमूने को लिए-दिए वापस लौट गए. मगर उस के बाद कोई नमूना शाहजहां तक नहीं पहुंच सका. जो आता वह अजायबघर वाले नमूने से घट कर होता और वजीर खास बाहर ही बाहर उसे रोक लेते.

फिर एक दिन, ग्यारहवीं बार बानो की खास सहेली बदरुन्निसा के किले से चले जाने की सूचना देने के बाद, उस गुस्ताख लौंडी ने निवेदन किया :

"जहांपनाह, मुहम्मद ईसा अफनदी नाम का एक फ़नकार मुल्क तुर्किस्तान से आया है और कदम चूमने की इजाजत चाहता है."

"किस फ़न का माहिर है?" शाहजहां ने पूछा.

"संगमरमर की रूह का," लौंडी ने उत्तर दिया.

जहांपनाह ने उस कलाकार को देखने की इच्छा प्रकट की. कुछ ही देर में वजीर खास एक तुर्क जवान को अपने साथ लिए सम्मन बुर्ज में आए. शाहजहां ने दोनों को वहीं बुलाया, जहां खड़ा खड़ा वह क्षितिज की ओर व्यर्थ ही उसी दृश्य के पुनः प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहा था.

जब लौंडी ने आगंतुक के आने की घोषणा कर दी, तो शाहजहां ने बिना मुंह फेरे ही पूछा : "क्या चाहते हो?"

कलाकार ने कोरनिश झुकाने के बाद कहा, "यह गरीब कलाकार जहांपनाह से कला का संरक्षण चाहता है."

"खुलासा बयान करो," शाहजहां ने कहा.

"मैं ने अपनी स्वर्गस्थ पत्नी का स्मारक बनाने के लिए अपनी समस्त कला की सहायता से एक रोजे का नमूना तैयार किया है, जहांपनाह. मैं जानता हूं कि अपनी सारी जिंदगी मेहनत कर के भी मैं उस नमूने के अनुरूप भवन धरती पर खड़ा नहीं कर सकता. मैं यह भी जानता हूं, जहांपनाह, कि हुजूर भी उसी दुःख से दुखी हैं, जिस से मेरा अन्तर छटपटा रहा है. मुझे आशा है कि जहांपनाह कला को संरक्षण देंगे और कला के उस नमूने को साकार होने का अवसर देंगे."

"तो तुम जानते हो कि हम भी अपनी स्वर्गीय मल्का की एक यादगार बनाना चाहते हैं?" शाहजहां ने भावनापूर्ण शब्दों में पूछा.

"जी, जहांपनाह," कलाकार ने उत्तर दिया.

"तो क्या हम यह न समझें कि तुम इस बहाने अपने बनाए हुए नमूने को हमारी कल्पना पर हावी कर देना चाहते हो?"

"जी नहीं, जहांपनाह."

"क्यों?"

"इसलिये कि जहांपनाह और स्वर्गीय मल्का मुअज्जमा का अलौकिक प्रेम इस लोक की किसी कलाकृति को अपनी तुलना में सिर उठा कर खड़े होते देख कर दुखित होगा."

"और तुम्हारी व तुम्हारी स्वर्गस्थ पत्नी का प्रेम इस तुलना को देख कर रंजीदा नहीं होगा?" शाहजहां ने आश्चर्य से पूछा.

"जी, नहीं, जहांपनाह," कलाकार ने उत्तर दिया. "हम साधारण लोगों का प्रेम इसी लोक में जन्म लेता है और इसी में दफन हो जाता है. मैं एक स्वार्थी कलाकार हूँ—जब तक जिंदा रहूँ तब तक अपनी प्रेमिका को उस इमारत के भीतर जिंदा देखना चाहता हूँ, जिस का नमूना मेरे पास है."

आश्चर्य से अभिभूत हो कर शाहजहां ने पीठ फेरी और उस कलाकार की आकृति को देखा. एक दुबलापतला छरहरा शरीर, बढ़ी हुई नुकीली दाढ़ी, सफेद रंग—और उस की आँखों की पुतलियों में शाहजहां की पीठ की ओर स्थित क्षितिज झांक कर मुसकरा रहा था।

सहसा ही शहंशाह की नजरों से टकरा कर कलाकार की नजरें नीचे झुक गई.

शाहजहां ने आज्ञासूचक स्वर में कहा, "वह नमूना मावदौलत के रूबरू पेश किया जाए."

"सेवक इस में असमर्थ है, जहांपनाह," कलाकार ने दीन स्वर में कहा. "वह नमूना अभी कल्पना में है."

शाहजहां ने डेढ़ साल में पहली बार क्रुद्ध हो कर कहा, "यह क्या

मजाक है! हक़ीक़त में नमूना तैयार किए बिना तुम ने हमारे हुजूर में आने की जुर्रत कैसे की?"

"कला का संरक्षण प्राप्त करने के लिए, आलीजाह," कलाकार ने सम स्वर में उत्तर दिया. "मैं ने वह नमूना इसी लिए तैयार नहीं किया कि जहांपनाह और यह दीन कलाकार आजकल एक सी ही अवस्था से गुजर रहे हैं."

"क्या मतलब?"

"यही, जहांपनाह, कि सेवक को भय था कि नमूना देखने के बाद आलीजाह उस के आधार पर इमारत जरूर बनवाते, लेकिन वह इस तुच्छ कलाकार के लौकिक प्रेम के स्मारक के रूप में नहीं, मल्का मुअज्जमा के अलौकिक प्रेम के स्मारक के रूप में."

"क्या बकते हो!" शाहजहां क्रोध से कांप कर बोला.

"सेवक सही निवेदन करता है, आलीजाह," कलाकार ने अविचलित भाव से कहा. "यह दुनिया है और यहां अमीर लोग गरीबों की भावनाओं को भी खरीद लेते हैं."

शाहजहां के क्रोध का पारावार न था. उस ने अपनी अत्यंत क्रुद्ध दृष्टि वजीर-खास की ओर उठाई, जो एक तरफ सहमे हुए से खड़े थे. उन्हों ने उस दृष्टि को अनुभव किया और एक कदम आगे बढ़ कर बोले :

"गुलाम इस फ़नकार को पेश करने की गुस्ताखी की माफी चाहता है, जहांपनाह, मगर यह आदमी जो कुछ कहता है सही कहता है. यह तुर्किस्तान और ईरान में जादूगर संगतराश के नाम से मशहूर है. इस ने लफ्जों ही लफ्जों में एक ऐसे मकबरे का नक्शा खींच कर मेरे सामने रख दिया कि वह साकार नजर आने लगा."

शाहजहां ने एक क्षण विस्मय से वजीर की ओर देखा. फिर कड़े स्वर में उन्हों ने कहा, "मावदौलत हुक्म देते हैं कि इस फनकार से चंदन की लकड़ी में वह ढांचा तैयार कराया जाए. हम उस कल्पना को देखना चाहते हैं."

"जो हुक्म, जहांपनाह," वजीर ने गरदन झुका कर फ़नकार को कोरनिश करने का इशारा किया, और शाहजहां को पीठ फेर कर फिर क्षितिज की ओर देखते छोड़ दोनों आदमी सम्मन बुर्ज से बाहर आ गए.

ढांचा बनाने के लिए ईसा ने राजा जयसिंह का उद्यान चुना. बाग में हर खास व आम की आवाजाही बंद कर दी गई. ईसा अपने बारीक औजारों से चंदन की लकड़ी में उलझ गया. कल्पना सुगंधित काष्ठ में साकार रूप धारण करने लगी. अंत में पूर्णिमा की संध्या को, अठारह दिन बाद, उस ने सदर वजीर सादुल्लाखां को सूचित किया कि ढांचा तैयार है और वह किले में नहीं लाया जा सकता, इसलिए बादशाह सलामत उसे उद्यान में ही देखने की तकलीफ गवारा करें.

शाहजहां को खबर दी गई और वह डेढ़ साल में पहली बार किले से बाहर निकला. बड़े बड़े सरदार और अमीर-उमरा साथ थे. सभी यह देखने के लिए उत्सुक थे कि जिस आदमी को जादूगर संगतराश कहा जाता है, देखें उस की कल्पना कहां तक दौड़ी है.

ईसा ने सरदारों और अमीरउमरा को ढांचे के चारों ओर करीने से खड़ा किया. ढांचे के ऊपर एत मखमल का परदा पड़ा था. शाहजहां को सामने खड़ा कर के उस ने मखमल का परदा ढांचे के ऊपर से हटा दिया. उस के नीचे एक बारीक मलमल का परदा था, जिस के पार चांदनी झिलमिला कर मानो एक श्वेतवर्ण नवयौवना को अपने शुभ्र वर्ण में छिपा कर अनावृत्त होने से बचाने की असफल चेष्टा कर रही थी. शाहजहां के सामने एक पानी का छोटा सा हौज था, जिस में ताजमहल की शुभ्र प्रतिमा मानो आकाश से झांक रही थी.

कितनी ही देर तक सभी लोग मंत्रमुग्ध की भांति खड़े रहे. शाहजहां एकटक उस की ओर देखता रहा. अन्त में उस ने पलकें झपकाईं और बोला:

"जादूगर फ़नकार, हमें अफसोस है कि हम तुम्हारी कला को दौलत का संरक्षण नहीं दे सकेंगे."

दुःख और आश्चर्य से चकित हो कर कलाकार शहंशाह की ओर

ताकने लगा. फिर उस ने पलकें झपकाते हुए कहा, "क्या यह नाचीज फ़नकार इस की वजह जानने की जुर्रत कर सकता है, जहांपनाह?"

शाहजहां ने मुसकरा कर कहा, "जरूर. हमें मालूम नहीं था कि कोई इतनी खूबसूरत इमारत इस जमीन पर बन सकती है. हम ने मल्का मुमज्जमा को मृत्यु-शैया पर वचन दिया था कि दुनिया में सब से खूबसूरत इमारत उन की रूह पर खडी की जाएगी. तुम देखते हो, फनकार, हम उस वादे को तोड़ने की हालत में नहीं है."

कलाकार ने गले ही गले में कुछ गटका और दयनीय दृष्टि से राजा जयसिंह की ओर देखा जो उस समय शाहजहां से कुछ दूर सादुल्लाखां के पास खड़े थे. वही उस उद्यान के स्वामी थे, जिस में रात दिन एक कर के कलाकार ने संसार के सब से सुन्दर भवन का नमूना तैयार किया था.

राजा जयसिंह ने एक कदम आगे बढ़ कर कलाकार को संबोधित किया : "कलाकार, शहंशाह सिर्फ शहंशाह ही नहीं हैं, एक इनसान भी हैं और जो कुछ उन्हों ने कहा है वह सही कहा है. दूसरी ओर, कलाकार केवल कलाकार होता है. उसे अपनी कला के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से प्रेम नहीं होता. तुम्हारी कला प्रकट होने के लिए तड़प रही है. उसे इस का अवसर देना तुम्हारा धर्म है. अगर तुम ने इस ढांचे को हूबहू इमारत के रूप में बदल दिया, तो जहांपनाह तुम्हें इतना पुरस्कार देंगे . . ."

शाहजहां ने बीच में ही कहा, "कि तुम इस हौज की परछाईं की तरह का एक दूसरा रोजा अपनी बीवी की इमारत पर खड़ा कर सको."

ढांचे की चारों ओर खड़े अमीरउमरा ने नारा लगाया : "जहांपनाह का इकबाल बुलंद हो!"

डबडबाई आंखों से कलाकार अपने नमूने की ओर अपलक देख रहा था. क्या सचमुच कलाकार को अपनी कला के अतिरिक्त अन्य किसी से प्रेम नहीं होता? क्या दूसरों को तृप्ति दान करने के लिए अपनी कला को प्रकट करना ही उस का धर्म है? तब इस अनन्य प्रेम और तृप्तिदान का स्वयं कलाकार के लिए क्या महत्व है? . . .

इसी प्रकार देखते देखते भावी ताजमहल का वह सौम्य प्रतिरूप उस की आंखों से ओझल होने लगा. पीड़ा से अवगले नेत्र उस ने शहंशाह की ओर उठाए और बोला, "अच्छी बात है. जहांपनाह हुक्म दें. यह इमारत इसी धरती पर खड़ी होगी."

शाहजहां ने आगे बढ़ कर ईसा की पीठ थपथपाई और कहा, "लेकिन एक शर्त है."

"हुक्म कीजिए," कलाकार ने उसी भाव से कहा.

"हमें पूरा यकीन है कि हमारी अरजुमंद इस इमारत के भीतर हमें जिंदा दिखाई देगी. लेकिन अगर ऐसा न हुआ, तो हम तुम्हारे फ़न की वह कद्र नहीं कर सकेंगे जिस का हम ने वादा किया है."

यह दूसरा आघात था. यह स्वयं कलाकार की ईमानदारी और सच्चाई पर अविश्वास था. अपने गिरते हुए आंसुओं को छिपाने के लिए ईसा ने सिर झुका कर भरे स्वर में कहा, "बहुत खूब, जहांपनाह."

शाहजहां ने सादुल्लाखां की तरफ देख कर आज्ञासूचक स्वर में कहा, "खान साहब, राजामहाराजाओं के पास खबरें भेजने का इंतजाम किया जाए. इस जमीन पर जन्नत की इमारत खड़ी होगी. हमारी अरजुमंद की रूह को जिंदा करने के लिए हमें जो भी कोई खास व आम मदद देगा, हमारी शहंशाहियत उस की शुक्रगुजार होगी."

खबरें भेज दी गईं. शहर शहर में मुनादी पिट गई. जगह जगह से तोहफे आने शुरू हो गए. कारीगरों के दल के दल आगरे की तरफ चल दिए. जिसे भी अपनी कला पर थोड़ा सा नाज था उस ने ईसा के हाथों को चूमा. पचासों प्रमुख कारीगर और बीस हजार मजदूरों ने मुमताजमहल की रूह को जिंदा करने के लिए विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के निर्माण में हाथ लगाया. मुमताजाबाद के नाम से उन का एक छोटा सा शहर आबाद हो गया. सुन्दर लेख लिखने के लिए मुल्क तुर्किस्तान का सत्तारखां, चित्र खींचने के लिए समरकंद का मुहम्मद शरीफ, तुग़रा-लेखन के लिए शीराज का अमानतखां, और राजगीरी के निरीक्षण के

लिए अकबराबाद का मुहम्मद हनीफ ईसा अफनदी के हाथ बन गए.

इस बीच शाहजहां के राज्य का विस्तार बढ़ने लगा. अहमदनगर को लेने से जो सिलसिला शुरू हुआ तो बीजापुर, गोलकुंडा, व कंधार शाहजहां के अधीन हो गए. सम्मन बुर्ज के कटहरे पर खड़े हो कर दूर क्षितिज पर जो धूमिल नारी-मूर्त्ति कभी कभी उभरती मालूम होती थी, वह राजा जयसिंह के उद्यान में बनने वाले रोजे की पाड़ों के पीछे छिप गई. सम्मन बुर्ज की जालियों में जो दो प्यासी आंखें जबतब झांकती दिखाई देती थीं उन का दिखाई देना बंद हो गया. इस के साथ सम्मन बुर्ज में आने का अन्तर भी धीरे धीरे बढ़ता रहा और जब तक रोजा बन कर तैयार हुआ, तब तक तो यह अन्तर छः छः महीने का हो गया. सम्मन बुर्ज अब अरजुमंद के प्रेम का स्थान नहीं, एक अज्ञात भय का स्थान बन गया, जहां जाते हुए शाहजहां के मन में सिहरन चपला की भांति कौंध जाती थी.

एक दिन सादुल्लाखां ने सूचित किया कि ताजबीबी का रोजा तैयार हो गया है. शाहजहां भागा भागा सम्मन बुर्ज पर उस की एक झांकी देखने के लिए आया. मगर रोजा पाड़ों से एक एक इंच ढंका हुआ था. शाहजहां ने पूछा :

"ये पाड़ें कब तक हट जाएंगी?"

"शायद एक महीना लग जाए," वजीर ने जवाब दिया.

"लेकिन हम रोजा आज ही देखना चाहते हैं," शाहजहां ने कहा.

"मगर यह तो मुमकिन नहीं, जहांपनाह," वजीर चकित हो कर बोला.

"यह शाही हुक्म है," शाहजहां ने कहा. "रिआया को आगाह कर दो, पाड़ें मुफ्त लूट ले जाएं. आज रात की चांदनी में हम रोजा देखेंगे."

आगरा तथा आसपास के देहातों में मुनादी पिट गई. लाखों आदमी रोजे की तरफ भागे. पाड़ें एक दिन में साफ हो गईं. दसियों

हज़ार लोगों का समूह उल्लसित हृदय लिए किले के सामने एकत्र हो गया शाहजहां के द्वारा रोजा देखे जाने का दृश्य देखने के लिए. लोगों के मन में एक उत्सुकता थी—देखें अपनी प्रेमिका का अपूर्व स्मारक देखने पर उस प्रेमी का क्या हाल होता है, जिस का सिक्का मुल्क में चलता है.

पूरा चांद खिला हुआ था. किले से ताज तक हाथियों और घोड़ों की कतारें लगी हुई थीं. ढोल, ताशे और नगाड़े पीटे जा रहे थे. शाहजहां अपनी अरजुमंद की रूह का महल देखने जा रहा था.

ताज दरवाजे पर ताज के कलाकारों ने शहंशाह का स्वागत किया. ईसा अफनदी आज खुश था. उस के चेहरे पर अब जहांतहां झुर्रियां दिखाई पड़ने लगी थीं. मगर उस के भीतर से एक अपूर्व तेज झांक रहा था, जो किसी सुन्दर कलाकृति के पूर्ण हो जाने पर हर सच्चे कलाकार के मुंह पर झांकता है.

जिस की कल्पना ने ताज को साकार किया था वही ईसा शाहजहां के आगे आगे चला. ताज दरवाजे के उस पार खड़े हो कर शाहजहां ने एक बार ताज के उस बृहद् रूप को आंखों में उतारा और उस का मुख प्रसन्नता से दीप्त हो गया. ताज के बाहर हजारों कंठ 'शहंशाह शाहजहां जिंदाबाद!' 'मल्का मुअज्जमा मुमताजमहल जिंदाबाद!' के नारे लगा रहे थे.

शाहजहां आगे बढ़ा. बीच का बड़ा हौज आया और ताज पर से फिसलती हुई शाहजहां की निगाहें पानी पर पड़ीं, जिस के भीतर ताज का प्रतिरूप झांक रहा था. शाहजहां अवाक था, स्तब्ध था, अपलक था.

बहुत से प्रमुख सरदारों ने शहंशाह के साथ साथ ताज के दरवाजे के भीतर प्रवेश किया. गुंबद की छत से झाड़-फानूस लटक रहे थे और उन से स्वच्छ प्रकाश अरजुमंद की नकली कब्र पर पड़ रहा था. शाहजहां अबोध बच्चे की तरह उस के पास जा कर खड़ा हो गया. सब ओर निस्तब्धता छा गई. सुई गिरी कि आवाज सुनाई दी.

सहसा एक जोर का चीत्कार शाहजहां के गले से निकला :

"अरजुमंद! बानो!"

विशाल गुंबद में पंदरह सैकिण्ड तक ध्वनि गूंजती रही : "अरजुमंद! बानो!"

मोहविमूढ़ भारत का शहंशाह शाहजहां फूट फूट कर रो पड़ा. गुंबद में उस के रोने की प्रतिध्वनि कई गुना करुणामयी हो कर गूंजने लगी. ईसा ने आगे बढ़ कर निवेदन किया :

"जहांपनाह, यह सम्मानित बानो की नकली कब्र है, जो सिर्फ इसलिए बनाई गई है कि इसे देख कर जहांपनाह गलतफहमी में न पड़ें. जिस नकली कब्र में हम अपनी रूह को बंद कर के दुनिया में घूमते हैं, उसे देख कर इनसान इसी लिए नहीं रोता कि असली कब्र तक पहुंचने के लिए उसे थोड़े से समय का अन्तर चाहिए. जहांपनाह उस अन्तर को याद रखें और गम को भुला दें."

ईसा के ये शब्द भी उतने ही प्रभावकारी हो कर गुंबद में गूंजने लगे. शाहजहां कुछ स्थिर हुआ और क्षण भर में ही उस ने अपने चारों ओर खड़े मुसाहबों व सरदारों की उपस्थिति का अनुभव किया. वह तुरंत उस नकली कब्रगाह से बाहर आया.

नीचे तहखाने में जब वह असली कब्र के पास पहुंचा, तो उस की आंखों में एक भी आंसू नहीं था. कब्र के पास खड़े हो कर उस ने कुछ देर तक चुपचाप मन ही मन कुछ पढ़ा और लौट कर तेजी के साथ वहां से बाहर आ गया. इस के बाद वह तेज कदमों से कब्रगाह की चारों ओर बने जालीदार कमरों में घूमने लगा. ईसा को हैरत थी कि बादशाह इतना तेज क्यों चल रहा है! शाहजहां की गहरी नजरें दीवारों और जालियों के चप्पे चप्पे पर घूम रही थीं और विचित्र गति से आगे बढ़ जाती थीं.

कुछ ही देर में वह ताजमहल की मुख्य इमारत से बाहर निकल आया और उस हौज के पास आ खड़ा हुआ, जिस में ताज की परछाईं

झांक रही थी. जनसाधारण अब भी ताज के दरवाजे के बाहर खड़े नारे लगा रहे थे, किंतु उस शोर से भी ताजमहल की शांति भंग होती प्रतीत नहीं हो रही थी. ईसा शहंशाह से कुछ दूरी पर खड़ा प्रशंसा के दो शब्द सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था.

मगर खोई खोई दृष्टि से ताज को देखते हुए शाहजहां ने हसरत भरी आवाज में कहा : "इस खूबसूरत इमारत में हमारी अरजुमंद कहीं भी हमें जिंदा दिखाई नहीं दी!"

इस भर्राई हुई आवाज को कलाकार के अतिरिक्त अन्य अनेक सरदारों ने सुना और भौंचक्के रह गए. ईसा ने घबराहट और आश्चर्य-चकित दृष्टि से बादशाह को देखा, और मानो उसे यकीन न आया हो, उस की निगाह ताज के मनोरम दृश्य की ओर घूम गई,

पता नहीं कितनी देर बीती, कितनी आशाओं-निराशाओं का आवागमन ईसा के मन के भीतर हुआ. उस समय भी उसे चेत नहीं हुआ, जब शाहजहां ने उस के कंधे को थपथपाते हुए कहा, "फ़नकार, तुम ने एक ऐसी इमारत बना दी है, जो इस दुनिया में न आज तक बनी और न कभी बनेगी. हम तुम्हें इस का वाजिब मुआवजा देंगे....मगर... मगर अफसोस कि हमारी मुमताज इस में कहीं भी हमें जिंदा दिखाई नहीं देती."

ईसा ने सुना या नहीं, कौन जाने. उस के साथ काम करने वालों ने बादशाह की अभ्यर्थना की और उसे ताज के बाहर ले चले. ईसा जहां खड़ा था वहीं पर मानो किसी ने उसे पत्थर के बुत की तरह कील दिया हो.

नारों की आवाज ताज से दूर होती सुनाई पड़ती रही. घंटों और नगाड़ों के शब्द मद्धिम पड़ते चले गए. ईसा की चारों ओर उस के सहयोगी एकत्र हो गए. सब की आंखों में समवेदना और आशंका थी. बात सब में फैल गई थी. तरह तरह की सम्मति प्रकट की जा रही थी. सत्तार-खां का विचार था कि ताज में जो तीन करोड़ से ऊपर का अकूत धन

लगा है, इतना रुपया बादशाह ईसा को देना नहीं चाहता. सहानुभूति प्रकट करता हुआ अमानतखां कह रहा था कि बादशाह को डर है कि रुपया पा कर कहीं ईसा ताज से भी सुंदर भवन धरती पर खड़ा न कर जाए. मुहम्मद हनीफ की आंखों में क्रोध था. भला कहीं मुरदा जिंदा दिखाई दे सकता है? कला की सजीवता ही मुमताज की सजीवता का प्रमाण है और कौन कहता है कि ताज सजीव कला का प्रतिनिधित्व नहीं करता?

मगर ईसा की नजरें ताज के ऊपर टिकी हुई थीं. उस के साथी जो राय दे रहे थे, उन का उसे कुछ पता नहीं था. जब शाहजहां ने नमूना देखने पर उस से वादा लिया था कि ताज में मुमताज जीवित दिखाई देनी चाहिए, तो उस ने इस बात को कभी केवल कला की सजीवता के अर्थों में नहीं लिया था. उस का विश्वास था कि इस अनोखी कल्पना के साकार होने पर मुमताज शाहजहां को जीवित दिखाई न दे यह असंभव है.

मौन बैठा ईसा दो घड़ी बाद उठा और उस ने शीराज के अमानतखां को बुला कर कहा : "कारवां तैयार करो. मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरा आखिरी वक्त नजदीक ही है. मैं अपने मुल्क की सरजमीन पर मरना चाहता हूं. सब से कह दो—हम कल सुबह ही यहां से चल देंगे."

अमानतखां ने कहा, "लेकिन हम लोगों को अभी आखिरी महीने की तनखाएं तो मिली ही नहीं."

ईसा ने उत्तर दिया, "फ़न की कोई कीमत नहीं होती, अमानतखां. कद्रदानी में बादशाह जो देना चाहता था वह दे चुका. अब और देने में उसे तकलीफ होगी. हम उस की शर्त पूरी नहीं कर सके." अपनी ही बात के अविश्वास में वह ताज की ओर फिर से देख कर बोला, "हमें उस से अब और ज्यादा लेने का हक नहीं है."

इन सभी कलाकारों में भाईचारे का व्यवहार था, एक दूसरे के ऊपर निर्भर रहने का भाव था. सभी लोगों ने ईसा की भावना की प्रशंसा की

और ईरान, तुर्किस्तान आदि उत्तरपश्चिमी देशों के रहने वाले कारीगरों का लंबा काफिला तैयार होने लगा. मुमताजाबाद में सारी रात तेज रोशनी के हंडे जलते रहे.

पौ फटी, सुबह हुई और लंबे काफिले का अग्रगामी दस्ता ताज के बाहरी दरवाजे पर आया, जो उस वक्त बंद था, और जिस की सुरक्षा में खड़े दो शाही पहरेदारों से एक क्षीणकाय बुढ़िया उलझी हुई थी. सुबह की उगती हुई किरणों में अंतिम बार अपनी सर्वश्रेष्ठ कलाकृति को निरखने के लिए ईसा अपने ऊंट से उतरा और उस के साथ उस के अनेक साथी दरवाजे पर आए. पहरेदारों ने सम्मान में सिर झुकाया और बुढ़िया से एक तरफ हट जाने को कहा. मगर बुढ़िया किसी तरह राजी नहीं हुई.

ईसा ने आगे बढ़ कर पूछा, "क्या बात है, माई? तुम क्या चाहती हो?"

बुढ़िया ने एक हाथ से आंखों पर छाया करते हुए ईसा को गहरी नजर से देखा और बोली, "अरे बंदे खुदा के, सुना है अरजुमंद बानो बेगम की कब्र पर अल्लाह के फरिश्तों ने एक रोजा खड़ा किया है. खलकत देखने आ रही है, पर ये मुए मुझे नहीं देखने देंगे—मुझे, बदरुन्निसा को, जिसे बेगम इस दुनिया में सब से ज्यादा अजीज थी, जिस ने उसे पालने में झुला कर पैरों पर खड़ा किया, जिस ने उस की बलाएं अपने सिर लीं, और जिस की दुनिया अल्लाह ने उस की बानो को उठा कर सूनी कर दी. दस कोस से चल कर आई और अब ये कहते हैं...."

ईसा ने पूछा, "तो तुम मल्का मुअज्जमा अरजुमंद बानो बेगम की सहेली थीं?"

"और मैं इतनी देर से कह क्या रही हूं, मर्देखुदा!" बुढ़िया ने आश्चर्य से अपनी भोली आंखों के ऊपर तनी हुई भौंह को और ऊंचा करते हुए कहा.

"तो आओ हमारे साथ," ईसा बोला, "मैं दिखलाऊंगा तुम्हें ताजमहल."

बुढ़िया ने उसे सौ सौ दुआएं दीं, अल्लाह का नाम लिया और डगमगाते कदमों से उस के पीछे पीछे चल दी. लोगों ने अनुभव किया कि वास्तव में वह थकी हुई थी. पैरों के साथ साथ घुटनों तक का पाजामा धूल से अट गया था.

ईसा अपनी कला से स्वयं विभोर था. सब से आगे चलता हुआ वह बुढ़िया के बहाने से मानो अपनी स्वर्गस्थ पत्नी के सम्मान में अपनी कला का वर्णन करने लगा :

"बीबी, तुम इस रोजे को देखने आई हो, मगर यह रोजा नहीं है, प्रेम से पगी किसी कोमल, श्वेतवसना, श्वेतवर्ण नारी की मूर्त्ति है, जिस के वस्त्रों में हम लोगों ने अपनी शैतान तबियत का इजहार करने के लिए सीप, मोती, पन्ने, पुखराज जड़ दिए हैं. यह हम ने बीच का हौज नहीं बनाया है, एक दर्पण उस मानिनी के लिए रख दिया है, जिस से वह केवल एक बार अपनी मुंदी हुई आंखों को खोल कर इस में अपनी छवि देखे और मुसकरा दे..."

बुढ़िया अधखुली आंखों से सब कुछ देखती हुई आगे बढ़ रही थी और उस के कान ईसा के एक एक शब्द को पी रहे थे. ईसा अपने वर्णन में मस्त था :

"किसी प्रेमी के घर को सूना कर के, यह चार हाथों वाली परी यहां आ कर अमर होने के लिए तप करने लगी और इस के चार हाथ पत्थरों की सूरत में बदल कर मीनार बन गए हैं, जिन के ऊपर की बुर्जियों में इस परी के हाथों की उंगलियां हमें दिखाई देती हैं. ठहरो, बीबी, इस तापसी देवी के दिल के भीतर कदम रखने से पहले धर्मपुस्तक कुरान की इन आयतों को पढ़ लो, नहीं तो कुफ्र होगा और तुम उस के दिल के भीतर की हालत को नहीं समझ सकतीं..."

बुढ़िया के कदम डगमगाने बन्द हो गए थे. वह मानो हवा में तैरती हुई इस विचित्र और अमूर्त दृश्य को देख रही थी. ईसा कह रहा था :

"दिल के दो परदों की तरह हम ने भी इस नाजनीन के दिल को दो हिस्सों में बांटा है. ऊपर के हिस्से में जो कब्र बनी है वह इस देवी के रूप के प्रति उठने वाली अशोभनीय भावनाओं को दफन करने के लिए है, और यह ठोस सोने का जो जालीदार परदा इस कब्र की चारों तरफ लगा है, उन छेदों को प्रकट करता है जो प्रेमी के वियोग में इस देवी के हृदय में पड़ गए हैं. मूक नारी की वेदना की आहों को संसार नहीं सुन पाता, इसलिए उस आवाज में गूंज पैदा करने के लिए हम ने यह गुंबद बनाया है. मगर इन आहों को अगर कोई सुन पाता है, तो इस गुंबद की छत में लटका हुआ वह झाड़फानूस है, जिस में काफूर की बत्तियां दिन-रात जलती रहती हैं..."

सहारा दे कर ईसा ने बुढ़िया को तहखाने में उतारा. अपने एक साथी के हाथ से कपूर की बत्ती का एक दीपक ले कर उस ने कब्र पर रखा और चुप रहा. केवल बुढ़िया के कान में फुसफुसा कर उस ने इतना कहा, "चुप रहना, यहां पर कोई सो रहा है!"

ये शब्द सुन कर बुढ़िया का तनमन सिहर गया और वह आंखें फाड़े कब्र की ओर देखती रह गई.

तहखाने से निकल कर ईसा ने बुढ़िया को अठपहलू कक्ष दिखाने शुरू किए और अपने साथियों को इशारे से नीचे ही छोड़ दिया. उस की वाणी लुप्त हो गई थी. वह अपनी कला का वर्णन करते करते कहीं सुदूर अतीत में पहुंच कर भटक गया था. कमरों का एक चक्कर लगा लेने के बाद उसे यही अनुभव हुआ कि बुढ़िया उस के साथ नहीं है और वह अकेला ही घूम रहा है.

सचेत हो कर वह वापस लौटा और उस ने देखा कि बीच के एक कमरे में बुढ़िया बीचोंबीच खड़ी है और उस का मुंह भीतर की ओर वाली एक जाली की तरफ घूमा हुआ है. यही नहीं, बल्कि वह बातें कर रही है :

"बानो, अपनी बदरुन्निसा को नहीं पहचानतीं? इन बीस बरसों में

ही मैं पराई हो गई? मैं तो एक पल को भी नहीं भूली. हां, सच. पर तुम ने तो आज सारे सफेद ही सफेद कपड़े पहन लिए. अच्छा, याद आया, जब जवाहरात और सलमेसितारे पहन पहन कर तुम उकता गई थीं, तो एक दिन मैं ने ही तुम्हें यह पोशाक पहनाई थी...."

शब्द धीमे जरूर थे, मगर साफ थे. ईसा हैरत से कुछ बोलता बोलता रुक गया. आश्चर्य से वह बुढ़िया को देख रहा था, और बुढ़िया बातों में मशगूल थी.

"मुझे क्या पता था कि तुम यहां आ बैठी हो. मैं ने तो देखा कि तुम महल में नहीं रहीं और मैं किला छोड़ कर चली आई. हां, अच्छी तो क्या रही! पर तुम ऐसी आंखमिचौली न खेला करो. तुम्हें मेरी मुहब्बत की कसम, बानो, अब मेरे साथ चलोगी न? बोलो, चलोगी न! बोलो, बोलो, बानो, बोलो!"

क्षण भर में ईसा की आंखों में एक विचित्र चमक आई और वह दबे पैरों उस कमरे से बाहर निकल कर भाग चला. दौड़ा दौड़ा वह नीचे आया और फुसफुसा कर बोला, "खबरदार, सब लोग यहां से बाहर हो जाएं. दरवाजे पर पहरा लगा दो, कोई अन्दर न जाने पाए. जरा भी शोर न हो. मैं अभी एक घड़ी में लौट कर वापस आता हूं."

लोगों ने देखा कि वृद्ध ईसा भागने के बहाने उड़ा जा रहा है. देखते ही देखते उस ने ताज दरवाजा पार किया, एक दो से टकराया, मुख्य द्वार पर आया और पेड़ से बंधा पहरेदार का मजबूत घोड़ा खोल लिया. इस से पहले कि कोई पूछे क्या बात है, वह उछल कर घोड़े पर बैठ गया और लगाम को दो-तीन झटके दिए. घोड़ा हवा में एक बार पिछले दो पैरों पर खड़ा हो गया, इस के बाद हवा की तरह दरवाजे से निकल कर वह किले की तरफ दौड़ने लगा.

किले के दरवाजे पर पहुंचते ही ईसा जोर से चिल्लाया :

"ताजमहल को बनाने वाला ईसा आया है. दरवाजा खोलो."

दरवाजा चरमरा कर ईसा का स्वागत करने के लिये खुल गया. तीर की तरह हवा में सनसनाहट पैदा करता हुआ ईसा का घोड़ा लम्बा

गलियारा पार कर के दूसरे, फिर तीसरे मुख्य दरवाजे पर पहुंचा. तब तक राह के अनेक चौकीदार उस के साथ लग गए थे.

मुख्य द्वार पर पहुंच कर उस ने द्वाररक्षक को सुनाते हुए जोर से कहा, "बादशाह सलामत को खबर कर दो ईसा आया है. कहो कि ताजमहल में मल्का मुमज्जमा जिंदा सूरत में तशरीफ लाई हैं. ओह! शहंशाह ने अगर एक पल की भी देर की, तो वह दीदार उन्हें जिन्दगी भर हासिल नहीं होगा."

किले में हलचल मच गई. खबर हूबहू एक एक लफ्ज एक के बाद एक संदेशवाहक से लौंडियों तक पहुंची. शहंशाह शाहजहां नमाज अदा करने के बाद वजीर सादुल्लाखां को कुछ आवश्यक संदेश देते बैठे रह गए थे. उसी समय लौंडी ने खबर अर्ज की और शाहजहां एकदम आश्चर्य-चकित सा उछल कर खड़ा हो गया. एक बार उस ने वजीर की तरफ देखा कि इस का क्या मतलब हो सकता है.

वजीर ने कहा, "मैं ने तो पहले ही अर्ज किया था, आलीजाह, कि वह जादूगर संगतराश के नाम से मशहूर है. अब देर न कीजिए."

अंगरक्षकों के एक बड़े दस्ते के साथ शाहजहां मुख्य द्वार के बाहर निकला और घोड़े पर चढ़ा. बेचैनी से इंतजार करता हुआ ईसा बादशाह को देखते ही घोड़े का मुंह मोड़ कर, बिना किसी तरह की ताजीम किए, तेजी से दौड़ा. पीछे शाहजहां और उस के अंगरक्षकों का दल था.

ताजमहल में सब कुछ ज्यों का त्यों था. बादशाह सलामत को देखते ही प्रत्येक व्यक्ति आधा झुक जाता. ताज दरवाजा पार कर के शाहजहां ने एक बार ताजमहल की इमारत को देखा और ईसा के पीछे पीछे झपट चला. कलाकार ने अपने आदमियों से कुछ पूछा.

ताज के द्वार पर पहुंच कर ईसा ने कहा, "जहांपनाह, सब लोगों को यहीं छोड़ दें और बिना आवाज किये अकेले तशरीफ ले चलें."

सब लोग पीछे छोड़ दिए गए. ईसा और शाहजहां सीढ़ियां चढ़ कर जालीदार कमरों में पहुंचे—आहिस्ता आहिस्ता, दबे पैरों, केवल

जालियों से हवा टकरा कर शब्द उत्पन्न कर रही थी. मगर उस शब्द में भी एक विचित्र गंभीरता थी. बुढ़िया अब तक उसी अवस्था में ज्यों की त्यों खड़ी थी. आंखें उसी जाली की तरफ थीं. ईसा ने होंठों पर उंगली रख कर बुढ़िया की ओर इशारा किया. फिर फुसफुसा कर अत्यन्त धीमे स्वर में बोला : "जहांपनाह इस खातून को पहचानते हैं?"

शाहजहां ने भी उसी स्वर में कहा, "हां, यह तो बदरुन्निसा है. पर, या खुदा, यह कितनी बदल गई है!" फिर ईसा को लक्ष्य कर के कहा, "पर, बानो कहां है? यहां तो दिखाई नहीं देती."

ईसा ने कहा, "इस बुजुर्ग खातून से पूछिए, जहांपनाह. यह मल्का मुमज्जमा से बातें कर रही थी."

शाहजहां को हैरत हुई. उस ने स्वर को तेज कर के कहा :

"खानम, तुम ने बानो को देखा है?

बुढ़िया की ओर से इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला. बादशाह ने आवाज को जरा और तेज कर के फिर से प्रश्न को दोहराया. किन्तु प्रश्न जालियों से हो कर बाहर निकल गया. उस ने प्रश्नसूचक दृष्टि से ईसा की ओर देखा. ईसा ने फिर धीमे से कहा, "आगे बढ़ कर पूछिए, जहांपनाह."

शाहजहां आगे बढ़ा और फिर वही सवाल किया. जवाब न पा कर उस ने बुढ़िया का कंधा पकड़ कर हिलाने का इरादा किया. किन्तु हाथ लगाते ही, किसी अत्यंत सूक्ष्म संतुलन पर स्थित, कठोर काष्ठ-प्रतिमा की तरह वृद्धा का अचेत शरीर फरश पर ढह पड़ा. फिर भी उस की मुद्रा ज्यों की त्यों बनी रही, आंखें जैसी की तैसी खुली रहीं. झपट कर ईसा ने उस की नब्ज पर हाथ रखा.

शाहजहां वेदनापूर्ण स्वर में चिल्ला पड़ा : "बानो, बानो! ईसा, कहां है, बानो? तुम ने हम से वादा किया था कि बानो यहां मौजूद है."

बुढ़िया की नब्ज छोड़ कर ईसा धीरे धीरे सीधा खड़ा हुआ. अत्यंत शांतिपूर्वक उस ने गर्वीले कलाकार की भांति शाहजहां की आंखों से आंखें

मिलाईं और नपेतुले शब्दों में बोला :

"जहांपनाह, आप की बानो ताज के हर पत्थर में, हर फूल में, हर कोने में जीवित है. मगर उसे वही देख सकता है जिस के मन में उस के प्रति पवित्र और अनवरत प्रेम की धारा बह रही हो. जिस के हृदय में वह धारा प्रवाहित थी उस ने उसे देखा, बातें की; और जब इतने से भी जी न भरा, तो उस के साथ साथ लोप हो गई. पिछले बीस बरसों में खूनखराबी, युद्ध, मारकाट और जयपराजय के इतने तूफानों में आप का मन उलझा रहा कि काल ने अवसर पा कर उस पर से बानो की मुहब्बत को रगड़ कर पोंछ डाला. इसी लिए न बानो अब आप को दिखाई दी, न आगे कभी देगी. यह आने वाला संसार बताएगा कि यह ईसा का अपराध था या शहंशाह शाहजहां का."

शाहजहां अवाक् था.

कहते हैं ईसा को बहुत अधिक पुरस्कार मिला. शायद वह इतना अधिक न हो कि दूसरा ताजमहल बन सके. शायद तुर्किस्तान पहुंचने तक वह जीवित ही न रहा हो. जो भी हो, मगर मुमताजमहल से सच्चा प्रेम करने वाली उस सहेली का मकबरा ताज के दक्षिणी दरवाजे की दाईं तरफ, मुमताजाबाद की दिशा में, आज भी उस के स्मारक के रूप में खड़ा है. वह ताज से अभिन्न है, ताज का अंतिम नग है.

बंधक पुत्र

सन् १७९२ ई० के जनवरी के दिन थे. लार्ड कार्नवालिस के सैनिक कैम्प कावेरी की दोनों धाराओं के बीच पड़े हुए थे. मैसूर का शेर घिर गया था. अंगरेज़ों की सेना अपार थी. लार्ड का दिल एक इंच ऊपर उठा हुआ था, मगर सेना के सिपाहियों में भय था. टीपू सुलतान एक भयानक नाम था. उस ने कार्नवालिस से संधि की प्रार्थना की थी. किंतु अंगरेज़ यदि संधि के काग़ज़ों को फ़ाइलों के नीचे दबा देने में सिद्धहस्त थे, तो टीपू भी उन्हें पंसारी की पुड़िया से अधिक महत्व नहीं देता था.

लार्ड कार्नवालिस से संधि की शर्तें पा कर सदर दीवान करामतुल्लाखां की सफ़ेद दाढ़ी बुरी तरह कांपने लगी थी. आंखें फटी रह गई थीं. उसी दशा में संधि के काग़ज़ों को अंगरखे के अस्तर के नीचे छिपाए वह महल के उस भाग की ओर झपट चले, जहां एक रमने में टीपू सुलतान के दोनों शहज़ादे शाही महल से संबंधित अन्य बच्चों के साथ खेल रहे थे. उन शहज़ादों को खेलाने वाली थी एक बूढ़ी और जर्जर स्त्री बी फ़ातिमा. छोटे शहज़ादे मुजउद्दीन की उमर का ही उस का एक नाती था नूरइलाही, जब कि बड़े शहज़ादे अब्दुलख़ालिक के कंधे को सदर दीवान करामतुल्ला का बेटा हुसैन कादिर अपने कंधे से छूता था.

बी फ़ातिमा एक छोटे से मोढ़े पर रमने के एक कोने में बैठी हुई बच्चों का खेल देख रही थी. दीवान ने मोढ़े के पीछे पहुंच कर बहुत धीमे स्वर में पुकारा : "बी साहब!"

वृद्धा ने चौंक कर पीछे देखा और उठने का उपक्रम करते हुए बोली, "कौन, दीवान साहब! आईए, आईए, तशरीफ़ रखिए."

"नहीं, बैठने का वक्त नहीं, बी साहब," सदर दीवान ने धीमे लहजे में ही कहा. "अब बच्चों का खेल बंद करा दीजिए. आख़िरी वक्त आ

पहुंचा है. चौबीस घंटे के भीतर भीतर सारे श्रीरंगपट्टम पर तोपों का धुंआं छा जाएगा. इन बच्चों को शरण लेने के लिए न जाने कहां कहां भटकना पड़ेगा. इन्हें तैयारी करने दीजिए."

बी फ़ातिमा घबरा कर खड़ी हो गई. उस के झुर्रियों भरे चेहरे की प्रत्येक सलवट पर करुणा थिरकने लगी. वह बोली, "खुदा रहम करे....! क्या लड़ाई यहां तक आ पहुंची?"

"हां, बी साहब," दीवान साहब ने मुंह लटका कर कहा, "आ ही पहुंची है. थोड़ी सी देर है. मैसूर की इस शानदार राजधानी का शीराज़ा बिखर जाएगा. एक ऐसी मारकाट मचेगी, जिस की मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी. एक ऐसा शोर बरपा होगा, जिस की आवाज़ दुनिया के कोने कोने तक सुनाई देगी और हिन्दुस्तान का यह कोना भी सदियों के लिए गुलाम हो जाएगा..."

बी फ़ातिया झरे हुए वृक्ष की तरह निष्कंप खड़ी रह गई...एक अस्पष्ट सी बुदबुदाहट उस के मुंह से निकली: "या अल्लाह! मेरे बच्चे....! मेरे शहज़ादे, मेरे कादिर, खुदा की प्यारी मेरी बेटी की आखिरी निशानी...! इन का क्या होगा?"

सदर दीवान को इस बुढ़िया पर दया आई. वह अपने पति की बेवफ़ाई से लुटीपिटी एक औरत थी. उस की भरी जवानी में एक लड़की उस की गोद में दे कर उस का पति उस की सौत के साथ करनाटक चला गया था. फ़ातिमा ने दिन के समय पथ निहार निहार कर और रात के समय दिये जला जला कर एक युग तक रूठे हुए पति की प्रतीक्षा की. लेकिन तूफ़ान के तिनके की तरह वह ऐसा बिछुड़ा कि फिर न लौटा. फ़ातिमा के चेहरे पर समय की रेखाएं पड़ती चली गई और उन लकीरों पर हंसती-खिलखिलाती उस की लड़की बड़ी होती चली गई. उस ने बेटी की शादी की. लेकिन दो ही साल बाद एक लड़के को जन्म देकर वह भी ज़मीन के परदे से उठ गई. दामाद टीपू की फ़ौज में अंगरेज़ों से लड़ते लड़ते मारा गया. अपने नाती नूरुल्लाह को बूढ़ी बी फ़ातिमा ने पालपोस

कर आठ बरस का किया...और आज उस के बुझे हुए चिराग़ का यह आखिरी गुल भी मद्धिम पड़ रहा था.

गले का अवरोध गटकते हुए बूढ़े दीवान ने कहा, "बी साहब, इन बच्चों की तरफ़ बेरहम फिरंगियों की शकल में एक बड़ा भारी जिस्र बढ़ता चला आ रहा है. मैसूर के लाखों बच्चों को बचाने के लिए उस के जबड़े में हमें दो बच्चों को सौंपना है. उन दो कुरबानियों को चुनने का काम आप के जख्मी दिल पर आ पड़ा है...."

"आप क्या कहना चाहते हैं?" बी फ़ातिमा ने अपनी दुःखांत स्मृतियों के बोझ से दब कर कराहते हुए पूछा.

"दो बच्चे, फिरंगियों के हाथों में सौंपने के लिए, ताकि वे उन्हें मार कर खा जाएं! मैं दोनों शहजादों को चाहता हूं," दीवान ने अटकते हुए कहा.

"नहीं, जीते जी मैं उन मासूम बच्चों की तरफ किसी की नजर भी न पड़ने दूंगी," बी फ़ातिमा ने कहा.

"आह! बी फ़ातिमा, तुम कितनी भोली हो! बदकिस्मती ने हमेशा तुम्हारे अनजाने में ही तुम्हारी दौलत चुराई है. अब भी तुम्हें अपने पर इतना ऐतबार है?"

बी फ़ातिमा का धीरज टूट गया. आंसुओं के बड़े बड़े डोरे उस के नेत्रों से ढल कर गालों की झुर्रियों में समा गए. भरे हुए गले से उस ने तेज़ आवाज़ में पूछा, "फिरंगियों को ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी, दीवान साहब, कि उन्हें जानवरों का गोश्त छोड़ कर इनसान के बच्चों का गोश्त चाहिए?"

"जानवरों के लिए इनसान भी एक लजीज जानवर होता है, बी साहब. काश कि आप को राजनीति के असूलों का पता होता....जल्दी बोलिए, वक्त बीता जा रहा है."

"मुझे इस मुई राजनीति का क्या पता?" बुढ़िया ने कहा, "पर, दीवान साहब, आप तो इतने अक्लमंद हैं! क्या कोई ऐसी तरकीब नहीं

कि इन शहज़ादों को बचाया जा सके?"

"तरकीब....? तरकीब तो निकल ही आती है, बी साहब. मगर उस तरकीब की कीमत भी कम नहीं है. मैं आप से ही पूछता हूं, क्या आप अपने जिगर के टुकड़े नूरइलाही को शहज़ादा मुजउद्दीन की जगह खड़ा कर सकती हैं?"

वृद्धा ने पलकें मींच कर आंखों के शेष पानी को निकाल दिया। फिर बोली, "यह सवाल तो आप अपने से ही पूछिए. क्या आप अजीज़ हुसैन कादिर को शहज़ादा अब्दुलखालिक की जगह खड़ा कर सकते हैं?'

"क्या मेरा जवाब ही आप का जवाब होगा?" दीवान ने विचित्र शांति के साथ पूछा.

"हां," वृद्धा ने धुंधली नज़र से बच्चों के अस्पष्ट समूह को देखते हुए कहा.

"तो फिर मेरा जवाब है 'हां'. बी साहब, हम अपने बच्चों की क़ुरबानी दे कर मैसूर के लाखों नरम दिल वाले मां-बापों के सामने एक मिसाल रख देंगे. वह मिसाल उन के दिलों में चिनगारियां फूंक देगी और उन चिनगारियों की इकट्ठी आग फिरंगियों के कैम्पों को फूंक कर राख कर देगी."

बी फ़ातिमा स्थिर खड़ी रही. दो क्षण बाद उस ने अपनी भाग्य-हीनता का पूरा लेखाजोखा कर लिया और अंतिम निर्णय देते हुए बोली, "तो फिर ऐसा ही हो."

"ऐसा ही होगा," उस के निर्णय पर मोहर लगाते हुए सदर दीवान ने कहा. "मैं इन दोनों बच्चों को अपने साथ सुलतान के पास ले जाऊंगा. उन्हें बुलाईए."

यंत्रचालित सी बुढ़िया बच्चों की तरफ़ बढ़ गई. कुछ ही देर में वह नूरइलाही और हुसैन कादिर के हाथ पकड़े आती दिखाई दी. दोनों बच्चों ने दीवान साहब को देखते ही आदाब कहा. दीवान ने उन दोनों के सिरों पर अपना एक एक हाथ रख दिया और बोले, "चलो बेटा,

आज तुम दोनों का इम्तहान है. खुदा तुम्हें इस इम्तहान में कामयाब करे."

आज्ञाकारी लड़कों की भांति दोनों बच्चों ने सिर हिलाए और दीवान साहब के पीछे-पीछे चल दिए. कुछ दूर चल कर दीवान साहब ने उन दोनों बच्चों को अपने से सटा लिया और बोले, "मेरे बच्चों, तुम लोगों की शिक्षा-दीक्षा और भोलेपन पर मुझे कितना घमंड है! तुम ने यह भी नहीं पूछा कि वह इम्ताहन कैसा होगा !"

"कैसा होगा वह इम्तहान, अब्बाजान?" हुसैन कादिर ने पूछा.

"मेरे लाडलों, हमारी तोपों में गोलों की कमी पड़ गई है. हमें ऐसे इनसानों की जरूरत है, जिन के दिलों में उन गोलों से भी ज्यादा आग हो, जिन्हें उन तोपों के मुंह में भर कर हम दुश्मन पर छोड़ सकें. सुलतान चाहते थे कि पहले दोनों शहज़ादों पर यह प्रयोग कर के देखा जाए. मगर मेरा ख्याल था कि उन दोनों से ज्यादा तुम्हारे दिलों में अपने वतन की आग है. बोलो, क्या मेरा यह ख्याल ग़लतहै?"

दोनों बच्चे सकते-से में खड़े रह गए. जिन्नों और भूतों से लड़ने वाले शहज़ादों की कहानियां उन्हों ने सुनी थी. कई बार उन्हों ने उन शहज़ादों की जगह अपने को रख कर मधुर कल्पनाएं की थीं. मगर उन कल्पनाओं को संजोने में कोई ख़तरा नहीं था. आखिर में तो वे शहज़ादे सारी आपदाओं से बच-निकल कर सुंदर सुंदर राजकुमारियों से विवाह कर लेते थे. मगर यह परीक्षा एक भिन्न प्रकार की परीक्षा थी. इस में बच-निकलने की कोई सूरत ही नहीं थी. लेकिन उन जादूगरों से लड़ने वाल शहज़ादों ने भी तो कभी यह नहीं सोचा था कि वे बच निकलेंगे. फिर तो ठीक है. अगर उन्हें बचना होगा, तो तोपों के मुंह से भी बच जाएंगे. नहीं बचना होगा, तो उन की एक अलग कहानी लिखी जाएगी. उन के साथी-संगी ऐसे बच्चों की कहानी सुनेंगे, जो किसी दुर्दान्त राक्षस के एक ही वार से नष्ट हो गए. सुनने वाले बच्चों का मन उदास तो होगा, पर यों यह कहानी भी तो कोई बुरी कहानी नहीं.

नूरइलाही ने कहा, "मैं तैयार हूं, आली हज़रत."

"और मैं भी," हुसैन कादिर ने कहा.

दीवान साहब ने दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगा कर प्यार किया और उठते हुए बोले, "तो आओ, हमें सुलतान को इसके लिए तैयार करना है."

कुछ ही देर में दोनों बच्चों के साथ दीवान साहब शेर की मांद में पहुंच गए. हैदरी तलवार दीवार पर लटक रही थी. टीपू सुलतान एक अंगरेजी तोप के नमूने की परीक्षा कर रहा था. हथियारों का निर्माण करने वाला एक बड़ा कारीगर कुछ दूरी पर अदब से खड़ा उस तोप के नमूने की बारीकी बता रहा था. दीवान साहब ने दरवाजे पर ही दो-जानू झुकते हुए अर्ज किया, "गुलाम कोरनिश बजा लाता है, जहाँपनाह."

"ओह! दीवान साहब! वाह! अज़ीज़ों, तुम दोनों इस वक्त दीवान साहब के साथ यहां कहां?" बच्चों की ओर संकेत कर के टीपू ने पूछा. "क्या दीवान साहब तुम लोगों को भी दुनियावी झंझटों में घसीटे बिना नहीं रहे?"

दोनों बच्चों ने घुटनों के बल बैठ कर सुलतान का सम्मान किया और हुसैन कादिर बोला, "जहांपनाह के इकबाल के सदके."

कद्दावर टीपू मचल कर आगे बढ़ा. उस ने दोनों बच्चों को गोद में उठा लिया और बोला, "ये बच्चे उस तहज़ीब के खंभे हैं, जिस के साये में हम दुश्मनों से लड़ रहे हैं, खुदा इन खंभों को बनाए रखे. कहिए, दीवान साहब, लार्ड ने कोई खबर भेजी?"

"जहांपनाह," दीवान साहब ने संकेत-सूचक दृष्टि से उस कारीगर की ओर देखा, जो वहां पहले से ही खड़ा सुलतान को तोप की बारीकियां समझा रहा था. वह सिर झुका कर उसी समय बाहर निकल गया. उस के जाते ही दीवान ने कहा, "बहुत बुरी खबर है, हुज़ूर."

"हम सुनने के लिए तैयार है," टीपू ने कहा. "जब हम ने सुलह की शर्तें रखने के लिए दुश्मन को मौका दिया था, तभी हमारा दिल

छलनी हो चुका था. उस में अब और जख्मों के लिए जगह ही खाली नहीं है..." और कहते कहते उस ने बच्चों को सावधानी के साथ गोदी से नीचे उतार दिया.

"जहांपनाह," दीवान साहब ने कहा. "फिरंगियों ने उन जख्मों पर छिड़कने के लिए नमक भेजा है."

"और आप को डर है कि उस नमक की कचोट से तिलमिला कर हमारी हिम्मत जवाब दे जाएगी! याद रखिए आप हैदरअली के बेटे से बात कर रहे हैं. जो खबर आई हो उसे बयान कीजिए."

"फिरंगियों ने लड़ाई के मुआवजे में तीन करोड़ फनम और मैसूर की आधी सल्तनत मांगी है, जहाँपनाह!" दीवान साहब ने कंपित स्वर में कहा.

घृणा से टीपू के होंठ फैल गए. उस ने कहा, "हारे हुए खिलाड़ी से उस का खेत और पकी फ़सल माँगी जा रही है. अगर वे इसे हजम कर सकें, तो यह उन का हक़ है. हमारा हक़ लड़ाई के मैदान में हम से छिन चुका है. यही चीज थी, जिस के लिए आप थर्रा रहे थे? याद रखिए कि उन्हों ने हमारे बदन पर खाल और हमारे दिल के भीतर नफ़रत की आग जलती छोड़ दी है, और यही उन की सब से बड़ी भूल है. जन्नतनशीं हैदरअली के वतन में इन दो चीजों की कीमत बहुत बड़ी है."

"नहीं, उन्हों ने भूल नहीं की है, जहाँपनाह," बूढ़े दीवान ने उसी प्रकार विचलित स्वर में कहा, "इस आग की लपट उन तक न पहुंच पाए, वह जहांपनाह के दिल में और भी जोर से सुलग कर उसे राख कर दे, इस के लिए उन्हों ने जहांपनाह के दिल की गरमी भी को गिरवी माँगा है."

"आप क्या कहना चाहते हैं?" टीपू ने सख्त हो कर पूछा.

बूढ़ा जरा आगे बढ़ गया. फिर सहमे हुए शब्दों में बोला, "फिरंगियों ने जहांपनाह को मायूस और बेइज्जत करने के लिए शहजादा अब्दुलखालिक और शहजादा मुजउद्दीन को अपने यहां गिरवी रखने की मांग की है..."

"क्या!" टीपू की आंखें क्रोध और घृणा के अपूर्व मिश्रण से फैल गईं. "करामतुल्ला साहब, आप होश में हैं?"

बूढ़े दीवान ने गरदन झुकाई और कहा, "यही ताज्जुब है, जहांपनाह, कि बंदा अभी तक होश में है!—शायद इसलिए कि वह होश अब नहीं रहा, जो बात बात में बेहोश हो जाता था." इस के साथ ही उन्हों ने अपने अंगरखे के भीतर से उन कागज़ों को बाहर निकाला, जिन को दस्तखत और सील करने के लिए फिरंगियों ने प्रस्तावित रूप में भेजा था. आगे बढ़ कर उन्हों ने उन कागज़ों को सुलतान के सामने पेश कर दिया.

टीपू सुलतान ने कागज़ों पर एक सरसरी नज़र डाली. क्रोध से उस के नथुने फूल गए. तड़प कर उस ने कहा, "दीवान साहब, दुश्मन से सुलह की दरख़ास्त कर के हम ने अपनी ज़िंदगी की सब से बड़ी ग़लती की थी. उस ने इस का मुनासिब मुआवज़ा हमें दिया है. कुछ पल के लिए हम भूल गए थे कि हम बादशाह नहीं हैं. सिपाही हैं. दुश्मन ने हमें इस की याद दिलाई है. इस के लिए हम लड़ाई के मैदान में अपना सब कुछ हार कर भी उस का शुक्रिया अदा करेंगे."

"जहांपनाह," वज़ीर करामतुल्ला ने कहा, "अगर इजाज़त हो, तो गुलाम कुछ अर्ज़ करे."

"इस में अर्ज़ करने को कुछ बाकी रह गया है? एक वक्त था कि हम ने इन्हीं अंगरेज़ों को नाकों चने चबवाए थे. ये वे ही अंगरेज़ हैं, जिन्हों ने मरहूम अब्बाजान के साथ की हुई सुलह तोड़ी थी. इन लोगों के लिए दीन, ईमान और राजनीति कोई माने नहीं रखते. क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम अपने जान से अज़ीज़ बच्चों को इन दरिन्दों के हवाले कर दें?"

"जहांपनाह," बूढ़े दीवान ने फिर कहा, "गुलाम कुछ अर्ज़ करना चाहता है."

"ओह!" टीपू सुलतान का अचानक उमड़ा हुआ क्रोध कुछ नीचे उतरा. "कहिए, आप क्या अर्ज़ करना चाहते हैं?"

"अगर हम ने फ़ौरन् दुश्मन से फिर लड़ाई छेड़ी, तो इस के माने होंगे कि शहज़ादा अब्दुलखालिक को कभी मैसूर का सुलतान होने का मौका नहीं मिलेगा. लुटेरे मराठे श्रीरंगपट्टम की ईंट से ईंट बजा कर उस की गोलकों में से सोना निकालेंगे और मैसूर की तहज़ीब के इन खम्भों को जलती आग में झोंक देंगे. जहांपनाह सुलताने-आला हैं, इसलिए जहांपनाह के हुक्म की तामील होगी, मगर दुश्मन हर हालत में कामयाब होगा."

टीपू सुलतान ने तेज़ नज़र से दीवान की ओर देखा और बोला, "तो क्या आप हम से यह कहना चाहते हैं कि हम एक ऐसी बेइज़्ज़ती को बर्दाश्त करें, जो आज तक शायद दुनिया के किसी बादशाह को बर्दाश्त नहीं करनी पड़ी होगी? उन लोगों के हाथों हम यह बेइज़्ज़ती सहन करें, जो हमलावर बन कर हमारे मुल्क में सिर्फ़ लूटमार करने की ग़रज़ से आए हैं? आप हमें जीने की सीख देना चाहते हैं! क्यों? क्या हमें मरना नहीं आता?"

"जहांपनाह, बंदा खुदा से यह सब से बड़ी दुआ मांगता है कि आप की मिसाल ले कर लोग मरना सीखें. लेकिन बेईमान हमलावरों के हाथों मरना और डोम के हाथों मरना एक ही चीज़ के दो नाम हैं. दुनिया की सारी सभ्यता और सदाचार को ताक़ पर रख कर जब अत्याचारी दूसरे के हरे-भरे बसेरे पर हमला करता है, तो उस बसेरे के मालिक को यह हक़ हासिल हो जाता है कि वह हाथों से ज्यादा दिमाग़ से काम ले."

"आख़िर आप चाहते क्या हैं?" टीपू सुलतान ने खीझ कर पूछा.

"जहांपनाह, मैं चाहता हूँ कि हुज़ूर फिरंगियों की इन नामाकूल शर्तों को ज्यों-की-त्यों मान लें और इन पर मोहर लगा दें...."

"और शहज़ादों को इन बेरहम सफ़ेद गिद्धों के पास गिरवी रख दें?" टीपू ने कड़े शब्दों में पूछा.

"बिलकुल नहीं, जहांपनाह," दीवान ने कहा. "शहज़ादे जहांपनाह के पास रिआया की बेशकीमत अमानत हैं. इस अमानत को गंवाने

"क्या!" टीपू की आंखें क्रोध और घृणा के अपूर्व मिश्रण से फैल गईं. "करामतुल्ला साहब, आप होश में हैं?"

बूढ़े दीवान ने गरदन झुकाई और कहा, "यही ताज्जुब है, जहांपनाह, कि बंदा अभी तक होश में है!—शायद इसलिए कि वह होश अब नहीं रहा, जो बात बात में बेहोश हो जाता था." इस के साथ ही उन्हों ने अपने अंगरखे के भीतर से उन कागज़ों को बाहर निकाला, जिन को दस्तख्त और सील करने के लिए फिरंगियों ने प्रस्तावित रूप में भेजा था. आगे बढ़ कर उन्हों ने उन कागज़ों को सुलतान के सामने पेश कर दिया.

टीपू सुलतान ने कागज़ों पर एक सरसरी नज़र डाली. क्रोध से उस के नथुने फूल गए. तड़प कर उस ने कहा, "दीवान साहब, दुश्मन से सुलह की दरख्वास्त कर के हम ने अपनी ज़िंदगी की सब से बड़ी गलती की थी. उस ने इस का मुनासिब मुआवज़ा हमें दिया है. कुछ पल के लिए हम भूल गए थे कि हम बादशाह नहीं हैं, सिपाही हैं. दुश्मन ने हमें इस की याद दिलाई है. इस के लिए हम लड़ाई के मैदान में अपना सब कुछ हार कर भी उस का शुक्रिया अदा करेंगे."

"जहांपनाह," वज़ीर करामतुल्ला ने कहा, "अगर इजाज़त हो, तो गुलाम कुछ अर्ज़ करे."

"इस में अर्ज़ करने को कुछ बाकी रह गया है? एक वक्त था कि हम ने इन्हीं अंगरेज़ों को नाकों चने चबवाए थे. ये वे ही अंगरेज़ हैं, जिन्हों ने मरहूम अब्बाजान के साथ की हुई सुलह तोड़ी थी. इन लोगों के लिए दीन, ईमान और राजनीति कोई माने नहीं रखते. क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम अपने जान से अज़ीज़ बच्चों को इन दरिन्दों के हवाले कर दें?"

"जहांपनाह," बूढ़े दीवान ने फिर कहा, "गुलाम कुछ अर्ज़ करना चाहता है."

"ओह!" टीपू सुलतान का अचानक उमड़ा हुआ क्रोध कुछ नीचे उतरा. "कहिए, आप क्या अर्ज़ करना चाहते हैं?"

"अगर हम ने फ़ौरन् दुश्मन से फिर लड़ाई छेड़ी, तो इस के माने होंगे कि शहज़ादा अब्दुलखालिक को कभी मैसूर का सुलतान होने का मौका नहीं मिलेगा. लुटेरे मराठे श्रीरंगपट्टम की ईंट से ईंट बजा कर उस की गोलकों में से सोना निकालेंगे और मैसूर की तहज़ीब के इन खम्भों को जलती आग में झोंक देंगे. जहांपनाह सुलताने-आला हैं, इसलिए जहांपनाह के हुक्म की तामील होगी, मगर दुश्मन हर हालत में कामयाब होगा."

टीपू सुलतान ने तेज़ नज़र से दीवान की ओर देखा और बोला, "तो क्या आप हम से यह कहना चाहते हैं कि हम एक ऐसी बेइज्ज़ती को बर्दाश्त करें, जो आज तक शायद दुनिया के किसी बादशाह को बर्दाश्त नहीं करनी पड़ी होगी? उन लोगों के हाथों हम यह बेइज्ज़ती सहन करें, जो हमलावर बन कर हमारे मुल्क में सिर्फ़ लूटमार करने की ग़रज़ से आए हैं? आप हमें जीने की सीख देना चाहते हैं! क्यों? क्या हमें मरना नहीं आता?"

"जहांपनाह, बंदा खुदा से यह सब से बड़ी दुआ मांगता है कि आप की मिसाल ले कर लोग मरना सीखें. लेकिन बेईमान हमलावरों के हाथों मरना और डोम के हाथों मरना एक ही चीज के दो नाम हैं. दुनिया की सारी सभ्यता और सदाचार को ताक़ पर रख कर जब अत्याचारी दूसरे के हरे-भरे बसेरे पर हमला करता है, तो उस बसेरे के मालिक को यह हक़ हासिल हो जाता है कि वह हाथों से ज्यादा दिमाग़ से काम ले."

"आख़िर आप चाहते क्या हैं?" टीपू सुलतान ने खीझ कर पूछा.

"जहांपनाह, मैं चाहता हूँ कि हुज़ूर फिरंगियों की इन नामाकूल शर्तों को ज्यों-की-त्यों मान लें और इन पर मोहर लगा दें...."

"और शहज़ादों को इन बेरहम सफ़ेद गिद्धों के पास गिरवी रख दें?" टीपू ने कड़े शब्दों में पूछा.

"बिलकुल नहीं, जहांपनाह," दीवान ने कहा. "शहजादे जहांपनाह के पास रिआया की बेशकीमत अमानत हैं. इस अमानत को गंवाने

से पहले प्रजा के पास गंवाने को नक़द हीरे हैं. ये दो बहादुर बच्चे शहज़ादों की जगह लेने के लिए तैयार हैं. इन की गरदन पर तलवार होगी, तब भी इन के मुंह से उफ़ नहीं निकलेगी."

"क्या!" आश्चर्य से टीपू सुलतान के हाथ से संधि के काग़ज़-पत्र छूट पड़े. "आप हम से यह कहना चाहते हैं कि हम बच्चों में भेद करें?" उस ने अब तक चुपचाप खड़े उन बच्चों को समेट कर अपने से सटा लिया.

बूढ़ा दीवान एक फीकी हंसी हंसा और बोला, "जहांपनाह, आप को यह भेद करने की जरूरत नहीं है. शहज़ादों में और इन बच्चों में जो भेद है, वह ताज और टोपी में खुदा ने पहले से ही पैदा कर रखा है. हुज़ूर को यह भेद सिर्फ़ पहचानने की जरूरत है. मैसूर अपने दोनों शह-ज़ादे नहीं खो सकता, अपने दो बच्चे खो सकता है. कल को जब हमें हमलावरों से लड़ने की ताकत हासिल होगी, तो उन लोगों के पास गिरवी रखे ये दो नाचीज़ बच्चे आड़े नहीं आएंगे, शहज़ाये आड़े आ जाएंगे और बिना लड़े जहांपनाह कभी इस बेइज्ज़ती के दाग़ को अपने दामन से नहीं धो सकेंगे."

"बिना लड़े कभी हम इस बेइज्ज़ती के दाग़ को अपने दामन से नहीं धो सकेंगे!" छत की ओर ताकता हुआ टीपू सुलतान बुदबुदाया और उन कस कर थामे हुए बच्चों पर से उस की पकड़ ढीली पड़ गई. फिर वह चेतन हो कर बोला, "लेकिन अगर दुश्मन को इस चाल का पता चल गया?"

"दुश्मन को इस चाल का पता कभी नहीं चलेगा, जहांपनाह. महल के कर्मचारियों के अलावा किसी ने शायद ही शहज़ादों को आज तक देखा हो."

"खुदा जानता है कि हम अपने दिल पर कितना जब्र कर के इस बात को मंज़ूर कर रहे हैं, दीवान साहब! हमें आप के खानदान और बी फ़ातिमा की खिदमतों पर फ़ख्र है." फिर उस ने हुसैन कादिर और

नूरइलाही के कन्धों पर हाथ रख कर उन्हें झकझोरा, "मेरे बच्चों, तुम्हें अपना फ़र्ज़ मालूम हो गया? क्या तुम दोनों में इतनी हिम्मत है कि तुम फिरंगियों के बीच बेयारोमददगार रह सको?"

दोनों बच्चों ने घुटनों के बल बैठ कर सुलतान के दामन को चूमा और बोले, "हम अपने फ़र्ज़ को जान दे कर भी पूरा करेंगे, जहांपनाह."

दीवान साहब ने सिर झुका कर कहा, "गुलाम को जहांपनाह के फैसले से खुशी हुई. अब दीवान की हैसियत से मेरा काम आसान हो गया."

जब बूढ़ा दीवान दोनों बच्चों को साथ ले कर वापस बाग़ में आया, तो उस ने देखा कि बी फ़ातिमा उसी प्रकार उसी मोढ़े पर बैठी है. बच्चे उस की चारों ओर जमा हैं और उस से तरह तरह के सवाल पूछ रहे हैं. मगर बी फ़ातिमा के आंसुओं की बाढ़ को रोकने में सब असमर्थ हैं. नूरइलाही ने जा कर उस के कदमों को पकड़ लिया और बोला, "नानीजान, हुजूर जहांपनाह ने हमारी खिदमत कबूल कर ली!"

बी फ़ातिमा केवल थोड़ा सा हिल कर रह गई. उस की नज़रें नूरइलाही पर टिक कर स्थिर हो गई. उस के चेहरे की झुर्रियों में कहां कहां परिवर्तन हुए इसे कोई लक्ष्य नहीं कर सका. उस सहृदय आया के लिए, जो शहज़ादों के जन्म से ही उन्हें खेलाती चली आ रही थी, यह कुरबानी कितनी अजीब, कितनी होलनाक और कितनी दुर्भावनाओं से भरी हुई थी, कौन कह सकता है? हां, उसे यह अनुभव हो रहा था कि कोई उस के दिल को एक सींख़ में पिरो कर आग पर गरम कर रहा है.

दीवान के चले जाने के बाद टीपू सुलतान संधि-पत्र पर लगाने के लिए सील गरम करने लगा. और जब वह उसे काग़ज़ पर जमाना ही चाहता था, तभी कोई पीछे से खिलखिला कर हंस पड़ा. सुलतान ने पीछे की ओर देखा. दीवार पर हैदरी तलवार के अतिरिक्त और कोई नज़र नहीं आया. उस ने दोबारा सील गरम कर के गलाने की कोशिश की, मगर फिर वही हंसी!—और टीपू एकदम पलट कर अपने पीछे

लटकी तलवार की ओर घूर घूर कर देखने लगा. उसे लगा मानो तलवार हिल रही थी और उस में से उस के स्वर्गीय पिता हैदरअली का स्वर निकल रहा था :

"टीपू, तेरा आखिरी वक्त आ गया है. तैयार हो जा...."

"यह आप क्या कह रहे हैं, अब्बाजान!" टीपू ने हैरान हो कर पूछा.

"हां, तेरा आखिरी वक्त आ गया है. ग़लत चाल चलने वाला सिपहसालार एक बार जीत सकता है, मगर कुरबानी से डरने वाला सिपाही कभी जिंदा नहीं रह सकता."

"मैं ने तो कुरबानी दी है, अपने जिगर के दो मासूम टुकड़ों को दार पर चढ़ा दिया है," टीपू बड़बड़ाया.

"टीपू, तू खुद को धोखा दे सकता है, मुझे नहीं दे सकता. मैं तेरा बाप हूं, तुझे खूब पहचानता हूं. जिन्हें तू अपने जिगर के टुकड़े कहता है वे तेरे जिगर के टुकड़े नहीं हैं. तू ने अपने जिगर के टुकड़ों में और उन में भेद किया है...."

टीपू नतमस्तक हो गया. फिर बोला, "शहज़ादे रिआया की अमानत हैं."

"...कितना हसीन ख्याल है!" हैदरअली के स्वर ने ठहाका लगाते हुए कहा. "क्या तू नहीं जानता कि तेरा बाप एक मामूली गडरिया था? उस वक्त न वह किसी की अमानत था और न तू. अमानत उसे कहते हैं, जिस पर साहूकार का प्यार न हो. तुझे अपने बच्चों से प्यार है. उन बच्चों से ज्यादा तू उन्हें प्यार करता है, जिन्हें उन की एवज़ फिरंगियों को सौंप रहा है! झूठ है. तू ने तो इस मोह में साधारण राजनीति को भी भुला दिया है, अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को ताक़ पर रख दिया है..."

"नहीं, नहीं, मैं ने खूब अच्छी तरह सोचा है," टीपू ने कहा.

"ओह! तो बता : क्या तू ने दुश्मन को इतना बेवक़ूफ़ नहीं समझा

कि वे जो चीज़ तुझ से गिरवी लेंगे उस की परख अपने चुने हुए पारखियों से नहीं कराएंगे? क्या तू ने यह देख लिया कि धोखा खा कर अगर उन लोगों ने तेरी तैयारियां पूरी होने से पहले ही हमला कर दिया, तो उन के गुस्से की आग इतनी ज़बरदस्त होगी कि तेरी इस सुंदर राजधानी के खूबसूरत बच्चों के धड़ भालों पर नज़र आएंगे!— और उस समय तेरे पास इतनी नैतिक शक्ति भी नहीं होगी कि तू हाथ उठा कर उन हत्यारों को हाथ रोकने के लिए कह सके?"

टीपू का सिर और भी झुक गया. "शायद मैं ने नहीं सोचा."

"क्या तू ने यह भी सोचा कि दुश्मन तेरी इस मक्कारी को अपनी जीत समझेगा, दुश्मन के लुटेरे साथी तेरी तबाही पर डफली बजाएंगे. और इतिहास तुझे कायर कह कर पुकारेगा? जहां तेरा सिर कटने की ज़रूरत है, वहां तू मुर्ग़ी की क़ुरबानी देना चाहता है! इस नकली क़ुरबानी को दे कर भी क्या तेरे दिल में दुश्मन के ख़िलाफ़ वही आग भड़कती रहेगी, जो बेटों की जुदाई में भड़कती? क्या तेरा दिल कमज़ोर नहीं हो जाएगा?"

"शायद !" टीपू के चेहरे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आईं.

"तो उठ. इस नकली क़ुरबानी को रद्द कर. इतिहास का यह दौर तुझ से तेरे बेटों की जुदाई चाहता है. उस की माँग को हंस कर मंज़ूर कर. तेरे त्याग को देख कर अगर तेरे देशवासियों ने त्याग करना सीखा, तो तेरी हार भी तेरी जीत होगी, तेरी मौत भी वतन की ज़िंदगी होगी. याद रख, चालबाज़ी जहां भी होगी वह कायरता की निशानी होगी. टीपू, तू हैदरअली का बेटा है. उस की तलवार की इज्जत न घटा. एक वक्त आएगा कि जो दुश्मन आज तेरे बेटों को तुझ से मांग रहा है, उसे अपने पीछे नज़र डालते हुए शरम आएगी. तू अपने बेटों को बंधक रखते डर रहा है! मगर तेरे देश का हर बेटा ग़रीबी, भुखमरी, महामारी, युद्ध और अकाल जैसे दुश्मनों के यहां बंधक है. आँखें खोल कर देख."

टीपू ने सहसा ही आंखें खोली. सामने दीवार पर हैदरी तलवार ज्यों-की-त्यों लटकी हुई थी. इस में कोई विचित्रता नहीं थी. हां, उस के हाथों में जो सील थी वह अब तक ठंढी हो चुकी थी. उस की आंखों में एक चमक आई और उस ने ताली बजाई. तुरन्त एक पहरेदार ने प्रवेश किया. टीपू ने सदर दीवान करामतुल्ला साहब को उपस्थित होने के लिए संदेश भेजा.

जब दीवान साहब ने टीपू के कक्ष में प्रवेश किया, तो देखा कि बहादुर सुलतान दरवाजे की ओर पीठ किए खड़ा है, नज़र हैदरी तलवार पर है, और संधि के कागज़ खुले रखे हैं. उन पर सील लग चुकी थी, हस्ताक्षर हो चुके थे.

"हुक्म हो, जहांपनाह?" दीवान साहब ने सिर झुका कर पूछा.

"हम ने अपना इरादा बदल दिया है," टीपू ने दृढ़ स्वर में कहा. "हैदरी तलवार को बट्टा नहीं लगेगा. यह हमारा अटल निश्चय है."

दीवान साहब ने आश्चर्य से एक बार टीपू की पीठ को और फिर हैदरी तलवार को देखा. एक परदा सा उन के दिल पर से उठता हुआ मालूम दिया. दिमाग पर से एक कुहरा सा हट गया, मुंह से निकला, "जो हुक्म, आलीजाह!"

"और हम चाहते हैं इसी वक्त दोनों मासूम बच्चों को तसल्ली दी जाए—ख़ास तौर से बी फ़ातिमा को..."

"जहांपनाह!" सहसा ही बूढ़े दीवान साहब तीव्र कंपित स्वर में बोले, "गुलाम को यह ख़बर देते हुए दुःख होता है कि बी फ़ातिमा इस दुःख भरी दुनिया से हमेशा हमेशा के लिए रुख़सत हो गई !"

टीपू की पीठ सहसा ही हिलती मालूम हुई, मगर उस की आंखों के आंसू आज तक कोई नहीं देख सका.

★

आटे के सिपाही

बरेली जिला जेल के काले सींखचों के पीछे जिस आदमी का शासन चलता था उस के बारे में बहुत सी किंवदंतियां प्रचलित थीं—यह कि अंगरेजी शासन की शह पर उस ने, कैदी बन कर आए कितने ही अनाज्ञाकारी दुर्दान्त डाकुओं को जेल के कारखाने की धधकती हुई भट्टियों में झोंकवा दिया था; यह कि कोई पेशेवर अपराधी ऐसा रहा होगा, जो रिहाई के समय जेलर की हत्या करने का संकल्प कर के न गया हो.

जेल की कसमों का बाहरी जीवन में पहुंच कर कितना महत्व रह जाता है, इस बात को छोड़ कर यहां ध्यान देने की बात केवल इतनी है कि तेईस सितंबर सन् तैतालीस की दोपहर को कुछ संयुक्त प्रांतीय राजनीतिक कैदी इसी जेलर की जेल में स्थानांतरित हो कर आए. बाहरी जीवन में सभी व्यक्तियों का अपना अपना विशिष्ट स्थान था. बाबू राजनारायण सिन्हा वकील, छुट्टो जी प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष, गिरदावरसिंह सनातन धर्म कालिज के प्रिंसिपल, चतुरसिंह हलवाई, कामरेड मुरारीलाल, कामरेड विनायक, क्रांतिकारी 'लंदनतोड़', जफ़रअली कांग्रेस से संलग्न मुस्लिम दल के सेक्रेटरी तथा अन्य.

जिस डेस्क पर अपराधियों के अंगूठों और उंगलियों के निशान लिए जाते हैं उसी के पास इन लोगों ने पूर्वी देहातियों की एक छोटी सी भीड़ भी देखी, जो आपस में अपनी बोली में चख चख कर रहे थे. सिन्हा साहब को जब यह मालूम हुआ कि ये लोग भी राजनीतिक बंदी हैं और इसी आंदोलन के सिलसिले में चुन कर लाए गए हैं, तो उन की सिकुड़ती हुई नाक जहां की तहां ठहर गई, मगर उन्हों ने हतप्रभ से हो कर अपने साथियों की तरफ़ देखा.

उसी समय जेलर के कमरे से जमादार लाखनसिंह निकल कर

आया और उस ने उस भीड़ की तरफ़ उंगली उठा कर ज़ोर से आज्ञा के स्वर में कहा, "ए, जोड़ाजोड़ा बैठो, जोड़ाजोड़ा!"

देहाती बंदी इस का मतलब नहीं समझे, इसलिए मुंह बा कर एक-दूसरे की ओर देखने लगे. जमादार ताब न ला कर आगे बढ़ा और उसने सब से आगे वाले देहाती को इस तरह से धक्का दिया कि वह ज़मीन पर लुढ़क गया और उस की कुहनी छिल गई. मगर जमादार ने इस ओर ध्यान न दे कर दूसरे को भी धक्का दे कर नीचे बैठाया और इस प्रकार सारी भीड़ मिनिट भर में दो के पीछे दो दो की एक पंक्ति बना कर बैठ गई. किसी के मुंह से ज़रा भी तो चूं की आवाज़ नहीं निकली.

वकील साहब के सब्र का प्याला लबरेज़ हो गया. उन्हों ने नाक की जुम्बिश से अपना चश्मा तनिक ऊपर उठाते हुए कहा, "ये राजनीतिक क़ैदी हैं, ताज्जुब है!"

जमादार ने उन की ओर घूर कर देखा, फिर बोला, "नया रंगरूट है! यहां गुरुप्रसाद जेलर का डंडा चलता है. सब मालूम हो जाएगा."

वकील साहब की कनपटी गरम हो गई. इस के बाद जमादार ने एक, दो, तीन, चार, पाँच... गिनती गिननी शुरू की और बैठे हुए सब क़ैदियों को खड़े कर के उस ने पिछले बन्द फाटक की छोटी सी खिड़की में से भीतर धकेल दिया. वकील साहब ने देखा कि पच्चीस-तीस देहा-तियों के उस समूह में केवल एक ही चौड़ी छाती वाला व्यक्ति था, जिस ने इस प्रकार बैठते और धकेले जाते देख कर जमादार की ओर आँखें तरेरी थीं. इन आँखों को देख कर जमादार ने कहा था, "चेहरे पर बहुत बड़ी बड़ी मूंछें रखता है, पहलवान!"

उसी समय पीछे से आवाज़ आई, "लाखनसिंह!"

सब लोगों की निगाहें घूम गईं. जेलर के कमरे के दरवाज़े पर बिरजिस पहने, बूट डांटे, कूल्हों पर हाथ रखे एक साँवले रंग का व्यक्ति खड़ा था. पेट थोड़ा आगे निकला हुआ था और मुंह पर कतरी हुई मक्खीनुमा मूंछें थीं. लाखनसिंह ने उस की पुकार के उत्तर में कहा, "हुज़ूर?"

वही जेलर था. उस ने कहा, "इन लोगों को बैठाओ!"

छुट्टो जी ने कहा, "बैठने की क्या ज़रूरत है? हम लोग खड़े-खड़े ही ठीक हैं..."

"नहीं!" जमादार ने ज़ोर से धमकाते हुए कहा. "गिनती होनी है. बैठो, जोड़ा जोड़ा, जोड़ा जोड़ा, जल्दी करो! जेलर साहब का हुक्म है."

"क्या आप लोग हिसाब में कमज़ोर हैं?" ज़फ़रअली ने कहा. "हम लोग बारह आदमी हैं. इसी तरह गिन लीजिए."

लाखनसिंह ने अपनी मूंछें हिलाई और जेलर की तरफ़ देखा कि इशारा हो और वह अपनी कार्यवाही दिखाए. जेलर ने लहजे को नरम, किन्तु आवाज़ को गला दबा कर मोटी बनाते हुए कहा, "देखिए याद रखिए कि यह बरेली ज़िला जेल है. यहाँ आदमी अकल से काम लेता है, तो पागल बना दिया जाता है. अगर आप लोग जेल के कायदे-कानून की इज्जत नहीं करेंगे, तो मुझ से बुरा कोई न होगा. वैसे मैं आप का गुलाम हूं."

लंदनतोड़ बिगड़े, "तो, गुलाम साहब, हम लोगों को सुभीते से भीतर जाने दीजिए. नहीं तो लंदन से पहले बरेली की ज़िला जेल टूटेगी."

जेलर ने एक क्षण के लिए लंदनतोड़ की ओर देखा. फिर लाखन सिंह की तरफ़ देख कर हुक्म दिया, "ऐ, इस आदमी को डंडाबेड़ी दे कर आज ही तन्हाई में पहुंचाओ. बाकी लोग जोड़ा जोड़ा बैठ जाएं!" और मानो अंतिम बार व्यवस्था दे कर जेलर कमरे के भीतर चला गया. प्रबल विरोधियों की तरह बाहर रह गये बारह सभ्य राजनीतिक बंदी और काल की तरह घूरता हुआ लाखनसिंह जमादार.

इस से पहले कि स्थिति बिगड़ती, वकील साहब ने प्रस्ताव रखा, "देखो जमादार साहब, हम लोग सभ्य आदमी हैं. अगर आप लोगों ने बेजा ज्यादती की, तो मरते मर जाएंगे, मगर बेइज्जती नहीं सहेंगे. अकल

से काम लो, बीच का रास्ता निकालो. हम लोग दो दो कर के लाइन बना कर खड़े हुए जाते हैं, तुम गिन लो. मगर बैठने की बात हम नहीं मानेंगे. कुछ करने से पहले जेलर साहब से पूछ आओ, वरना ऐसा न हो कि लेने के देने पड़ जाएं."

जमादार कुछ झिझका. लंदनतोड़ चिल्लाए, "वाह, वकील साहब! यह तो कुछ भी न रहा. नाक ऐसे न पकड़ी, घुमा कर पकड़ ली!"

जब जमादार ने इस बीच के प्रस्ताव का भी विरोध होते देखा, तो प्रस्ताव पर राय ले आने में ही उस ने शायद भलाई समझी. वह भीतर गया और वकील साहब ने लंदनतोड़ की अकल पर तरस खाते हुए कहा, "सिखतड़ों की तरह बातें करते हो! लड़ाई अंग्रेज सरकार से है या इन टुकड़खोरों से? कोयलों पर मोहरें लुटाने से फ़ायदा?"

कामरेड मुरारीलाल ने कहा, "तो फिर उन उजड्ड देहातियों ने ही क्या बेजा किया था, जिन पर आप ने ....!"

उसी समय जमादार बाहर आ गया. उस ने आते ही कहा, "अच्छा, इस बार तो माने लेते हैं, मगर आगे एक न सुनी जाएगी. जोड़े जोड़े खड़े हो जाओ!"

जमादार की इस भाषा को पी कर भी लोग 'जोड़े-जोड़े' खड़े हो गए. सहीसलामत शरीर बचा कर जब ये लोग अपने अपने फट्टे-कंबल, तसले-कटोरी ले कर और झुटन्ने पहन कर तीसरी चौहद्दी के भीतर नियत बैरक में पहुंचे, तो देखा कि देहाती उन से पहले वहां पहुंच कर दूलों[1] और भिर्रियों[2] में अपने अपने निवास स्थान बना चुके थे. शौचालय के पास की कुछ सीटें इन लोगों के लिए शेष बच गई थीं.

चतुरसिंह हलवाई के साथ साथ वकील साहब और प्रिंसिपल साहब ने भी दांत पीसे और चुपचाप स्थान चुन कर अपने अपने फट्टे-कंबल बिछाने लगे. मगर उस समय तो प्रायः सभी लोगों के हाथ से पकड़ी

---

१. सोने के लिए बना हुआ पक्का चबूतरा.

२. दो चबूतरों के बीच में बना हुआ नीचा, जंगलेदार स्थान.

हुई वस्तु छूट गई, जब उन्हों ने देखा कि एक देहाती राजनीतिक कैदी शौचालय के लिए बनी हुई दीवार के पीछे से घुटन्ना बांधता हुआ निकला —दिन में ही! यह देहाती वही चौड़ी छाती वाला पहलवान था. जब वह पास से गुज़रा, तो वकील साहब ने रोष के साथ उस से पूछा, "क्या नाम है जी तुम्हारा?"

"धन्नासिंह," पहलवान ने ठिठक कर उत्तर दिया.

"तो, भाई धन्नासिंह," वकील साहब बोले, "आज तुम दिन में गए सो गए, आगे कभी दिन में गए, तो हमारा असहयोग आंदोलन अंगरेज़ सरकार की बजाए तुम से छिड़ जाएगा!"

छुट्टो जी मुसकराए और ज़फ़रअली ने दांत निपोर कर धन्नासिंह को कटती नज़रों से देखा. धन्नासिंह यह कह कर आगे बढ़ गया, "मैं तो सिरफ़ दो बखत नियम से जाता हूं. इस बात पर तो भगवान भी रोक लगाता! नहीं"

शौचालय में से आने वाली बदबू को रोकने के मसले पर शाम तक इन राजनीतिज्ञों की बैठक चलती रही. तभी रसौढा आ गया और सब लोग अपने अपने तसले-कटोरियों में पनियाली दाल और भुजिया, और हाथों पर गिनती की तीन तीन रोटियां संभालने लगे. रोटियां देखते ही वकील साहब के रोएं खड़े हो गए क्यों कि रोटियां तंदूरी थीं, और यह बात वह पहले ही कहीं सुन चुके थे कि तंदूरी रोटियां ज़रूरत से ज्यादा हाज़िम होती हैं! इस के बाद, जब एक एक दो दो रोटी खा कर राजनीतिज्ञों के पेटों ने तोबा बोल दी, तो उन्हों ने घबराहट के साथ देखा कि देहाती बंधुओं में से अधिकांश तीनों-की-तीनों रोटियां निबटा चुके थे.

वकील साहब ने चिल्ला कर प्रिंसिपल साहब को उस ओर इशारा करते हुए कहा, "कहते हैं कि जब वाजिदअली शाह को फांसी देने के तरीके का सवाल पैदा हुआ, तो किसी ने कहा था कि गोली या रस्सी की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ़ पास से टोकरा लिए एक भंगिन को गुज़ार दिया जाए. दिमाग़ की नस फट जाएगी और लखनऊ का नवाब मर जाएगा.

पहले इस बात पर यकीन नहीं आता था, मगर मालूम होता है कि हम लोगों की मृत्यु भी विधाता ने इसी भाव लिखी है."

देहाती बंधुओं ने इस श्लेष को नहीं समझा. वहां चर्चा ही दूसरी चल रही थी. किस के घर की खेती कौन संभालेगा, किस की जोरू बच्चों सहित मायके चली जाएगी, किस की दर दर भटकेगी, किस के घरवाले ज़ख्मी पड़े हैं और किस के घरबार को पहले ही आग लग चुकी है—यही उस चर्चा का प्रधान रुख़ था. जोरू-जातों का नाम आते ही सहसा बैरक में एक और कांड हो गया. ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ सारी बैरक में गूंज गई.

इधर से राजनीतिक नेताओं की नज़रें उस ओर उठी, तो यह देख कर लगभग सभी ने दांतों तले उंगली दबा ली कि रोने वाला और कोई नहीं, धन्नासिंह पहलवान था. वकील साहब खड़े हो कर यह तमाशा देखने लगे. प्रिंसिपल साहब टूले पर चढ़ कर बैठ गए और चतुरसिंह भागा भागा धन्नासिंह के पास पहुंचा. जाते ही वह बोला, "इतने ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रहा हैं? किसी जी-जिनावर ने तो नहीं काट खाया?"

धन्नासिंह और भी फूट फूट कर रो पड़ा. पास वालों ने चतुरसिंह को समझाया कि उस के पीछे उस के बालबच्चे बेसहारा रह गए हैं. सिपाहियों ने उस के खेत को आग लगा दी, उस के घर का सामान लूट लिया, उस के बच्चों को बुरी तरह मारा और उस की बहू पर बलात्कार किया था.

पूर्वी भाषा में दी गई इस कैफियत को दोनों कामरेड खड़े खड़े सुन रहे थे कि छुट्टी जी की आवाज़ कानों में पड़ी : "अरे, तो रोता क्यों है, कायर कहीं के! देशभक्ति में तो यही सब इनाम मिलता है. किसे नहीं मिला?—महात्मा गांधी ने अपना सारा जीवन फूंक दिया, जवाहरलाल ने तन-मन सारा वार दिया, बैरिस्टरों ने बैरिस्टरी छोड़ी, वकीलों ने वकालत छोड़ी, छात्रों ने पढ़ाई-लिखाई को तिलांजलि दे दी. कोई यहां पर साहू बन कर नहीं आया है. अरमान किस बात का है?"

कामरेड मुरारीलाल ने कहा, "मगर अफ़सोस, प्रधान जी, इस ग़रीब के पास इस से ज्यादा त्याग करने के लिए कुछ था ही नहीं!"

मगर जब पता चला कि धन्नासिंह पहलवान अपनी इच्छा से स्वतंत्रता आंदोलन में नहीं कूदा था, बल्कि सिर्फ़ सरकारी कारगुज़ारी का शिकार हुआ था, तो ज़फ़रअली ने व्यंग्यबाण छोड़ा, "लीजिए, यह तो आप के दरजे में ही आ गया! यह तो लोकयुद्ध का सिपाही था, मुफ़्त में राष्ट्रीय आंदोलन में पकड़ा गया!"

ज़फ़रअली साहब मुस्लिम लीग से निकल कर राष्ट्रीय आंदोलन में आए थे. उसी पर छींटा कसते हुए कामरेड विनायक बोल उठे, "ज़फ़र साहब, आप की जगह तो जिन्ना साहब के साथ थी. कुएं से निकल कर मेंढक तालाब में आ पड़ा, तो समुद्र पर कीचड़ उछालने लगा!"

इस राजनीतिक विवाद का शोर धीरे-धीरे इतना बढ़ा कि धन्नासिंह का धीमा होता हुआ रोदन उस में बिलकुल दब गया. शाम को बैरक बंद होने से पहले ही जमादार आ कर लंदनतोड़ को तन्हाई और डंडाबेड़ी के लिए लिवा ले गया. इस नई घटना से ही राजनीतिक विवाद खतम हो पाया और बात जेल अधिकारियों से मोर्चा लेने की घातों पर उतर आई.

दूसरे दिन धन्नासिंह के लिए चक्की का आर्डर आ गया. जब सफ़ेदपोश वर्ग के काम करने की बारी आई, तो वकील साहब अगुआ बने. जेलर के सामने तन कर उन्हों ने कहा, "देखिए, अब तक आप ने जो सलूक हमारे साथ किया है, हम उस की तारीफ़ करते हैं. जहां तक काम करने का सवाल है, आप के शैडूल में हर कैदी के लिए तीन सौ गज़ बान बटना या तीस सेर आटा पीसने में दूसरे आदमी के साथ हाथ बंटाना है. यह तो आप अपनी अकल से ही सोच सकते हैं कि हम लोगों में से कोई भी आदमी ये नीचे दरजे के काम पूरे नहीं कर सकता. उस समय या तो आप को रिआयत ही करनी पड़ेगी या फिर जब तक हम जेल में हैं, तब तक सज़ा ही देते

रहिएगा. खैर, ये दोनों ही बातें आप को गवारा नहीं होंगी, यह हम जानते हैं. बीच का रास्ता यह है कि हम लोग चरखे पर सूत बड़े मजे में कात सकते हैं, जिस के बारे में आप की जेल मैनुअल में कोई हिदायत नहीं है. बस तो, हम से काम लेने का तरीका है कि छटांक भर रुई का सूत, बहुत बारीक, हम लोगों से रोज कतवा लिया जाए....बाकी आप की मरजी. अपनी खोपड़ी के आप खुद मालिक हैं."

जेलर बड़बड़ाता चला गया. मगर वकील साहब की सारी बातें दलील से पुर थी. जेल अधिकारियों ने छटांक भर की जगह आध पाव सूत की शर्त पर उन की बात मान ली. वह बीच के रास्ते का आदमी उन्हें बहुत पसंद आया.

शाम के समय पसीने से लथपथ घन्नासिंह जब वापस बैरक में लौटा, तो लोगों ने देखा कि उस के चौड़े चेहरे पर से मूंछें लोप हो गई थीं! वे जमादार लाखनसिंह की क्रोधाग्नि की भेंट चढ़ चुकी थी. फिर भी आते ही उस ने अपने साथियों से कहा, "मैं ने और बिरजू ने मिल कर पूरा तीस सेर पीस डाला. एक भी दाना नहीं छोड़ा है!" और यह कह कर उस ने अपनी चौड़ी छाती की तरफ तन कर देखा.

वकील साहब उस समय खाली ढूले पर इतमीनान से बैठे पैर का अंगूठा सहला रहे थे. वहीं से उन्हों ने अपने समस्त साथियों को लक्ष्य कर के कहा, "देखा आप ने? नीचता की हद है! बिन बुलाए मेहमानों की तरह ये लोग राष्ट्रीय आंदोलन में जेल आये, और अब जेल अधिकारियों का काम इस तरह कर रहे हैं, जैसे इन की ससुराल हो."

कामरेड विनायक ने कहा, "ससुराल में जमाइ लोग काम नहीं करते, वकील साहब, बल्कि पैर का अंगूठा सहलाया करते हैं!"

वकील साहब की कनपटी गरम हो गई, जैसा कि ऐसे अवसरों पर अक्सर हो जाया करती थी. कामरेड विनायक बात कह कर चरखे का पहिया घुमाने लगे. वकील साहब ने प्रत्युत्तर देने के लिए मुंह खोला ही था कि कामरेड मुरारीलाल ने कहा, "शांति से, वकील साहब, शांति से.

देखते नहीं, चरखे का पहिया घूं घूं बोल कर शांति का संदेश दे रहा है."

वकील साहब मुरारीलाल की तरफ़ घूर कर चुप रह गए. सहसा ज़फ़रअली लेटे-लेटे उठ खड़े हुए, मानो उन्हों ने किसी की कोई बात सुनी ही न हो. "वकील साहब," उन्हों ने कहा, "आप तो मोटा-झोटा सूत निकाल कर आध पाव को घंटे भर में खत्म कर देते हैं, मगर अपने से यह भी नहीं होता. आज सूत सब मिला कर दे दीजिए, नहीं तो कल ही हमारा आप का साथ छूट जाएगा. कम्बख्त जेलर बिना तन्हाई दिए नहीं मानेगा."

छुट्टो जी ने कहा, "बैठे बैठे मन ऊब जाता है. हरामज़ादों ने सारी किताबें फाटक पर रखवा लीं. काश कि यहां शतरंज होती! जेलखाना ऐसे कटता, जैसे सत्कर्मों से पाप—क्या कहते हैं?"

वकील साहब ने मुंह लटकाए-लटकाए कहा, "मुझे इस शब्द 'काश' से कभी कोई उत्साह नहीं होता. यहां कहां से बिसात आए और कहां से मोहरे? बस, सूत कातो और जेल काटो. आज से सब का सूत मिला कर देंगे. जेल वाले हमें व्यक्तिगत रूप से अलग अलग करना चाहते हैं. हमें अपना संगठित रूप नहीं तोड़ना चाहिए."

कुछ देर बाद जब सूत इकट्ठा किया जा रहा था, तो देहाती वर्ग की तरफ देख कर छुट्टो जी उछल गए. "अरे, देखो, देखो !"

सब लोगों ने देखा. ज़मीन पर मिट्टी से आड़ी-तिरछी लकीरें खींच कर वे लोग मिट्टी की बनाई हुई गोलियों से तियापांचा का खेल खेल रहे थे. वकील साहब ने कहा, "ठीक है, हाथी, घोड़े, ऊंट, बादशाह मिट्टी के बनाए जाएं और कोयले से लकीरें खींच कर बिसात बनाई जाए. बस, बन गई शतरंज! वाह, छुट्टो जी, क्या सूझ आई है आप को! दाद देता हूँ."

चतुरसिंह हलवाई ने कभी शतरंज नहीं खेली थी. इस योजना से उत्साह न पा कर उस ने कहा, "किसी का हक नागहानी क्यों छीनते हैं, वकील साहब? सूझ तो जिन्हें आई वे पहले से ही खेल रहे हैं."

"अच्छा, अच्छा!" वकील साहब ने हंस कर कहा. उन्हें चतुरसिंह हलवाई से बाहर से ही कुछ विशेष लगाव था, इसलिए प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझी. वह उसी समय उठे और बैरक के बाहर निकल कर उन्हों ने तसले से कच्ची ज़मीन खोद डाली. घंटे भर में शतरंज के मोहरों के दो सेट बन कर तैयार हो गए. अब एक सैट को रंगने की समस्या आ पड़ी.

जब तक मोहरे सूखते रहे, तब तक इसी समस्या पर विचार होता रहा कि मोहरों को किस तरह रंगा जाए. रंग के नाम को जेल में पान की पीक तक नहीं थी. शतरंज के बारीक खेल में दोनों तरफ़ के मोहरों का स्पष्ट रूप से, बिसात पर अलग अलग दिखाई देना लाज़मी था. शतरंज के मोहरे और रंग, शतरंज के मोहरे और रंग! जब तक रोटी-परेड नहीं लगी, सभी लोगों के दिमागों में यह बात घूमती रही कि इस अभाव के देश में रंग की ईजाद करने का श्रेय किस को मिले.

देहाती और बाबू वर्ग दोनों रोटी खाने बैठे. चतुरसिंह हलवाई कटोरी हाथ में लिए उस में रोटी के टुकड़े भिगो-भिगो कर खा रहा था. दाल को समेटने की आवश्यकता थी ही नहीं क्यों कि दाल के दाने उस दाल में नहीं थे. दूसरे सिरे पर धन्नासिंह चौथाई-चौथाई तंदूरी रोटी का एक-एक लुकमा बना कर खा रहा था. ऊपर से उस ने दाल जो सपोड़ी, तो चतुरसिंह को हंसी आई, गले में गए हुए निवाले से धसका लगा और हाथ में पकड़ी हुई कटोरी का संतुलन बिगड़ गया. दाल का सारा पानी कुरता और घुटन्ना भिगोता हुआ ढूले पर गिर पड़ा.

चतुरसिंह घबराहट के साथ उठ खड़ा हुआ. उसी समय कामरेड विनायक चिल्ला उठे. "आइडिया! आइडिया!"

"क्या आइडिया?" वकील साहब चौंक कर बोले.

"मिट्टी के मोहरों को दाल में डुबकी दीजिए, मोहरे रंग जाएंगे," कामरेड विनायक बोले.

वकील साहब दाल पीने को ही थे कि हाथ रुक गया. "बहुत खूब!

इसे कहते हैं मौलिकता. कामरेड, बरेली जेल में अगर नोबिल प्राइज़ देने की प्रथा होती, तो मैं आप की सिफ़ारिश करता."

उसी समय वकील साहब ने अपनी दाल में मोहरों का एक सैट डुबोया और कुछ ही देर में मटियाले और पीले मोहरे, चूल्हे के ऊपर बनी हुई बिसात पर आमने-सामने युद्ध करने के लिए डट गए.

धन्नासिंह बाहर हौदी पर पानी पीने गया था. सहसा वह हड़बड़ाया हुआ भीतर घुसा और तेज़ खुसरपुसर के स्वर में अपने साथियों से बोला, "मोहरे छिपा लो, मोहरे छिपा लो, साहब रौंद पर आ रहा है!"

वकील साहब ने मुंह बिचका कर पहलवान के शरीर और उस के भीतर वास करती हुई आशंका की प्रवृत्ति को निरखा और अपने घोड़े को ढाई खाने आगे कुदा दिया. उन्हों ने जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट बहुत से देखे थे.

साहब ने बैरक में प्रवेश किया. साथ में जेलर सहित जेल का पूरा अमला था. सभी लोगों के लिए खड़े होना लाज़मी था, नहीं तो पूरी परेड करनी पड़ती. साहब हाथ में ली हुई छड़ी हिलाते हुए तेज़ी से सारी बैरक में घूम गए. वकील साहब के पास पहुंच कर उन की निगाह चूल्हे पर बनी हुई शतरंज पर पड़ी और उन्हों ने तुरंत जेलर की ओर देख कर कहा, "वैल, क्या इन लोगों को काम नहीं दिया गया?....और जेल की मिट्टी इस तरह बरबाद की जाती है!"

"मैं अभी बैरक की तलाशी लिवाता हूं, हज़ूर," जेलर ने कहा.

उसी समय, साहब की नज़रों के सामने-ही-सामने, बैरक भर की तलाशी ली गई. दाल के पानी में रंगे हुए बढ़िया मोहरे तो गए ही, साथ में देहाती बंधुओं के तियेपांचे का सैट भी जाता रहा. इस के अतिरिक्त इस नई आई हुई बारात में बीड़ी जैसी कोई खतरनाक चीज़ नहीं मिली.

तलाशी के लिए झेंप मिटाने को, जाते-जाते जेलर चेतावनी दे कर गया : "आप लोग खूब शौक से शतरंज खेलिए! लेकिन अगर जेल की मिट्टी को इस तरह बरबाद किया गया, तो याद रखिए, एक एक को तन्हाई दिखाऊंगा. इस में ज़रा भी रूरिआयत नहीं होगी."

बाहर जा कर साहब ने कहा, "आप इन को कोई काम नहीं देते? आप तो उल्टे इन्हें शतरंज खेलने का न्यौता सा दे आए!"

जेलर ने दांत निपोर कर कहा, "हजूर, जेल में मिट्टी के अलावा और किसी चीज़ से शतरंज के मोहरे नहीं बन सकते. इन लोगों को ज़रा अकल तो कुरेदने दीजिए. प्यासा पानी देख कर न मरा, तो क्या मरा!"

साहब मुसकराते हुए आगे निकल गए. पीछे बैरक में एक अच्छा हंगामा मचा. देहाती बंधु बाबू लोगों की तरफ़ उंगली उठा उठा कर अपने खेल के साधन के चले जाने का दोष उन पर मंढने लगे. मगर प्रकट में कोई न बोला. केवल वकील साहब ने स्वयं ही कहा, "धत्तेरे की! मालूम हुआ कि कहीं कहीं पालिसी से हट जाने में भी नुकसान उठाना पड़ता है. अब तो मिट्टी भी गई—या तन्हाई आबाद करने के लिए तैयार हो जाइए."

तभी दूसरी ओर से एक देहाती बाबू लोगों में आया और बोला, "आप लोगों की बहुत सी रोटियां बच जाती हैं. उधर कई मनई भूखे रह जाते हैं. अगर बची हुई रोटियां भाईयों के काम आ जाएं, तो...."

"राम! राम!" वकील साहब ने कहा, "इन लोगों के खाने की भी हद है! अभी बदबू के मारे तबीअत परेशान हुई जाती है...!"

देहाती ने कहा, "भैया, दिन भर चक्की पीसने से पेट में लगी हुई आग तीन रोटियों से भी न बुझ पाए, तो इस में मनई का क्या कसूर? आप लोगों का बड़ा पेट है, मगर उस में भोजन की जगह बहुत कम है. हम लोगों का छोटा पेट है, मगर सारा भोजन गपकने को तैयार रहता है...."

वकील साहब इस कैफियत से क्रुद्ध हो कर बोले, "तो कौन आप से कहता है कि आप दुश्मन की चक्की पीसा करें....?"

"कमेरों को काम के बिना कोई नहीं बख्शता, वकील जी," देहाती ने कहा, "आप बाबू लोग हैं, सफेद कपड़ा पहनते हैं, इसलिए बच जाते हैं...."

"आप लोगों को सफेद कपड़ा पहनने को कोई मना करता है?"

वकील साहब ने कहा.

"वाह! क्या बात कही है!" कामरेड विनायक ने कहा, "आप को भूखों से बहस करना बहुत अच्छा आता है, वकील साहब!"

वकील साहब इस व्यंग्य से कुढ़ गए. बोले, "तो दे दीजिए न अपनी रोटियां इन को. देखें कितने बड़े त्यागी बनते हैं!"

कामरेड विनायक बोले, "ज़रूर दे देता, मगर मैं उन्हें खा चुका हूँ. अब कल से एक रोटी ज़रूर दूँगा."

वकील साहब ने कुछ उत्तर न दे कर अपने वर्ग से बची हुई रोटियां इकट्ठी की और उस आदमी के हाथ में सौंप दी. सब ने देखा कि धन्नासिंह कुछ देर बाद बिरजू तथा अन्य साथियों सहित उन रोटियों पर हाथ साफ़ कर रहा था.

अभी घंटा भर भी न बीता था कि देहाती वर्ग में फिर खेल की चहलपहल नज़र आने लगी. वकील साहब विचारमग्न पड़े थे कि चौंक कर उठ बैठे. ये लोग अब काहे के मोहरे बना कर खेल रहे हैं? उन्हों ने देखा कि उसी भावना से सामने छुट्टो जी भी उठ बैठे हैं. वकील साहब ने चतुरसिंह हलवाई की तरफ़ देखा और वह मतलब समझ कर उन लोगों का खेल देखने गया. खेल में साफ़-सुथरी, गोल गोल गोलियां इधर से उधर रखी जा रही थीं. कुछ मोहरे चौकोर थे, तो कुछ चपटे. उस ने आवश्यक पूछताछ की और हंसता हुआ लौट आया. बोला, "अरे, आदमी से कोई जीता है! उन लोगों ने रोटियों को पानी में मीस कर उस का आटा बनाया और आटे के मोहरे बना डाले."

"उफ़! मौलिकता सीमा पार कर गई!" वकील साहब चिल्लाए. "क्या ज़रा सी बात, कम्बख्त पहले ध्यान में नहीं आई!...अब? आज तो रह गए. रोटियां ही नहीं हैं."

मगर यह अनुसंधान इतना ज़बरदस्त था कि इस की खुशी में रात कट गई. सुबह रोटियां मिलने के बाद सब से पहला काम यह हुआ कि उन्हें मीस कर दो बादशाहों की फ़ौजें तैयार की गई और उन में से एक फ़ौज को दाल के पीले पानी में डुबकी दी गई.

उस शाम को शतरंज का खेल खूब जमा. कामरेड मुरारीलाल ने वह मात खाई कि पैदली भी शरमा जाए. विनायक बाबू ने ऐसी जिच उपस्थित कर दी कि छुट्टो जी मुंह ताकते रह गए. मगर वह रात उन फौजों पर सही-सलामत नहीं गुज़र सकी.

सुबह के समय किसी मोहरे का सिर गायब मिला, किसी का धड़, और दसियों सिपाही समूचे के समूचे गायब थे. बाबू वर्ग के साथ साथ देहाती वर्ग में भी हड़कंप मच गया. वहां भी गोलियां और शक्करपारे गायब थे.

वकील साहब हताश हो कर बोले, "चूहे! ये कम्बख्त नए दुश्मन निकले!"

कामरेड विनायक हंस कर बोले, "आदमी की रोटी के बहुत दुश्मन हैं, वकील साहब. यहां तक कि आदमी ही आदमी की रोटी का सब से बड़ा दुश्मन है. अवसर सराहिए कि अभी आप का पाला बड़े दुश्मनों से नहीं पड़ा! जिस बादशाह के फौज-फर्राटे को चूहे उठा कर ले जाएं उस की हकूमत कितने दिन टिक सकती है! रोटी के लिए क्रान्ति करने वाली चूहों की जनता ज़िन्दाबाद!"

छुट्टो जी ने कहा, "अजी, जनता के लाड़ले साहब, चुप रहिए!"

मोहरे फिर बनाए गए. फिर शतरंज का खेल जम कर खेला गया, मगर मोहरे बनाने की झंझट में नेता वर्ग की ओर से खद्दर जनता को रोटी मिलनी बंद हो गई. जब दो दिन तक रोटी नहीं मिली, तो तीसरे दिन उधर से कोई मांगने भी नहीं आया. केवल धन्नासिंह ने उन लोगों की तरफ़ बहुत देर तक घूर कर ही अपना पेट भर लिया.

वकील साहब इस बार मोहरों को तसले के नीचे, और तसले के ऊपर चादर की तहें रख कर, उस का सिरहाना बना कर सोए. चूहों की यह हिम्मत नहीं थी कि उन का सिर हटा कर बादशाह और पैदलों को खींच ले जाते. वकील साहब की शक्ति से परिचय न होने के कारण उन्हों ने रात को कुछ हल्के से हमले भी किए, मगर उस से इस के

अतिरिक्त और कोई खास फ़रक़ न पड़ा कि वकील साहब का सिर तसले से हट गया. क्या चूहों में इतनी ताक़त हो सकती है कि वे औंधे तसले में से रोटी निकाल ले जाते?

मगर सुबह को वकील साहब ने अपनी बुद्धिमानी पर स्वयं ही प्रसन्न होते हुए जब तसला सीधा किया, तो बौखला गए. उस के नीचे इस बार सब मोहरे—बादशाह, वजीर, ऊंट, घोड़े, हाथी और पैदल—ग़ायब थे.

"असंभव!" वह ज़ोर से चिल्लाए.

साथी लोग पलक मारते इकटठे हो गए. "क्या असंभव, वकील साहब?" छुट्टो जी ने पूछा.

"यह असंभव है कि सिर के नीचे से तसला खिसका कर चूहे शतरंज के मोहरे उस के नीचे से निकाल कर ले जाएं. ज़रूर यह कामरेडों ने मसख़री की है. इन लोगों को ऐसे उत्पात मचाने की आदत है," वकील साहब बोले.

कामरेड मुरारीलाल गरम हो गए. "बस, बस, वकील साहब, शरम नहीं आती आप को! क्या राजनीति आप के दिमाग़ पर इतनी छा गई कि आरोपों के आकार-प्रकार का भी ध्यान नहीं रहा?"

"आखिर वे ग़रीब निर्दोष मोहरे किसी के मतलब के ही क्या हैं?" छुटटो जी ने कहा.

"ज़ाहिर है कि हसद ही इस की वजह हो सकती है," ज़फ़रअली ने कहा. "और कोई वजह ज़हन में नहीं आती."

वकील साहब ने कहा, "तब तो ये देहाती ही हैं, जिन्हों ने यह काम किया है. हम में से तो लगभग सभी शतरंज खेलते हैं. मोहरे सभी के काम के थे."

इधर से कामरेड विनायक देहातियों में गए. सब बैठे देखते रहे. वे लोग खुद परेशान थे कि क्या माजरा है. कामरेड विनायक की बात सुन कर पहले तो सब-के-सब भोलेभाले बहुत बिगड़े. मगर कामरेड विनायक उन लोगों में ऐसे रमे कि सारा भेद निकल गया. कुछ देर बाद वह हंसते हुए अपने स्थान पर लौट आए.

"मैं भी कितना बड़ा बेवकूफ़ हूं!" कामरेड विनायक ने कहा.

"क्यों, किस ने चुराए मोहरे?" वकील साहब ने उत्सुकता से पूछा.

"वकील साहब, हमारे आटे के बने हुए फ़ौजसपाटे को न ईर्ष्या ने चुराया, न चूहों ने, बल्कि उन्हें भूख नाम की डायन चुरा कर खा गई. धन्नासिंह को दो दिन से ज्यादा रोटी नहीं मिल पाई थी, इसलिए रात को वह आप के बादशाह और सिपाही लोगों को खा गया."

सारी बैरक में सन्नाटा छा गया. सूई भी गिरती, तो आवाज़ सुनाई दे जाती. लोगों की निगाह दूसरी ओर घूमी तो देखा धन्नासिंह मुंह बाए, आँखें फाड़े उन लोगों की ओर देख रहा था.

सहसा एक ठहाका कामरेड मुरारीलाल ने लगाया, और उस के पीछे सारी बैरक में ठहाकों का ऐसा तूफ़ान बरपा हुआ कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई देनी बन्द हो गई.

['कहानी' मासिक की कहानी-प्रतियोगिता—१९५६ —में पुरस्कृत.]